राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

12 मैं तुमसे नहीं डरती... ब्राजील की फर्स्ट लेडी ने मस्क को .....

तमिल अभिनेत्री कस्तुरी शंकर हैदराबाद से गिरतार, तेलुगू समुदाय पर..... 12

वर्ष : 15 | अंक : 213 | नई दिल्ली, सोमवार, 18 नवंबर, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मणिपुर में बवाल : चार और विधायकों के जलाए घर, स्थिति शांत लेकिन तनावपूर्ण, इंटरनेट सेवा निलंबित

जयपुर, एजेंसी

इंफाल।मणिपुर के जिरीबाम में छह लोगों के शव बरामद होने के बाद इंफाल घाटी में हुए हिंसक प्रदर्शन के बाद यहां स्थिति शांत, लेकिन तनावपूर्ण बनी हुई है। इसी के साथ घाटी में अनिश्चितकाल के लिए कर्फ्यू लगा दिया गया है और इंटरनेट सेवाएं भी निलंबित कर दी गई हैं। मणिपुर के जिरीबाम जिले में दो महिलाओं और एक बच्चे के शव बराक नदी से शनिवार को बरामद किए गए जबकि एक महिला एवं दो बच्चों के शव शुक्रवार रात मिले। ऐसा आरोप है कि उग्रवादियों ने ही अपहरण के बाद इनकी हत्या की है। दरअसल, जिरीबाम जिले में सुरक्षाबलों और उग्रवादियों के बीच सोमवार को मुठभेड़ हुई थी जिसके बाद से राहत शिविर में रहने वाली तीन महिलाएं और तीन बच्चे लापता हो गए थे। इस मुठभेड़ में 10 उग्रावादी भी मारे गए थे। इंफाल घाटी में एक दिन पहले लोगों ने इस हत्या के विरोध में हिंसक प्रदर्शन किए और राज्य के तीन मंत्रियों तथा छह विधायकों के आवास पर भी हमला किया। पुलिस ने बताया कि प्रदर्शनकारियों ने मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह के दामाद एवं भारतीय जनता पार्टी के विधायक आर के इमो सहित तीन विधायकों के घरों में तोड़फोड़ की और उनकी संपत्तियों में आग लगा दी। वहीं, सुरक्षाबलों ने इंफाल के विभिन्न हिस्सों में

प्रदर्शनकारियों को तितर-बितर करने के लिए आंसू गैस के गोले छोड़े। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

अनिश्चितकाल के लिए कर्फ्यू लागू : अधिकारियों ने बताया कि प्रदर्शनकारियों ने राज्य के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह के पैतृक आवास पर भी धावा बोलने की कोशिश की, हालांकि पुलिस ने उन्हें रोक दिया। जिरीबाम जिले में तीन महिलाओं और तीन बच्चों के शव मिलने के बाद प्रदर्शनकारियों ने इंफाल घाटी के विभिन्न हिस्सों में शनिवार को हिंसक प्रदर्शन किया, जिसके बाद से यहां अनिश्चितकाल के लिए कर्फ्यू लगा दिया गया। गुस्साई भीड़ ने शनिवार को राज्य के तीन मंत्रियों और छह विधायकों के आवासों पर भी हमला किया था। अधिकारियों ने बताया कि प्रदर्शनकारियों ने निंगथौखोंग में लोक निर्माण मंत्री गोविंददास कोंथौजम, लैंगमीडोंग बाजार में हियांगलाम से भाजपा विधायक वाई राधेश्याम, थौबल जिले में वांगजिंग टेंथा के भाजपा विधायक पाओनम ब्रोजेन और इंफाल पूर्वी जिले में खुंद्राक्पम के कांग्रेस विधायक लोकेश्वर के घरों में आग लगा दी। पुलिस ने बताया कि गुस्साई भीड़ ने विधायकों के आवासीय परिसरों पर धावा बोला, संपत्ति में तोड़फोड़ की और घरों में आग लगा दी। हालांकि, इस दौरान विधायक और उनके परिवार के सदस्य घर पर मौजूद नहीं थे। अधिकारियों के अनुसार, इन घटनाओं में घर आंशिक रूप से जल गए। घरों के पूरी तरह जलने से पहले अग्निशमन सेवाएं मौके पर पहुंचीं और आग पर काबू पा लिया। प्रदर्शनकारियों ने शनिवार रात इंफाल पूर्वी क्षेत्र में लुवांगसांगबाम स्थित बीरेन सिंह के पैतृक निवास पर भी हमला करने की कोशिश की लेकिन सुरक्षाबलों ने उन्हें 100-200 मीटर पहले ही रोक दिया। जिरीबाम में छह लोगों के शव बरामद होने के बाद इंफाल घाटी में हुए हिंसक प्रदर्शन के चलते यहां रविवार सुबह स्थिति शांत, लेकिन तनावपूर्ण बनी रही। इसी के साथ घाटी में अनिश्चितकाल के लिए कर्फ्यू लगा दिया गया है और इंटरनेट सेवाएं भी निलंबित कर दी गई हैं।

संक्षिप्त खबरें

रिजर्व बैंक को आया धमकी भरा कॉल, शिकायत दर्ज

मुंबई। भारतीय रिजर्व बैंक को धमकी भरा कॉल शनिवार सुबह 10 बजे किया गया। कॉलर ने खुद को लश्कर ए तैयबा का सीईओ बताया। कॉल रिजर्व बैंक के कस्टमर केयर नंबर पर आई थी। कथित तौर पर रिजर्व बैंक के सुरक्षा गार्ड को कॉल की गई। शख्स ने खुद को आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा का सीईओ बताते हुए कहा पीछे का रास्ता बंद कर दो इलेक्ट्रिक कार खराब हो गई है। अज्ञात शख्स के खिलाफ मामला दर्ज कराया जा चुका है। वहीं पुलिस के मुताबिक ये किसी की शरारत भी हो सकती है। इससे पहले गुरुवार (15 नवंबर) को मुंबई के जेएसए लॉ फर्म बेलर्ड पेयर और जेएसए ऑफिस कमला मिल लोअर पर्ल को बम से उड़ाने की धमकी भरा एक ईमेल आया था। मेल कंपनी के ऑफिशियल आईडी पर आया था। भेजने वाले शख्स का नाम फरजान अहमद था। उसने लिखा था फर्म के कार्यालय और बेलार्ड एस्टेटऑफिस में बम रखा गया है। सूचना मिलने के बाद पुलिस ने तुरंत ही जांच शुरू कर दी थी। इससे पहले फ्लाइट को भी बम से उड़ाने की धमकी दी गई थी। बीते गुरुवार (14 नवंबर) को मुंबई एयरपोर्ट को बम से उड़ाने की धमकी मिली थी। अज्ञात शख्स ने मुंबई एयरपोर्ट पर तैनात सीआईएसएफ को फोन कर एयरपोर्ट को बम से उड़ाने की धमकी दी थी। इसके बाद एयरपोर्ट पर तैनात सुरक्षाकर्मियों सहित अन्य लोग खौफजदा हो गए थे। धमकी देने वाले शख्स ने सीआईएसएफ कर्मचारी को फोन कर कहा था कि एयरपोर्ट पर बम रखा हुआ है। जांच में सामने आया था कि मोहम्मद नाम का व्यक्ति विस्फोटक सामग्री लेकर मुंबई से अजरबैजान जाने की योजना बना रहा था। 27 अक्टूबर को भी मुंबई एयरपोर्ट पर एक धमकी दी गई थी। कहा गया था कि अगर विमान उड़ा तो कोई भी यात्री जिंदा नहीं बचेगा। जांच में यह धमकी भी झूठी पाई गई थी। पिछले लगभग एक साल से देश में स्कूल, होटल, एयरपोर्ट, मार्केट, ट्रेन, बस आदि को बम से उड़ाने की धमकियां मिल रही हैं। हालांकि सभी फर्जी निकल रही हैं।

दोनों देशों के द्विपक्षीय संबंध और प्रगाढ़ होंगे : मोदी

- नाइजीरिया पहुंचे पीएम मोदी, गर्मजोशी से हुआ स्वागत

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली/अबुजा (नाइजीरिया)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपनी पांच दिवसीय विदेश यात्रा के पहले चरण में नाइजीरिया पहुंच गए हैं। श्री मोदी नाइजीरिया के राष्ट्रपति बोला अहमद टिनुबू के निमंत्रण पर पश्चिम अफ्रीकी देश की यात्रा कर रहे हैं। श्री मोदी के अबुजा हवाई अड्डे पर पहुंचने पर उनका गर्म जोशी से स्वागत किया गया। प्रधानमंत्री ने राष्ट्रपति टिनुबू का आभार जताते हुए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स एक पोस्ट में कहा, धन्यवाद राष्ट्रपति टिनुबू। अब से थोड़ी देर पहले नाइजीरिया में उतरा हूं। हार्दिक स्वागत के लिए आभार जताता हूं। कामना करता हूं कि इस यात्रा से हमारे दोनों देशों के द्विपक्षीय संबंध और प्रगाढ़ होंगे। इससे पहले श्री टिनुबू ने एक्स पर अपने पेज पर भारतीय प्रधानमंत्री के स्वागत में लिखा, मैं प्रधानमंत्री नरेंद्र

मोदी का उनकी पहली नाइजीरिया यात्रा पर स्वागत करने के लिए उत्सुक हूं। यह 2007 के बाद भारत के किसी प्रधानमंत्री की मेरे प्यारे देश की पहली यात्रा है। हम अपनी द्विपक्षीय बातचीत में दोनों देशों के बीच रणनीतिक संबंध के विस्तार और महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सहयोग के संवर्धन पर चर्चा करेंगे। श्री मोदी के अबुजा पहुंचने पर लोगों ने उनका अभूतपूर्व तरीके से स्वागत किया। श्री मोदी के प्रति नाइजीरिया के लोगों के विश्वास और सम्मान के प्रतीक के रूप में उन्हें अबुजा शहर की कुंजी भेंट की गई। वहां रह रहे मराठी समुदाय के लोगों ने प्रधानमंत्री का विशेष रूप से स्वागत किया और उन्हें मराठी को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिए जाने के लिए उनका आभार व्यक्त किया। श्री मोदी के स्वागत में एक टोली ने उनके समक्ष लावणी लोक नृत्य प्रस्तुत किया। उनके स्वागत में एक युवा पर्वतारोही भी उपस्थित है जिसने श्री मोदी की फोटो के साथ किलिमंजारो पर्वत चोटी की चढ़ाई की थी। इससे पहले श्री मोदी ने पालम वायुसैनिक अड्डे से विशेष विमान से रवाना होने से पहले अपने वक्तव्य में जी-20 शिखर सम्मेलन में ग्लोबल साउथ की प्राथमिकताओं तथा एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य के भारत के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए सार्थक चर्चा की आशा जताई। श्री मोदी ने कहा,मैं नाइजीरिया, ब्राजील और गुयाना की पाँच दिवसीय यात्रा पर जा रहा हूँ। राष्ट्रपति बोला अहमद टिनुबू के निमंत्रण पर यह नाइजीरिया की मेरी पहली यात्रा होगी, जो पश्चिम अफ्रीकी क्षेत्र में हमारा करीबी भागीदार है। मेरी यात्रा हमारी रणनीतिक साझीदारी को आगे बढ़ाने का अवसर होगी जो लोकतंत्र और बहुलवाद में साझा विश्वास पर आधारित है। मैं भारतीय समुदाय और नाइजीरिया के दोस्तों से मिलने का भी उत्सुकता से इंतजार कर रहा हूं जिन्होंने मुझे हिंदी में गर्मजोशी से स्वागत संदेश भेजे हैं। श्री मोदी ने कहा,ब्राजील में मैं ट्रोइका सदस्य के रूप में 19वें जी-20 शिखर सम्मेलन में भाग लूंगा। पिछले साल, भारत की सफल अध्यक्षता ने जी-20 को लोगों के जी-20 के रूप में ऊपर उठाया और ग्लोबल साउथ की प्राथमिकताओं को अपने एजेंडे में मुख्यधारा में शामिल किया। इस वर्ष ब्राजील ने भारत की विरासत को आगे बढ़ाया है। गुयाना यात्रा 50 से अधिक वर्षों में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की पहली यात्रा होगप्रधानमंत्री ने कहा,राष्ट्रपति मोहम्मद इरफान अली के निमंत्रण पर मेरी गुयाना यात्रा 50 से अधिक वर्षों में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की पहली यात्रा होगी : हम अपने अनूठे रिश्ते को रणनीतिक दिशा देने पर विचारों का आदान-प्रदान करेंगे, जो साझा विरासत, संस्कृति और मूल्यों पर आधारित है। मैं सबसे पुराने भारतीय प्रवासियों में से एक के प्रति भी अपना सम्मान व्यक्त करूंगा जो 185 साल से भी अधिक समय पहले प्रवासित हुए थे और उनकी संसद को संबोधित करते हुए एक साथी लोकतंत्र को शामिल करूंगा। श्री मोदी जी-20 शिखर सम्मेलन में भाग लेने के ब्राजील , नाईजीरिया एवं गुयाना की पांच दिवसीय यात्रा पर शनिवार को रवाना हुए।

हाइपरसोनिक मिसाइल का सफल उड़ान परीक्षण

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली। रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन ने लंबी दूरी की पहली हाइपरसोनिक मिसाइल का सफल उड़ान परीक्षण किया है। रक्षा मंत्रालय ने रविवार को बताया कि यह परीक्षण शनिवार को देर रात ओडिशा के तट पर डॉ एपीजे अब्दुल कलाम द्वीप से किया गया। इस हाइपरसोनिक मिसाइल को सशस्त्र बलों के लिए 1,500 किलोमीटर से अधिक की दूरी पर विभिन्न पेलोड ले जाने के लिए डिजाइन किया गया है। मिसाइल को विभिन्न डोमेन में तैनात विभिन्न रेंज प्रणालियों द्वारा ट्रैक किया गया था। उड़ान डेटा ने सफल टर्मिनल युद्धाभ्यास और उच्च सटीकता के साथ प्रभाव की पुष्टि की है। इस मिसाइल को डॉ एपीजे अब्दुल कलाम मिसाइल कॉम्प्लेक्स, हैदराबाद की प्रयोगशालाओं के साथ-साथ विभिन्न अन्य डीआरडीओ प्रयोगशालाओं और उद्योग भागीदारों द्वारा स्वदेशी रूप से विकसित किया गया है। उड़ान-परीक्षण डीआरडीओ के वरिष्ठ वैज्ञानिकों और सशस्त्र बलों के अधिकारियों की उपस्थिति में किया गया। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सोशल मीडिया एक्स पर एक पोस्ट में उड़ान-परीक्षण को ऐसी ऐतिहासिक उपलब्धि बताया, जिसने भारत को महत्वपूर्ण और उन्नत सैन्य प्रौद्योगिकियों की क्षमताओं वाले चुनिंदा देशों के समूह में डाल दिया है। उन्होंने सफल उड़ान परीक्षण के लिए डीआरडीओ, सशस्त्र बलों और उद्योग को बधाई दी। रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग के सचिव और डीआरडीओ के अध्यक्ष डॉ. समीर वी कामत ने इस सफल मिशन में सक्रिय योगदान देने वाली डीआरडीओ की टीम को बधाई दी।

न्यायालय दिल्ली में प्रदूषण पर लगाम लगाने के उपाय संबंधी याचिका पर सोमवार को करेगा सुनवाई

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय राष्ट्रीय राजधानी में प्रदूषण पर लगाम लगाने के उपायों को लागू करने का अनुरोध करने वाली याचिका पर सोमवार को सुनवाई करेगा। दिल्ली में रविवार को वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) गंभीर श्रेणी में दर्ज किया गया। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) की समीर ऐप के अनुसार, एक्यूआई सुबह नौ बजे 429 दर्ज किया गया। शनिवार को अपरा चार बजे 24 घंटे का औसत एक्यूआई 417 दर्ज किया गया था। उच्चतम न्यायालय की वेबसाइट पर 18 नवंबर के लिए जारी सूची के अनुसार, न्यायमूर्ति अभय एस ओका और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ इस याचिका पर सुनवाई करेगी। उच्चतम न्यायालय 14 नवंबर को इस याचिका को तत्काल सुनवाई के लिए सूचीबद्ध करने पर राजी हो गया था। न्यायालय से अनुरोध किया गया था कि दिल्ली दुनिया का सबसे प्रदूषित शहर न बन जाये इसलिए याचिका को तत्काल सूचीबद्ध किया जाये। वरिष्ठ अधिवक्ता अपराजिता सिंह, जिन्हें इस मामले में न्यायमित्र नियुक्त किया गया है, ने पीठ से दिल्ली में मौजूदा स्थिति को देखते हुए तत्काल सुनवाई का अनुरोध किया था। सिंह ने पीठ से कहा था कि उन्होंने वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) को इस बारे में सूचित कर दिया है और उसे यह बताना चाहिए कि क्या कदम उठाए जा रहे हैं। उच्चतम न्यायालय ने 11 नवंबर को दिवाली पर पटाखे जलाने पर प्रतिबंध के उसके आदेश के उल्लंघन पर गंभीर संज्ञान लिया था और कहा था कि कोई भी धर्म प्रदूषण फैलाने वाली गतिविधियों को प्रोत्साहित नहीं करता। न्यायालय ने कहा था कि प्रदूषण मुक्त वातावरण में रहने का अधिकार संविधान के अनुच्छेद-21 के तहत हर नागरिक का मौलिक अधिकार है। उच्चतम न्यायालय उस याचिका पर सुनवाई कर रहा है, जिसमें राष्ट्रीय राजधानी और आसपास के क्षेत्रों में वायु प्रदूषण पर लगाम लगाने के लिए दिशा-निर्देश जारी करने का अनुरोध किया गया है।

स्पेसएक्स : इसरो के जीसैट-एन2 उपग्रह को करेगा प्रक्षेपित

नई दिल्ली, एजेंसी

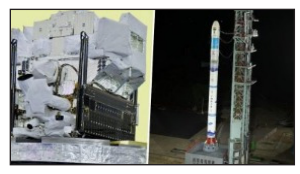

चेन्नई। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के उन्नत संचार उपग्रह जीसैट-एन2 को स्पेसएक्स सोमवार को अमेरिका के फ्लोरिडा में केप कैनावेरल स्पेस फोर्स स्टेशन के स्पेस लॉन्च कॉम्प्लेक्स 40 (एसएलसी-40) से जियोसिंक्रोनस ट्रांसफर ऑर्बिट (जीटीओ) में प्रक्षेपित करेगा। दो घंटे की विंडो दोपहर 1:31 बजे ईटी पर खुलेगी। स्पेसएक्स ने अपनी वेबसाइट पर कहा यदि आवश्यक हो तो मंगलवार, 19 नवंबर को सुबह 4:33 बजे ईटी पर खुलने वाली दो घंटे की विंडो के दौरान बैकअप अवसर उपलब्ध है। चरण पृथक्करण के बाद पहला चरण जस्ट रीड द इंस्ट्रक्शन्स ड्रोनशिप पर उतरेगा जो अटलांटिक महासागर में तैनात होगा। इसरो ने कहा जीसैट-20 इसरो द्वारा विकसित एक संचार उपग्रह है और इसे स्पेसएक्स फाल्कन 9 द्वारा लॉन्च किया जाएगा। यह फाल्कन की 19वीं उड़ान होगी। यह एक वाणिज्यिक मिशन होगा। हालांकि इसरो के एलएमवी-3 में जीटीओ में 4,000 किलोग्राम तक के उपग्रहों को प्रक्षेपित करने की क्षमता है लेकिन भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी ने इसे एलन मस्क के स्वामित्व वाले स्पेसएक्स के अमेरिका से फाल्कन-9 लॉन्च वाहन का उपयोग करके लॉन्च करने का विकल्प चुना। इसका वजन 4,700 किलोग्राम है। न्यू स्पेस इंडिया लिमिटेड (एनएसआईएल) द्वारा वित्तपोषित, स्वामित्व और संचालित जीसैट-20, संचार उपग्रहों की जीसैट श्रृंखला की निरंतरता होगी और इसका उद्देश्य भारत के स्मार्ट सिटी मिशन द्वारा आवश्यक संचार अवसंरचना में डेटा संचरण क्षमता को जोड़ना है। सीएमएस-02 उपग्रह की पूरी क्षमता डिश टीवी को पट्टे पर दी जाएगी। यह उपग्रह 32 उपयोगकर्ता बीम से सुसज्जित है जिसमें पूर्वोत्तर क्षेत्र पर आठ संकीर्ण स्पॉट बीम और शेष भारत पर 24 चौड़े स्पॉट बीम शामिल हैं। इन 32 बीम को मुख्य भूमि भारत में स्थित हब स्टेशनों द्वारा समर्थित किया जाएगा।

भाजपा चाहती है कि मणिपुर जलता रहे : खरगे

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली। मणिपुर में ताजा हिंसा भड़कने के बीच कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने रविवार को आरोप लगाया कि सत्तारूढ़ पार्टी चाहती है कि मणिपुर जलता रहे क्योंकि इससे उनकी घृणास्पद विभाजनकारी राजनीति का मकसद पूरा होता है। मणिपुर में अस्थिर हालात के बीच केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने महाराष्ट्र में अपनी चुनावी रैलियां रद्द कर दी हैं। खरगे ने कहा कि राज्य के लोग कभी माफ नहीं करेंगे और न ही यह भूलेंगे कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उन्हें उनके हाल पर छोड़ दिया और उनकी परेशानियों को दूर करने के लिए कभी उनके राज्य में कदम नहीं रखा। कांग्रेस अध्यक्ष ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, नरेन्द्र मोदी जी आपकी डबल इंजन सरकारों के शासन में न तो मणिपुर एक है, न ही मणिपुर सुरक्षित है। उन्होंने कहा, मई 2023 से यह अकल्पनीय दर्द, विभाजन और हिंसा से जूझ रहा है, जिसने इसके लोगों के भविष्य को नष्ट कर दिया है। उन्होंने कहा हम पूरी जिम्मेदारी के साथ कह रहे हैं कि ऐसा लगता है कि भाजपा चाहती है कि मणिपुर जलता रहे क्योंकि इससे उसकी घृणित विभाजनकारी राजनीति का मकसद पूरा होता है। खरगे ने कहा कि सात नवंबर से अब तक कम से कम 17 लोगों की जान जा चुकी है, संघर्षग्रस्त क्षेत्रों की सूची में नए जिले जुड़े रहे हैं और आग सीमावर्ती पूर्वोत्तर राज्यों तक फैल रही है। कांग्रेस प्रमुख ने कहा, आपने मणिपुर को निराश किया है जो एक खूबसूरत सीमावर्ती राज्य है। भले ही आप भविष्य में मणिपुर का दौरा करें, राज्य के लोग कभी माफ नहीं करेंगे या भूलेंगे नहीं कि आपने उन्हें उनके हाल पर छोड़ दिया और उनके कष्टों को दूर करने और समाधान खोजने के लिए कभी उनके राज्य में कदम नहीं रखा। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने भी मणिपुर में हाल में हुई हिंसक झड़पों और जारी रक्तपात को बेहद परेशान करने वाला करार दिया। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी से राज्य का दौरा करने और क्षेत्र में शांति बहाल करने की दिशा में काम करने का आग्रह किया। राहुल गांधी ने एक्स पर एक पोस्ट में कि हाल ही में हुई हिंसक झड़पें और जारी रक्तपात बेहद परेशान करने वाला है। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने कहा, एक वर्ष से अधिक समय के विभाजन और पीड़ा के बाद, प्रत्येक भारतीय की यह आशा थी कि केंद्र और राज्य सरकारें सुलह के लिए हर संभव प्रयास करेंगी और कोई समाधान निकालेंगी। उन्होंने कहा, मैं प्रधानमंत्री से मणिपुर जाने और क्षेत्र में शांति एवं सौहार्द बहाल करने की दिशा में काम करने का एक बार फिर आग्रह करता हूं। पार्टी महासचिव (संगठन) के सी वेणुगोपाल ने कहा कि ह्यह्यमणिपुर में हिंसा की बढ़ती घटनाएं दशार्ती हैं कि मामले किस हद तक नियंत्रण से बाहर हो गए हैं।

प्रदर्शन ओडिशा में पुरी के ब्लू फ्लैग तट पर शक्ति प्रदर्शन अभियान चार दिसंबर को .....

भारतीय नौसेना के शक्ति प्रदर्शन में 40 विमान, 25 युद्धपोत भाग लेंगे

भुवनेश्वर, एजेंसी

ओडिशा में पुरी के ब्लू फ्लैग तट पर चार दिसंबर को होने वाले भारतीय नौसेना के शक्ति प्रदर्शन अभियान में मिग-29के और हल्के लड़ाकू विमान सहित 40 विमान और 25 युद्धपोत भाग लेंगे। वे नौसेना की समुद्री ताकत और अभियानगत क्षमताओं का प्रदर्शन करेंगे। अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी। इस कार्यक्रम में परेड भी होगी और इस दौरान राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, राज्यपाल रघुबर दास, मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी और भारतीय नौसेना के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहेंगे। शनिवार को यहां एक उच्च स्तरीय बैठक में ओडिशा के पुलिस महानिदेशक वाई.बी. खुरानिया ने वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया कि कार्यक्रम का आयोजन सुचारू तरीके से हो तथा राज्य सरकार, स्थानीय प्रशासन और नौसेना के बीच सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया। यह पहली बार होगा, जब भारतीय नौसेना ओडिशा में इस तरह का आयोजन करेगी जिससे आम लोगों को अत्याधुनिक युद्धपोतों और विमानों के साथ-साथ कमांडो के प्रदर्शन देखने का एक अनूठा अवसर मिलेगा।

पुंछ में मिनी मैराथन

आयोजित

मेंढर/जम्मू। जम्मू कश्मीर में पुंछ जिले के मेंढर सेक्टर में सेना की भिंबर गली ब्रिगेड द्वारा आयोजित मिनी मैराथन में रविवार को सैकड़ों लोगों ने हिस्सा लिया। एक अधिकारी ने बताया कि मेंढर खेल महोत्सव से पूर्व पहली मिनी मैराथन नागरिक-सैन्य संबंधों को मजबूत करने के अलावा एकता और सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देने के लिए ऑपरेशन सद्भावना के तहत आयोजित की गयी। सैन्य अधिकारी ने बताया कि इसमें मेंढर क्षेत्र के विद्यालय और कॉलेज के 400 से अधिक लोगों ने भाग लिया, जो उनके जोश एवं उत्साह को दशार्ता है। उन्होंने बताया कि मैराथन दो प्रतियोगी आयु श्रेणियों 15 से 30 वर्ष और 31 से 45 वर्ष में आयोजित की गयी। सभी प्रतिभागियों ने जबरदस्त उत्साह, लचीलापन और अदम्य इच्छाशक्ति का प्रदर्शन किया। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य संस्कृति को बढ़ावा देना, सामुदायिक जुड़ाव को प्रोत्साहित करना और स्थानीय लोगों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा करना, उन्हें नए कौशल सीखने और अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रेरित करना है। ऑपरेशन सद्भावना सेना की एक पहल है। यह पहल शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, बुनियादी ढांचे, सशक्तीकरण पर ध्यान केंद्रित करती है और मेंढर की युवा प्रतिभाओं को कई अवसर प्रदान करती हैं जिससे वे अपने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ सकें।

संक्षिप्त समाचार

गंगा में अलग-अलग स्थानों पर मिले दो शव, शिनाख्त नहीं

हरिद्वार, एजेंसी। कनखल थाना क्षेत्र में बैरागी कैंप और जगजीतपुर में गंगा किनारे दो लोगों के शव गंगा किनारे में मिले। पुलिस ने शव बाहर निकलवाकर शिनाख्त करानी चाही, लेकिन पहचान नहीं हो सकी। पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर जिला अस्पताल की मोर्चरी में भिजवा दिया। पहचान कराने में टीमें जुट गई। पुलिस के अनुसार, शनिवार की दोपहर में करीब दो बजे पुलिस को सूचना मिली कि बैरागी कैंप में ठोकर नंबर 10 पर गंगा किनारे एक शव है। जानकारी मिलते ही एसओ मनोज नौटियाल टीम के साथ मौके पर पहुंचे। शव को बाहर निकलवाया। एसओ ने बताया कि शव दो से तीन दिन पुराना लग रहा है। मृतक की उम्र करीब 30-35 साल है। पहचान कराने का प्रयास किया जा रहा है। इधर, जगजीतपुर क्षेत्र में मातृ सदन आश्रम के समीप गंगा किनारे एक शव पानी में फंसा होने की जानकारी पुलिस को मिली। सूचना मिलने पर पुलिस टीम मौके पर पहुंची और शव को बाहर निकलवाया। आसपास के लोगों को बुलाकर शिनाख्त करानी चाही, लेकिन पहचान नहीं हो सकी। थाना प्रभारी ने बताया कि मृतक की उम्र करीब 40 साल के आसपास है। शव एक-दो दिन पुराना प्रतीत हो रहा है।

दो बाइकें भिड़ीं, युवकों में जमकर मारपीट

रूड़की, एजेंसी। पंडित दीन दयाल उपाध्याय पुल पर दो बाइकों की आमने-सामने की भिड़ंत हो गई। इस पर बाइक सवार चारों युवकों में मारपीट हो गई। मौके पर पहुंचे लोगों ने बीचबचाव कराने की कोशिश की तो युवकों ने उनसे अभद्रता कर दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने मामला शांत कराया। शनिवार सुबह करीब 10 बजे एक पुल पर दो बाइकें आमने-सामने से आ रहीं थीं। इस बीच एक बाइक सवार ने आगे चल रहे ई-रिक्शा को ओवरटेक किया तो सामने से आ रही बाइक से भिड़ंत हो गई। इस बीच दोनों बाइक पर सवार चार युवक सड़क पर जा गिरे। इससे चारों में गाली-गलौज हो गई। देखते ही देखते मारपीट हो गई। इस बीच पुल से गुजर रहे लोगों ने बीचबचाव कराने की कोशिश की। इस पर युवकों ने उनसे ही अभद्रता कर दी। इसकी सूचना किसी ने सिविल लाइंस कोतवाली पुलिस को दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर मामला शांत कराया। इसके बाद चारों युवक बाइक लेकर मौके से चले गए। वहीं, इस दौरान पुल पर कुछ देर के लिए जाम के हालात भी बन गए।

बंद मकान का ताला तोड़कर गहने-नकदी चोरी

रूड़की, एजेंसी। चोरों ने बंद मकान का ताला तोड़कर कीमती जेवर और हजारों की नकदी चोरी कर ली। मकान स्वामी की ओर से पुलिस को तहरीर दी गई है। पुलिस तहरीर के आधार पर जांच कर रही है। मंगलौर कोतवाली क्षेत्र के आकाश दीप एन्क्लेव निवासी रामकुमार ने पुलिस को बताया कि 12 नवंबर को वह परिवार सहित एक शादी समारोह में भाग लेने गए थे। शनिवार को वह घर पहुंचे तो मकान के मुख्य गेट का ताला टूटा था। उन्होंने घर के अंदर जाकर देखा तो सामान इधर-उधर बिखरा हुआ था। अलमारी के ताले भी टूटे थे।

धान व्यापारी की 18 लाख की रकम हड़पी, तीन पर केस दर्ज

रूड़की, एजेंसी। व्यापारी ने पुलिस को तहरीर देकर हरियाणा के तीन लोगों पर बिक्री किए गए धान की रकम हड़पने का आरोप लगाया है। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। खानपुर क्षेत्र के अब्दुल रहीमपुर गांव निवासी सतीश कुमार अनाज का व्यापार करते हैं। उन्होंने पुलिस को बताया कि वह हरियाणा, सोनीपत की सन स्टार कंपनी के राजेश शर्मा से अनाज की खरीद और बिक्री करते हैं। राजेश शर्मा ने कैथल, हरियाणा में स्थित एक राइस मिल के मालिक केशव मित्तल और दिनेश कुमार से मिलवाकर धान का सौदा कराया था। राजेश शर्मा के परिचित होने पर उन्होंने लगभग 30 लाख रुपये की कीमत का 1200 क्विंटल धान राइस मिल में भेज दिया था। इस बीच राइस मिल की ओर से कुछ रकम उनके खाते में जमा करा दी गई थी। 18 लाख रुपये शेष रह गए थे। उन्होंने अपनी बाकी की रकम मांगी तो वह आनाकानी करने लगे।

दिल्ली-मुंबई समेत कई राज्यों के 134 बड़े लोग जमीन की लूट में शामिल, दो जिलों में सबसे ज्यादा मामले

हल्द्वानी, एजेंसी।
उत्तराखंड में भू-कानून लागू होने से पहले ही सख्ती शुरू हो गई है। देवभूमि में भूमि खरीदने वालों के काले कारनामे लगातार खुल रहे हैं। कुमाऊं में ही अब तक की जांच में 134 मामले सामने आ चुके हैं, जिन्होंने जमीन तो खेती-बाड़ी के लिए खरीदी, मगर उसमें मनमानी की फसल उगाने लग गए। यानी कि किसी ने होटल, रिसार्ट बनाए तो कोई और ही उपयोग करने लगा।

अब प्रशासन मुंबई, दिल्ली समेत कई राज्यों के प्रभावशाली लोगों की ओर से इस जमीन में बोई मनमानी की फसल को रौंदने में जुट गया है। जमीन की लूट में शामिल लोगों में अब खलबली मची हुई है। धामी सरकार कड़ी कार्रवाई के निर्देश भी दे चुकी है।

कुमाऊं में सबसे अधिक 64 मामले नैनीताल जिले में हैं और इसके बाद अल्मोड़ा में 23 लोगों का जमीन का उपयोग बदलने का मामला सामने आया है। राहत है कि सीमांत जिला पिथौरागढ़ अभी भू माफिया की नजरों से बचा हुआ है।

राज्य बनने के बाद ही नैनीताल जिले में जमीन की लूट का बड़ा खेल शुरू हो गया था। वर्ष 2003 के बाद से विशेष अनुमतियों से

254 बाहरी लोगों ने व्यावसायिक और कृषि प्रयोजन से जमीन खरीदी। इसमें से 64 मामलों में जांच के बाद उल्लंघन की पुष्टि हुई है। सबसे अधिक खेल 2017 के बाद शुरू हुआ।

व्यावसायिक और कृषि प्रयोजन के लिए बाहरी लोगों ने भूमि खरीदी। जिले में विशेष अनुमति प्राप्त कर सर्वाधिक जमीन की खरीद फरोख्त और उल्लंघन नैनीताल तहसील में सबसे अधिक हैं।

इस लूट में नौकरशाह से लेकर भू-माफिया भी शामिल रहे। जमीन खरीदने वाले बेहद प्रभावशाली लोग हैं। रामनगर में भी उल्लंघन के मामले सामने आए हैं, जहां पर रिसार्ट बनाने को लेकर भूमि खरीद की होड़ सी मची है।

अल्मोड़ा में भू-कानूनों के उल्लंघन से संबंधित 23 मामले सामने आए है। इनमें से 10 मामले न्यायालय में चल रहे है। आठ मामलों प्रशासनिक जांच चल रही है। फिलहाल प्रशासन ने सभी लोगों को नोटिस जारी कर दिया है। पांच मामलों में उल्लंघन मिलने पर कार्रवाई होनी है। मुंबई के पूंजीपति भरत विसंजी की 108 नाली भूमि सरकार में निहित कर ली गई है। 261 नाली भूमि पर कार्रवाई चल रही है। लमगड़ा के कपकोट गांव में सिने स्टार मनोज वाजपेयी की 15 नाली भूमि भी भू-कानून उल्लंघन के दायरे में आई है। वर्तमान में यह मामला न्यायालय में चल रहा है। यहां तक कि गरीबों से उनकी बेशकीमती जमीन को सस्ते में लेकर भी देवभूमि में जमीन की लूट का खेल का भी चल रहा है। बाहर से आए लोगों ने बागेश्वर जिले में भी भूमि खरीद और उसका उपयोग बदल दिया। इसको लेकर चार लोगों के नाम से दर्ज भूमि की जांच चल रही है। कौसानी में अवनीश कुमार झा ने 0.134 हेक्टेयर, अनीता कपूर ने 0.614 हेक्टेयर, कपकोट में मैमर्स ऊनी वस्त्र ने 0.014 हेक्टेयर, उत्तर भारत हाइड्रो पावर कंपनी ने 0.090 हेक्टेयर भूमि खरीदी थी। त्रिलोक खादी उद्योग सेवा समिति ने भी भूमि खरीदी, जिसका उपयोग अन्य कार्यों के लिए किया जा रहा है। कौसानी में अनीता ने 2005 में भूमि कृषि आधारित व्यवसाय एवं उद्योगों के प्रयोजन के लिए खरीदी। इसमें पर्यटन होटल, पालीहाउस तथा फुलवारी बना दी। दिल्ली के अवनीश कुमार झा ने 2022 में पर्यटन उद्योग के लिए खरीदी भूमि में निर्माण कार्य चल रहा है। अब इन पर अंकुश की तैयारी है। पिथौरागढ़ जिले में मानक से अधिक भूमि खरीद के केवल दो मामले हैं। गनाई गंगोली तहसील में खुटानी हाइड्रो पावर प्लांट के लिए मानक से अधिक भूमि खरीदी गई थी। एक अन्य मामला कृषि भूमि खरीद का है। प्रशासन की जांच में दोनों स्थानों पर जिस उद्देश्य के लिए भूमि खरीदी गई थी, वहां पर उसी कार्य में उपयोग पाया गया है। अपर जिलाधिकारी एसके बरनवाल ने बताया कि मानक से अधिक भूमि क्रय करने का कोई मामला नही है। यह सीमांत जिला है, जिसकी सीमा चीन से मिलती है। इसलिए अधिकांश क्षेत्र में जाने के लिए ही इनर लाइन परमिट की आवश्यकता पड़ती है।

चंपावत जिले में जमीदारी विनाश एवं भूमि व्यवस्था अधिनियम के तहत निर्धारित 250 वर्ग मीटर से अधिक जमीन खरीद के तीन मामले हैं। 250 वर्ग मीटर मानक के भीतर 892 गैर उत्तराखंडियों ने भूमि खरीदी है। पूर्णागिरि तहसील में 758, चंपावत में 78, पाटी में 37, लोहाघाट में 17 व बाराकोट में दो मामले हैं।

कायाकल्प योजना के तहत जिला अस्पताल को कमेंडेशन अवार्ड

रुद्रपुर, एजेंसी।
कायाकल्प योजना के तहत जिला अस्पताल और गदरपुर सीएचसी को कमेंडेशन अवार्ड के लिए चुना गया है। जिला अस्पताल को वर्ष 2021-22 में कायाकल्प योजना के तहत पहला पुरस्कार मिला था।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन ने बीते शुक्रवार को वर्ष 2023-24 के कायाकल्प पुरस्कार की सूची जारी की है। सरकारी अस्पतालों में सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल, सुविधा, स्वच्छता और संक्रमण नियंत्रण को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार की महत्वपूर्ण योजना के तहत कायाकल्प पुरस्कार दिया जाता है। कायाकल्प पुरस्कार में कमेंडेशन (सांत्वना) पुरस्कार के तहत 50,000 रुपये दिए जाते हैं। यह पुरस्कार उन स्वास्थ्य इकाइयों को दिया जाता है जो कायाकल्प सर्वेक्षण में 70 प्रतिशत से अधिक अंक लाते हैं लेकिन प्रथम श्रेणी का पुरस्कार प्राप्त नहीं कर पाते। पहले श्रेणी में आने वाले अस्पताल को 25 लाख रुपये दिए जाते हैं।

कायाकल्प पुरस्कार के लिए सुविधाओं को मानकीकृत मैट्रिक्स पर वर्गीकृत किया जाता है। पुरस्कार प्राप्त करने के लिए राज्य स्तरीय समीक्षा बोर्डों के सर्वेक्षण में कम से कम 70 प्रतिशत अंक लाने होते हैं। पुरस्कार के लिए अस्पताल की आधारभूत संरचना और वहां दी जाने वाली सुविधाओं की गुणवत्ता को देखा जाता है। पेयजल की उपलब्धता, गुणवत्ता, जैविक कचरा निस्तारण, औषधीय उद्यान, सीसीटीवी कैमरा, ओपीडी में टीवी की व्यवस्था वगैरह को देखा जाता है।

भाजपा के राष्ट्रीय मंत्री बंसल पहुंचे जागेश्वर धाम

अल्मोड़ा, एजेंसी। भाजपा के राष्ट्रीय मंत्री सुनील बंसल शनिवार को जागेश्वर धाम पहुंचे। उन्होंने भोलेनाथ के चरणों में शीश नवाकर आशीर्वाद लिया। उन्होंने कहा कि जागेश्वर धाम से उनकी गहरी आस्था जुड़ी है। मंदिर समिति की कार्यवाहक प्रबंधक और भनोली की तहसीलदार बरखा जलाल, उपाध्यक्ष नवीन भट्ट, पुजारी प्रतिनिधि नवीन चंद्र भट्ट ने स्मृति चिह्न भेंट कर बंसल का स्वागत किया। वहां पर पार्टी के पूर्व जिलाध्यक्ष रवि रौतेला, प्रदेश प्रवक्ता गौरव पांडे, ज्येष्ठ ब्लॉक प्रमुख योगेश भट्ट, महेश चंद्र, मंडल अध्यक्ष हरीश प्रसाद, आचार्य गिरीश भट्ट, केवल भट्ट, दयाल पांडे, नरेंद्र आगरी आदि शामिल रहे।

47 महिलाओं ने झाड़ू उठाई तो बदल गई बागेश्वर शहर की सूरत, अभिनव प्रयास बना पूरे राज्य के लिए मिसाल

बागेश्वर, एजेंसी।
नगर पालिका बागेश्वर का अभिनव प्रयास पूरे राज्य के लिए मिसाल बना है। महिलाओं ने लोगों को गीले कूड़े से खाद बनाने के लिए प्रेरित किया। पालिका ने कूड़ा संग्रहण के लिए महिलाओं को सुरक्षा उपकरण उपलब्ध कराए। अब ये महिलाएं सुबह कूड़ा एकत्रीकरण का काम करती हैं।

47 महिलाओं ने हाथ में झाड़ू उठाई तो बागेश्वर शहर की सूरत ही बदल गई। नगर पालिका बागेश्वर का यह अभिनव प्रयास आज पूरे प्रदेश के लिए मिसाल बन गया है। अन्य निकायों में भी इसकी तर्ज पर पहल की कोशिश की जा रही है। दरअसल, बागेश्वर का भौगोलिक स्वरूप ऐसा है कि हर गली मोहल्ले तक कूड़ा एकत्रीकरण का काम वाहन से नहीं हो पाता था। पालिका ने वर्ष 2017-18 में यहां के 100 परिवारों के घरों से सूखा अपशिष्ट लेने के लिए पहले चरण में 18 महिलाओं को अनुबंधित किया था। इन्हें प्रति महिला प्रति दिन 100 रुपये की दर से 3000 रुपये प्रति महिला को मासिक भुगतान किया जाता था। पालिका ने इन महिलाओं को गीले और सूखे कूड़े के पृथक्करण की जानकारी दी। इन महिलाओं ने लोगों को गीले कूड़े से खाद बनाने के लिए प्रेरित किया। पालिका ने कूड़ा संग्रहण के लिए महिलाओं को सुरक्षा उपकरण उपलब्ध कराए। अब ये महिलाएं सुबह कूड़ा एकत्रीकरण का

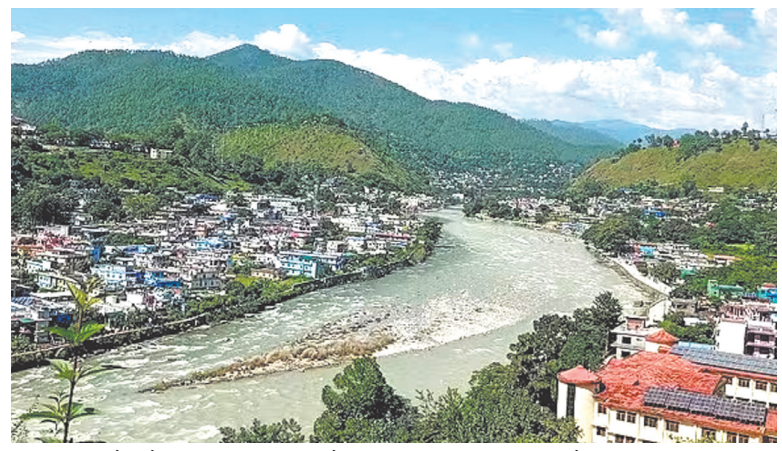

काम करती हैं और इसके बाद अपने दैनिक घरेलू कार्य भी आसानी से कर लेती हैं। गीले कचरे से कंपोस्ट खाद भी तैयार कर रहीं हैं। इस अभिनव प्रयास को शहरी कार्य संस्थान प्रकाशित कर चुका है। वर्तमान में 11 वार्डों में 47 महिलाएं और दो महिला सुपरवाइजर कूड़ा एकत्रीकरण कर रहीं हैं। उनके प्रभावित होकर नगर पंचायत कपकोट में एक वार्ड में दो महिलाएं ये काम कर रहीं हैं। उन्हें 1,41,000 मानदेय दिया जा रहा है। दो सुपरवाइजर को 10 हजार का मानदेय दिया जाता है। ये महिलाएं सभी वार्डों से 75 हजार रुपये यूजर चार्ज वसूल कर रही हैं। सचिव शहरी विकास नितेश झा का कहना है कि यह अभिनव प्रयास अन्य निकायों के लिए मिसाल है। कूड़ा संग्रहण के दौरान इन महिलाओं के लिए चुनौतियां भी कम न थीं। निकृष्ट कार्य मानने वाले समाज के बीच इनको तिरस्कार का सामना करना पड़ा। कई बार उनको कूड़ेवाली के नाम से पुकारा जाता, जिससे उनका मनोबल प्रभावित होता था। वार्डों में जब काम शुरू हुआ तो गीला और सूखा कूड़ा मिलाकर देते थे, जो वार्डों से मुख्य मार्गों तक सिर पर ढोते समय उनके कपड़े भी गीले हो जाते थे। दुर्गम वार्डों तक वाहन संचालन न होने पर गर्मी, सर्दी व बरसात में सिर पर कूड़ा ढोना बेहद मुश्किल काम था।

सरसंघ चालक मोहन भागवत सीमांत जिले पिथौरागढ़ के दौरे पर पहुंचे, चार दिन तक यहीं करेंगे प्रवास

पिथौरागढ़, एजेंसी।
संघ चालक मोहन भागवत चार दिवसीय दौरे पर पिथौरागढ़ पहुंचे हैं। इस दौरान वह संघ के विभिन्न कार्यक्रमों में शिरकत करेंगे।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक के सरसंघ चालक डॉ. मोहन मधुकर राव भागवत शनिवार की शाम इंडिगो एयरलाइंस की फ्लाइट से दिल्ली से पंतनगर पहुंचे। यहां उन्होंने अल्पाहार लिया और 20 मिनट बाद सड़क मार्ग से चंपावत के लिए रवाना हो गए, जहां से वह पिथौरागढ़ जाएंगे। इस दौरान

मीडिया को दूर रखा गया। डॉ. भागवत सीमांत जिले पिथौरागढ़ में चार दिवसीय प्रवास पर रहेंगे। इस दौरान वह संघ के विभिन्न कार्यक्रमों में शिरकत करेंगे। साथ ही वह सभी जिला प्रचारकों व वरिष्ठ प्रचारकों के साथ संवाद भी करेंगे। इसके अलावा वह जनमानस के साथ वर्तमान की शाखा मिलन व मंडली संघ कार्य के विस्तार के साथ ही पंच परिवर्तन स्वदेशी, सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, नागरिक कर्तव्य, पर्यावरण एवं जल संरक्षण पर भी चर्चा करेंगे।

एआई के दौर में मीडिया की विश्वसनीयता बनाए रखने पर दिया जोर

अल्मोड़ा, एजेंसी। राष्ट्रीय प्रेस दिवस पर शनिवार को राजकीय संग्रहालय सभागार में प्रेस की बदलती प्रकृति विषय पर गोष्ठी हुई। वक्ताओं ने आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई), डिजिटल टेक्नोलॉजी और अन्य साधनों के प्रयोग के साथ मीडिया की विश्वसनीयता, मर्यादा एवं प्रतिष्ठा को बनाए रखने पर जोर दिया।

वक्ताओं ने कहा कि परिवर्तन प्रकृति का नियम है। यह परिवर्तन पत्रकारिता में भी स्वाभाविक है। वर्तमान में बदलती पत्रकारिता के साथ-साथ पत्रकारिता की गरिमा और इसकी विश्वसनीयता को कायम रखते हुए कार्य करना होगा। वरिष्ठ पत्रकार जगदीश जोशी की अध्यक्षता में आयोजित गोष्ठी में रमेश जोशी, चंद्रशेखर द्विवेदी, किशन जोशी, प्रकाश चंद्र पांडे, सुरेश तिवारी, कंचना तिवारी, दया कृष्ण कांडपाल ने विचार रखे। संचालन प्रभारी जिला सूचना अधिकारी सुंदर कुमार ने किया। वहां मुकेश सक्टा, अशोक पांडे, हरीश भंडारी, नसीम अहमद, निर्मल उप्रेती, एसएस कपकोटी, जगजीवन बिष्ट, शिवेंद्र गोस्वामी, संतोष बिष्ट आदि मौजूद रहे।

जिला सूचना अधिकारी कार्यालय सभागार में राष्ट्रीय प्रेस दिवस पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। मीडिया कर्मियों ने वर्तमान में डिजिटल मीडिया के उदय के बाद आए बदलाव पर चर्चा की। हाल के वर्षों में मीडिया में बड़ा परिवर्तन आया है।

बैक डोर से की गई थी मनोज बाजपेयी के नाम जमीन की रजिस्ट्री, ताक पर रख दिए गए सारे नियम-कायदे

अल्मोड़ा, एजेंसी।
फिल्म स्टार मनोज बाजपेयी को जमीन खरीदवाने के लिए नियम-कायदे ताक पर रख दिए गए थे। अल्मोड़ा के कपकोट में ध्यान केंद्र का हवाला देकर 15 नाली जमीन खरीदी गई थी। मामले में मानकों को पूरा नहीं करने की बात सामने आई है।

फिल्म स्टार मनोज बाजपेयी को जमीन खरीदवाने के लिए नियम-कायदे तक ताक पर रख दिए गए थे। सूत्रों का दावा है कि प्रदेश के एक वरिष्ठ राजनेता के प्रभाव में जब अभिनेता की जमीन की रजिस्ट्री कराई गई तो सारी रिपोर्ट दो दिन में ही पूरी कर दी गई थी। बाकायदा, रजिस्ट्री की प्रक्रिया देर शाम पूरी की गई थी।

मनोज बाजपेयी ने 2021 में अल्मोड़ा के लमगड़ा विकासखंड के कपकोट गांव में लगभग 15 नाली जमीन खरीदी थी। कथित तौर पर इस खरीद का उद्देश्य एक ध्यान और योग केंद्र का विकास करना बताया गया था। फिल्म स्टार की यह जमीन भी जांच के दायरे में है। शासन में तैनात एक वरिष्ठ नौकरशाह पर भी कार्रवाई की गाज गिर सकती है।

चर्चा है कि बाजपेयी की जमीन को भी जब्त की जा सकती है। हालांकि, डीएम आलोक कुमार पांडे ने कहा कि जमीन जब्त की जाएगी या नहीं, यह तो जांच के आधार पर ही तय किया जा सकता

है। फिलहाल जमीन खरीद के मामले में मानकों को पूरा नहीं करने की बात सामने आई है। अभी इस मामले में जांच जारी है, कोई कार्रवाई नहीं की गई है। शासन को भी इस बारे में अवगत करा दिया गया है। डीएम का स्पष्ट कहना है कि जहां कहीं भी नियमों के उल्लंघन का मामला पाया जाएगा उस पर नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। प्रशासन की जांच के मुताबिक तीन अन्य की जमीन भी जब्त की जा सकती है। ऐसे ही 23 अलग-अलग मामलों की जांच की जा रही है।

प्रदेशभर में बाहरी लोगों की ओर से जमीनों की खरीद-फरोख्त के मामले पर प्रशासन ने सख्ती शुरू कर दी है। डीएम आलोक कुमार पांडे ने जिले में नियमों का उल्लंघन कर खरीदी गई जमीनों के मामलों की जांच बैठा दी है। इसी के मद्देनजर अल्मोड़ा तहसील के अंतर्गत जमीन की खरीद-फरोख्त की जांच में कई तथ्य सामने आए हैं।

पिछले दिनों अल्मोड़ा तहसील प्रशासन ने मुंबई के एक उद्योगपति की 108 नाली जमीन को जब्त कर बैनामा रद्द कर दिया था। तब से जिले में हर क्षेत्र में ऐसी जमीनें तलाशी जा रही हैं जिन्हें बड़ी-बड़ी हस्तियों ने खरीदा है। इन जमीनों की खदीद-फरोख्त में प्रदेश की जमीन खरीद संबंधी नीति का उल्लंघन किया गया है।

बागेश्वर जिले में जमीन खरीदने वाले चार लोगों के खिलाफ प्रशासन की कार्रवाई चल रही है। इन लोगों ने जिस उद्देश्य से जमीन खरीदी थी, उस उद्देश्य से उन्होंने जमीन का उपयोग नहीं किया। एक व्यक्ति के खिलाफ जांच पूरी होने के बाद उसकी जमीन को जब्त किया जा चुका है। जिला प्रशासन के अनुसार कौसानी में अवशीन कुमार झा ने 0.134 हेक्टेयर, अनीता कपूर ने 0.614 और कपकोट में मैसर्स ऊनी वस्त्र ने 0.014 हे. और उत्तर भारत हाइड्रो पावर कंपनी ने 0.090 हेक्टेयर जमीन खरीदी थी। कौसानी में जिस उद्देश्य से जमीन खरीदी गई थी, उसका उपयोग दूसरे कार्य में किया जा रहा था। कपकोट में खरीदी गई जमीन पर भी कोई कार्य नहीं किया जा रहा था। इसके चलते इस मामले में भी कार्रवाई गतिमान है। मैसर्स त्रिलोक ग्रामोद्योग के खिलाफ मामला पूरा होने के बाद उनकी खरीदी जमीन को जब्त कर लिया गया है। एडीएम एनएस नबियाल ने बताया कि जमीन खरीदने के बाद इनका उपयोग वांछित प्रयोजन में नहीं किया गया। गरुड़ और कपकोट के एसडीम के यहां इन चार जमीनों के मामले चल रहे हैं।

एसडीएम सौरभ असवाल ने बताया कि चंपावत जिले में एक बाहरी व्यक्ति ने नियम विरुद्ध भूमि खरीदी है। इस पर विधिक कार्रवाई की जा रही है। मामले की जांच के बाद कोर्ट में केस दर्ज किया जाएगा।

गहलोत का इस्तीफा भाजपा की गंदी राजनीति और षड्यंत्र का हिस्सा - संजय सिंह

- कैलाश गहलोत और उनके परिवार पर ईडी-सीबीआई के कई केस चल रहे हैं, इसलिए उन्होंने जेल जाने से बेहतर भाजपा में जाना समझा - प्रियंका कक्कड़

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

आम आदमी पार्टी ने ईडी सीबीआई के दबाव में आकर मंत्री कैलाश गहलोत द्वारा इस्तीफा दिए जाने पर भारतीय जनता पार्टी पर तीखा हमला बोला है। पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं राज्यसभा सदस्य संजय सिंह का कहना है कि कैलाश गहलोत का इस्तीफा भाजपा की गंदी राजनीति और षड्यंत्र का हिस्सा है। कैलाश गहलोत के ऊपर ईडी-सीबीआई का छापा डलवाकर दबाव बनाया गया और अब जो स्क्रिप्ट भाजपा की तरफ से उन्हें दी गई है, वह उसी हिसाब से बोल रहे हैं। दिल्ली चुनाव से पहले मोदी वाशिंग मशीन सक्रिय हो गई है। अब कई नेता इस मशीन के जरिए भाजपा में शामिल किए जाएंगे। पार्टी की मुख्य प्रवक्ता प्रियंका कक्कड़ ने कहा कि कैलाश गहलोत और उनके परिवार पर ईडी-सीबीआई के कई केस चल रहे हैं। इसलिए उन्होंने जेल जाने से बेहतर भाजपा में जाना समझा।

आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने कहा कि आज भाजपा एक बार फिर अपने हथकंडे, घिनौनी राजनीति और षड़यंत्र में कामयाब हुई है। कैलाश गहलोत के ऊपर लगातार भाजपा द्वारा दबाव बनाया जा रहा था। ईडी-सीबीआई के छापे मारे जा रहे थे। ईडी के दफ्तर में पूछताछ के लिए बुलाया जा रहा था। उनके घर पर इनकम टैक्स के छापे मारे जा रहे थे। यह भाजपा और नरेंद्र मोदी जी की खूबसूरती है कि जब वो किसी के यहां एजेंसियों के छापे मरवाते हैं, ईडी के दफ्तर मे पूछताछ के लिए बुलाते हैं तो जोर-जोर से प्रेस कॉन्फ्रेंस करते हैं, चिल्लाते हैं कि कैलाश गहलोत पर यह भ्रष्टाचार है, वो भ्रष्टाचार है और जैसे ही भाजपा में शामिल हो जाते हैं तो सारे आरोपों से बरी हो जाते हैं। कैलाश गहलोत के ऊपर ईडी, इनकम टैक्स समेत तमाम तरीके का दबाव था।

संजय सिंह ने कहा कि वह ऐसी बात कर नहीं सकते हैं क्योंकि वह पांच साल तक खुद सरकार का हिस्सा रहे हैं। वह इस पार्टी का हिस्सा रहे हैं। यह सारी भाजपा की स्क्रिप्ट है। वह जिस तरह की स्क्रिप्ट बनाकर देगी और जिस तरह का षड़यंत्र उन्होंने कैलाश गहलोत के खिलाफ किया है, उन्हें उसी तरह से बोलना पड़ेगा।

आम आदमी पार्टी की मुख्य प्रवक्ता प्रियंका कक्कड़ ने कहा कि चुनाव चल रहे हैं और भाजपा के गंदे षड़यंत्र शुरू हो चुके हैं। ईडी और सीबीआई एक्टिव हो चुकी है। कैलाश गहलोत के ऊपर ईडी-सीबीआई के कई मामले चल रहे थे। उनके परिवार पर भी चल रहे थे। इसलिए उन्होंने जेल के संघर्ष से बेहतर भाजपा में शामिल होना समझा। 14-15 घंटे पहले उनके सोशल मीडिया अकाउंट देखिए तो वह आम आदमी पार्टी के लिए ही काम कर रहे थे। ईडी और सीबीआई सक्रिय हो चुके हैं क्योंकि चुनाव शुरू हो गए हैं और भाजपा वही अपनी गंदी राजनीति पर उतारू है। उनके भी दो बड़े नेता आज आम आदमी पार्टी ज्वाइन कर रहे हैं, तो यह लगा रहेगा।

वहीं, आप नेता दुर्गेश पाठक ने कहा पिछले कई महीने से कैलाश गहलोत के ऊपर हर दिन ईडी के दफ्तर बुलाया जाता था। उनको ईडी और आईटी की रेड का सामना करना पड़ता था। उनके पास कोई और रास्ता नहीं था। उन्हें भाजपा में ही जाना था। इससे एक चीज साफ हो गई कि भाजपा दिल्ली का चुनाव हार चुकी है। आज उनके पास कोई मुद्दा नहीं बचा है। उनके पास बताने के लिए कोई चीज नहीं है। वो दिल्ली में ईडी-सीबीआई, इनकम टैक्स के माध्यम से चुनाव लड़ रही है और हम लोग दिल्ली के लोगों के काम करने वाली राजनीति के नाम पर वोट मांग रहे हैं। भाजपा पूरी तरह से यह चुनाव हार चुकी है। इससे इस बात का पूरा संकेत मिलता है।

जंतर मंतर पर अखिल भारतीय यदुवंशी महासभा ने मनाया यादव शौर्य दिवस

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली के जंतर मंतर पर अखिल भारतीय यदुवंशी महासभा के द्वारा यादव शौर्य दिवस मनाया गया।
इस मौके पर अखिल भारतीय यदुवंशी महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष विजेंद्र यादव ने बताया कि 18 नवंबर 1962 भारत-चीन रेजांगला युद्ध 114 वीर अहीर जवानों के शौर्य पराक्रम, शहादत व बलिदान के सम्मान में और भारतीय सेना में अहीर रेजिमेंट गठन के लिए आज हम यहां पर पहुंचे हुए हैं। हम आज यादव शौर्य दिवस मना रहे हैं। हमने आज अहीर रेजिमेंट गठन की मांग को लेकर देश के प्रधानमंत्री और रक्षा मंत्री को ज्ञापन भी सौपा है और मांग की है कि सेना में अहीर रेजिमेंट का गठन किया जाए।
इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में कैप्टन रामचंद्र यादव व हवलदार निहाल सिंह यादव (1962 युद्ध के हीरो) और विशेष अतिथि के रूप में नीरू यादव सरपंच, पूनम यादव, टी सी राव के अलावा मनीष यादव, सागर यादव, राजबहादुर यादव, प्रवीण यादव, पारस यादव, रास बिहारी मंडल, जीडी यादव, आरएस यादव, आरबी यादव, अभय यादव, उमाशंकर यादव, हेमंत, जितेंद्र यादव, विजय यादव, प्रमोद यादव, वासुदेव यादव, अर्जुन यादव, धर्मराज यादव, संजय यादव, राम अवध यादव, हरी लाल यादव, शिशुपाल यादव, रमेश यादव सहित हजारों की संख्या में लोग यहां पर मौजूद रहे।
इस मौके पर राष्ट्रीय अध्यक्ष विजेंद्र यादव ने कहा कि जब अन्य समाज की रेजीमेंट बनी हुई है तो सरकार को हमारी रेजीमेंट बनाने में क्यों परेशानी आ रही है। उन्होंने सरकार से मांग की है कि जल्द से जल्द सेना के अंदर अहीर रेजिमेंट का गठन किया जाए। नहीं तो यादव मिलकर एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन करेंगा।

संक्षिप्त खबरें

गांव बरवाला में दलितों के बंद रास्ते का सर्वे किया गया- जंगाला

गांव बरवाला के समीप से नेशनल हाईवे (वएफ2) बनने के कारण इस गांव के दलितों,पिछड़ों और कबीर पंथी जुलाहा जाति के लोगों का नेशनल हाईवे पर जाने तथा गांव से बाहर निकलने का रास्ता एक तरह से बंद हो गया. बरवाला पंचायत 360 के वरिष्ठ उप प्रधान राजेंद्र सिंह जंगाला के अनुसार लोगों को अपने व्हीकल नेशनल हाईवे और दिल्ली रोड पर ले जाने के लिए रॉन्ग साइड से अनेक किलोमीटर घूम कर ले जाने पड़ते हैं. इससे लोग अपने गंतव्य स्थल पर पहुंचने में लेट हो जाते हैं. बच्चे भी अक्षर विद्यालयों में लेट हो जाते हैं. कोई भी इमरजेंसी व्हीकल इन लोगों की बस्ती में आसानी से नहीं आ सकता. जब बरवाला पंचायत 360 ने मामले में उच्च स्तर पर आवाज उठाई तो आज दिल्ली पुलिस और दिल्ली ट्रैफिक पुलिस द्वारा दलितों,पिछड़ों और कबीर पंथी जुलाहा जाति के लोगों के रास्ते के लिए सर्वे किया गया.दिल्ली ट्रैफिक पुलिस और दिल्ली पुलिस तथा सीआईडी भी मानती है की इन लोगों के साथ वास्तव में गलत हो रहा है.

हाईवे समेत संपर्क मार्गों पर थम गई वाहनों की रफ्तार

अमरोहा। रविवार को भी जिले की फिजा में सुबह के समय आसमान में घने कोहरे की चादर छाई रही। घना कोहरा छाने से वाहन चालकों को परेशानी का सामना करना पड़ा। कोहरे के चलते दृश्यता प्रभावित रही। नेशनल हाईवे से लेकर स्टेट हाईवे पर वाहन दिन में लाइट जलाकर रेंग रेंग कर गुजरे। बस ट्रेन लेट होने से यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ा। रविवार को कोहरे के कारण हसनपुर अलीगढ़ मार्ग व नेशनल हाईवे, स्टेट हाइवे समेत सभी संपर्क मार्ग पर वाहनों की रफ्तार थमी रही। वाहन चालक कतार में लाइट जलाकर चल रहे थे। दृश्यता कम होने के चलते वाहन चालक परेशान रहे। हालांकि सुबह 8 बजे के बाद उन्हें राहत मिल सकी। कोहरा छटने के बाद ही वाहन चालकों को राहत मिली। उधर कोहरा छाने से मौसम में ठंडक घुल गई है। लोगों को ठिठुरन का अहसास हुआ। मौसम विभाग के अनुसार अभी कोहरा गिरने का पूवार्नुमान है।

हम सुखन बिजनौर कवि सम्मेलन एवं मुशायरे का हुआ आयोजन, शायरों ने बांधा समां

- हर एक बुराई का बदल लेके खड़े हैं।
- हम जुर्म की दुनिया में गजल लेके खड़े हैं।।

प्रात : किरण संवाददाता, नादिर त्यागी

बिजनौर/स्योहारा। साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम कराने वाली देश की जानी मानी संस्थाहम फेस्ट मुंबई के द्वारा मंगल लिपी फार्म हाऊस में हम सुखन बिजनौर कवि सम्मेलन एवं मुशायरे का आयोजन किया गया। मुशायरा वरिष्ठ समाज सेवी एवं चिकित्सक डा.मनोज वर्मा और इंजीनियर फरहतउल्लाह खान की सरपरस्ती तथा शायर एवं साहित्यिकार नजर बिजनौर की अगुवाई में श्रोताओं की वाह वाही लूटता और उन्हें गुदगुदाता खत्म हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता पंजाब पुलिस के ए.डी.जी.पी. शायर एवं लड़खक फैयाज फारुकी ने की तथा संचालन मशहूर शायरा शबनम अली ने किया।कार्यक्रम का आगाज शनिवार रात 9 बजे सरजमी बिजनौर की खसुसियात बयान करने के साथ ही साथ शमा रोशन कर किया गया। शमा रोशन करने वालो में मुख्य रूप से डा.मनोज वर्मा, डॉ अनुराग अग्रवाल हार्दिक खत्री (चार्टर्ड अकाउंटेंट मुंबई), डा.मनोज सक्सेना, डॉ राखी अग्रवाल, डॉक्टर प्रदीप वार्ष्णेय, मोहित कुमार (डाइकिन), बदरुल हसन,अतीक कुरैशी रहे। पंजाब पुलिस में ए.डी. जी.पी.फैयाज फारुकी ने अपना कलाम पढ़ा की हर एक बुराई का बदल लेकर खड़े हैंह्व ह्लहम जुर्म की दुनिया में गजल लेके खड़े हैं। दूसरा शेर पढ़ा कि शहर में कुछ तो है इस बात पे दुश्मन मेरे उसकी दीवार मिली है मेरी दीवार के साथ। शायर नजर बिजनौरी ने पढ़ा कि ना लंदन ना अफगान ना लाहौर से है, देश का नाम जो भारत है वह बिजनौर से है। अंतरराष्ट्रीय शायर ए.एम. तुराज ने पढ़ा ये महकदे का निजाम बदलों शराबे मस्ती हराम कर दो। मशहूर शायर अफजल मंगलोरी ने पढ़ा कि इजाजत हो तो लिख दू होठों से फकत एक गजल तेरे बदन पर। शबनम अली ने पढ़ा कि हिजर के सदमे रोज उठाना अच्छा नहीं, हर पल सांसों पर जुमार्ना अच्छा नहीं।

शायर खुर्रम शहजाद नूर ने पढ़ा अब खबर देता नही पहला सफा अखबार का, इस विचारे को भी चस्का लग गया व्यापार का। मुमताज नसीम ने पढ़ा आज इकरार कर लिया हमनें, खुद को बिमार कर लिया हमने, हमें तो लगता है जान जाएगी, तुमसे जो प्यार कर लिया हमने।आदिल रशीद ने पढ़ा तुम्हें मनाने में ये भी सितम उठाना था, वहाँ वहाँ भी गये जहाँ न जाना था।। कवि राहुल शर्मा ने सुनाया , मैं ऐसी गांठ हूं जो धीरे-धीरे-धीरे- खुलती है, तुम्हारी उंगलियों को सब्र करना ही नहीं आता। कवि अश्मनी विश्नोई ने सुनाया की मंत्री भी ऐसे दिये सरकार गिरा दी, इकले ही शौनाथ ने सत्ता हिला दी। हिलाल स्योहारवी, दीपक गुप्ता,ने भी बेहतरीन कलाम सुनाते हुए हास्य व्यंग्य के साथ व्यवस्था पर कटाक्ष किया। इस मौके पर चेयरमैन फैसल वारसी ने डॉ मनोज कुमार वर्मा की सुपुत्री डॉक्टर आयुषी वर्मा को एमबीबीएस कोर्स में टॉप करने और गोल्ड मेडल जीतकर जनपद बिजनौर का नाम रोशन करने के लिए सम्मानित किया। कार्यक्रम में राजीव कुमार वर्मा सनत उल्ला खान, रफतउल्लाह खान, कुशलपाल सिंह, पूनम चौधरी, पूर्व ब्लाक प्रमुख रश्मि वर्मा, सुनील कुमार रजौरा, पिंकी देवी, डा.आसिफ अंसारी, आफताब आलम सहसपुर, असलम अहमद पूर्व प्रधान, मौ.आजम , चाँद चौधरी, नुसरतुल्लाह एडवोकेट, मास्टर खुर्शीद अहमद सभासद,बिट्टू रस्तौगी, निशांत रस्तौगी, चौधरी गजेंद्र सिंह टिकैत, मनोज छाबड़ा, राजीव गहलौत, समीर रस्तौगी,हैरी गुर्जर आदि सहित सैकड़ो श्रोता मौजूद रहे।

> स्योहारा अंतरराष्ट्रीय साहित्यकारों, कवियों और शायरों की सरजमी रही है मेरे पिता स्वर्गीय डॉक्टर निपेंद्र कुमार वर्मा जी भी एक अच्छे साहित्यकार थे। हमारा कार्यक्रम कराने का मकसद था कि इस मिटती सांस्कृतिक और अदबी पहचान को बरकरार रखा जाएः-डॉक्टर मनोज वर्मा(वरिष्ठ समाजसेवी एवं चिकित्सक)

नया मंत्री नहीं बनाएंगी आतिशी, खुद संभालेंगी गहलोत वाले सारे विभाग

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के नेता और दिल्ली के मंत्री कैलाश गहलोत ने इस्तीफा दे दिया है। उनके पास परिवहन विभाग समेत कई विभागों की जिम्मेदारी थी। अब जानकारी सामने आई है कि सीएम आतिशी ही इन विभागों की कमान संभालेंगी। इसके लिए उन्होंने दिल्ली के एलजी को प्रस्ताव भेज दिया है। दिल्ली की नजफगढ़ सीट से विधानसभा पहुंचने वाले कैलाश गहलोत के पास दिल्ली सरकार के कई विभागों की जिम्मेदारियां थीं।

कैलाश गहलोत के पास कौन से विभाग थे कैलाश गहलोत के पास परिवहन मंत्रालय से लेकर गृह मंत्रालय तक की जिम्मेदारी थी। इसके अलावा उनके पास प्रशासनिक सुधार, महिला और बाल विकास, सूचना प्रोद्योगिकी और प्रशासनिक सुधार जैसे बड़े विभाग थे। अब इन विभागों की जिम्मेदारी सीएम आतिशी संभालेंगीं। पहले भी आतिशी पर दिखाया गया था भरोसा दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी के पास इस समय करीब 13 विभागों की कमान है। इसके अलावा अब उनके पास और भी जिम्मेदारियां आ जाएंगीं। आपको बता दें कि उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया के जेल में जाने के दौरान भी पार्टी ने आतिशी पर भरोसा जताया था। उस समय भी मनीष सिसोदिया के विभाग आतिशी के पास पहुंचे थे। इसमें शिक्षा मंत्रालय की चर्चा काफी हुई थी।

जूता बनाने वाली फैक्टरी में लगी आग, 7 घंटे बाद काबू

नई दिल्ली। दिल्ली के घेरवा मोड़ में शनिवार देर रात एक जूते बनाने की फैक्टरी में अचानक आग लग गई। खबर मिलते ही स्थनीय पुलिस व दमकल विभाग की 30 गाड़ियों को मौके पर भेजा गया। दमकलकर्मियों ने सात घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। घटना में किसी के हताहत होने की कोई सूचना नहीं है। आग बुझाने के दौरान दो से तीन दमकलकर्मी मामूली रूप से झुलस गए। आग लगने के कारणों का पता नहीं चल पाया है। पुलिस का कहना है कि कूलिंग ऑपरेशन पूरा होने के बाद मामले की जांच की जाएगी। दमकल विभाग के अनुसार रात 2.30 बजे दमकल विभाग को सूचना मिली कि घेरवा मोड़ स्थित एक फैक्टरी में आग लग गई है। मामले की सूचना मिलते ही अलग-अलग दमकल स्टेशन से 30 गाड़ियों को मौके पर भेजा गया। दमकल के अनुसार फैक्टरी पांच हजार गज में बनी हुई है। प्लास्टिक रबड़ होने के कारण आग तेजी से फैली। राहत की बात है कि घटना में कोई हताहत नहीं हुआ। पुलिस आग लगने के कारणों की जांच कर रही है।

मेट्रो रिक्शा चालक मनीष ने पेश की इमानदारी की मिसाल, लाखो के जेवर लौटाए

प्रात : किरण संवाददाता

स्योहारा। दुनिया के अंदर आज भी ईमानदारी जिंदा है ईमानदारी के लिए अमीर या गरीब होना जरूरी नहीं बस उसकी सोच सही हो। ऐसी ही ईमानदारी की एक मिसाल मेट्रो रिक्शा चालक मनीष कुमार ने कायम कर दी।

प्राप्त जानकारी के अनुसार वसीम अहमद पुत्र महबूब अहमद निवासी मौहल्ला इस्लामनगर सफेद मस्जिद पास की आज (कल) जीवन साथी बेंकुट हॉल में बारात गई थी शाम के समय लगभग शाम 5:30 बजे बारात वापस अपने घर के लिये रुखसत हुई तो लड़के के पिता महबूब अहमद ने कुछ सामान मेट्रो रिक्शा में नीचे रख दिया और दो बैग मेट्रो की छत के ऊपर पर रख दिये। एक बेग मे बहु के शादी के जोड़े तथा दूसरे बेग में लगभग 7 लाख 70 हजार के जेवर थे । घर पहुंचने पर नीचे रखा समान उतार लिया गया। जल्दी बाजी में ऊपर का समान उतारना भूल गए। मेट्रो वाले के जाने के कुछ समय बाद घर वालो को ध्यान आया कि हमारे बेग तो मेट्रो रिक्शा पर ही रह गये। उसके बाद पूरे घर वे मोहल्ले मे खलबली मच गई लाख कोशिश करने के बाद भी मेट्रो वाले का कुछ पता नहीं लग पाया। और घर वाले सदमे में थक हार कर बैठ गए । लगभग 2 घंटे के बाद मेट्रो चालक मनीष कश्यप पुत्र महेंद्र सिंह निवासी ग्राम नवादा केशो सामान(बेग) लेकर खुद आ गया पता करने पर मनीष ने बताया कि मैं तो अपने ग्राम नवादा केशो अपने घर चला गया था पर जब मेने मेट्रो की छत पर नजर डाली तो मुझे ख्याल आया कि वे लोग अपना समान उतारना भूल गये। मैं फौरन इनका सामान इनके घर वापस देना आया आ गया। मनीष की इस ईमानदारी पर पूरे मोहल्ले वालों ने उसे गले से लगा लिया। मनीष ने ईमानदारी की जिंदा मिसाल कायम कर दी। पूरे मोहल्ले वालो, बुजुर्गों तथा युवाओं ने मनीष को दुआओं से नवाजा। बुंदू चाचा महबूब, अहमद नदीम अहमद, दानिश चौधरी,सलीम मौसा, अनस चौधरी ,शहबाज चौधरी, साजिद मिसतरी,आरिफ, गयासुद्दीन,शमीम ,मुकिद, सादिक चौधरी ,आदिल,मंसूर भाई, शहाबुद्दीन, इमरान आदि ने उसकी बहुत प्रंशसा की।

आप में फूटने लगा है असंतोष व आक्रोश का लावा : खंडेलवाल

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने आम आदमी पार्टी (आप) पर निशाना साधते हुए कहा है कि यहां की बुनियादी समस्याओं को हल कर पाने में प्रदेश सरकार पूरी तरह से विफल रही है और इसी वजह से आप में असंतोष तथा आक्रोश का लावा फूटने लगा है। श्री खंडेलवाल ने रविवार को प्रदेश सरकार के मंत्री कैलाश गहलोत के आप से और मंत्रिमंडल से इस्तीफे देने पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि श्री अरविंद केजरीवाल और आप का ईमानदारी और नैतिकता के ढोंग की सच्चाई उजागर हो गई है। उन्होंने कहा,ह्लश्री कैलाश गहलोत का इस्तीफा स्पष्ट रूप से दशार्ता है कि आम आदमी पार्टी के भीतर असंतोष और आक्रोश का लावा है, क्योंकि दिल्ली की बुनियादी समस्याओं को हल करने में दिल्ली सरकार पूरी तरफ विफल साबित हुई है और दिल्ली के लोगों को नारकीय जीवन जीने को मजबूर कर दिया है, जिसकी ज़िम्मेदारी से श्री केजरीवाल और आप सरकार बच नहीं सकती है ह्व उन्होंने श्री केजरीवाल पर झूठे वादे करने और दिल्ली के विकास के लिए अपनी प्रतिबद्धताओं को पूरा करने में विफल रहने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा,ह्लश्री अरविंद केजरीवाल खोखले वादों से जनता को गुमराह करते रहते हैं और दिल्ली की प्रगति के लिए कुछ नहीं किया है ह्व उन्होंने कहा कि श्री गहलोत ने पार्टी की विफलताओं को स्वीकार करने की शालीनता दिखाई है। उनका इस्तीफा एक ऐसा साहस और जवाबदेही का संकेत है, जो आप के नेतृत्व में पूरी तरह से गायब है। दिल्ली की चांदनी चौक सीट से भाजपा सांसद ने कहा कि श्री गहलोत का इस्तीफा आम आदमी पार्टी की गिरती साख का मजबूत संदेश है और यह बताता है कि आप आंतरिक भ्रष्टाचार और कुप्रबंधन से ग्रस्त है। उन्होंने ने दिल्ली के नागरिकों से पारदर्शी और प्रभावी नेतृत्व की आवश्यकता को पहचानने का आग्रह किया तथा यहां और देश की वास्तविक प्रगति के लिए अपनी प्रतिबद्धता दोहरायी।

कंपनी के गोदाम की तिजोरी से 17 लाख रुपये गायब

नोएडा। सेक्टर-63 स्थित ई-कॉमर्स कंपनी के वेयरहाउस (गोदाम) की तिजोरी से 17 लाख रुपये गायब हो गए। चोरी का आरोप कंपनी के दो कैशियर पर लगा है। पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। फिल्पकार्ट वेयरहाउस कंपनी के हब मैनेजर अजय पडियार ने पुलिस को बताया कि शुक्रवार को कंपनी के कैश रूम में रखे 1701644 रुपये गायब हो गए। कंपनी में काम करने वाले दो कैशियर अजय कुमार और अमरीश कुमार तिजोरी को बंद करते हैं। इन्हीं दोनों के पास शिफ्ट के हिसाब से तिजोरी की चाबी रहती है। रात में अजय ने कैश तिजोरी के अंदर रखा और इसका वीडियो भी बनाया। इसके बाद वह कंपनी से बाहर चला गया। अमरीश ने शिफ्ट पर आने के बाद सुबह आठ बजे सूचना दी कि तिजोरी से नकदी गायब है। शिकायतकर्ता खुद कंपनी पहुंचा और वहां काम करने वाले सभी कर्मचारियों से बात की। इसके बाद घटना की जानकारी डॉयल-112 पर दी गई। पुलिस ने दोनों कैशियर के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। दोनों से पूछताछ करने के बाद पुलिस आगे की कार्रवाई करने की बात कह रही है।

भाजपा को लगा तीसरा बड़ा झटका, दिल्ली में रह रहे पूर्वांचल समाज के बड़े नेता पूर्व विधायक अनिल झा आम आदमी पार्टी में शामिल

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले भाजपा को तगड़ा झटका लगना जारी है। रविवार को दिल्ली की किराड़ी विधानसभा सीट से दो बार विधायक रह चुके और दिल्ली में रह रहे पूर्वांचल समाज के सबसे बड़े नेताओं में शामिल अनिल झा आम आदमी पार्टी में शामिल हो गए। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने रविवार को पार्टी मुख्यालय पर उन्हें टोपी और पटका पहनाकर पार्टी की सदस्यता दिलाई। इस दौरान अरविंद केजरीवाल ने कहा कि अनिल झा दिल्ली में रह रहे पूर्वांचल समाज के सबसे बड़े नेताओं में एक हैं। अनिल झा ने पूर्वांचल समाज के लिए बहुत काम है। उनके आने से पूरी दिल्ली में आम आदमी पार्टी को मजबूती मिलेगी। इससे पहले, दक्षिणी दिल्ली से भाजपा के बड़े नेता और तीन बार के विधायक ब्रह्म सिंह तंवर और लक्ष्मी नगर से भाजपा के दो बार के पार्षद, स्टैंडिंग कमिटी के अध्यक्ष और नेता सदन रह चुके बीबी त्यागी अपने समर्थकों के साथ भाजपा छोड़कर आम आदमी पार्टी में शामिल हो चुके हैं। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि मैं अनिल झा का आम आदमी पार्टी में तहेदिल से स्वागत करता हूं। अगर दिल्ली में पूर्वांचल का जिक्र किया जाए तो उनमें जितने सबसे बड़े नेता हैं, उनमें दिल्ली के अंदर एक अनिल झा माने जाते हैं। जिन्होंने पूर्वांचल समाज के लिए बहुत काम किया। चाहे वो सत्ता में रहे या सत्ता के बाहर रहे, उन्होंने हर वक्त पूर्वांचल समाज के लिए काम किया। अनिल झा के आने से केवल किराड़ी ही नहीं बल्कि पूरी दिल्ली में आम आदमी पार्टी को मजबूती मिलेगी। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली में 1750 कच्ची कॉलोनियां हैं। मुझे यह कहते हुए बेहद खुशी है कि हमने अब लगभग साढ़े सोलह सौ कॉलोनियों में पीने का पानी पहुंचा दिया है। सौ के करीब कच्ची कॉलोनियां ऐसी हैं, जिनके अंदर फॉरेस्ट और एएसआई की वजह से काम नहीं हो सकता है। मैंने पिछले दस साल में कच्ची कॉलोनियों के अंदर दस हजार किलोमीटर की सड़कें और गलियां बनवाई हैं। हमारी सरकार बनने के पहले जिन कच्ची कॉलोनियों में दो-तीन हजार रुपए गज का रेट होता था। आज वहां एक लाख रुपए गज का रेट है। जब मैं 2013 में चुनावी अभियान के लिए वहां जाता था तो लोग कहते थे कि रिश्ते नहीं आते। कोई लड़की देखने आता है तो उसे कीचड़ से होकर हमारे घर के अंदर आना पड़ता है। यह माहौल देखकर हमारे बच्चों की शादी नहीं होती। अब लोगों के अच्छे रिश्ते आने शुरू हो गए। सबसे बड़ी बात यह है कि हमने पूर्वांचल के समाज को दिल्ली के अंदर सम्मान की जिंदगी दी है। उस समाज से उनके दिल्ली के सबसे बड़े नेता आज हमें जॉइन कर रहे हैं, इस बात की मुझे बहुत खुशी है। वहीं, इस दौरान अनिल झा ने कहा कि मेरा यह सौभाग्य है। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक, समतामूलक समाज के जनक, लोकतंत्र के प्रहरी अरविंद केजरीवाल ने पूर्वांचल के लोगों के लिए, दलितों-महादलितों और पिछड़ों के लिए जो दिल्ली के अंदर सामाजिक न्याय का ताना बाना बुना है, मैं उनका हाथ जोड़कर कोटि-कोटि नमन करता हूं। मैं मधुबनी से दिल्ली पढ़ने के लिए आया था। मेरी आंखों में सपने थे कि पूर्वांचल के सामाजिक न्याय के लिए मुझे कहीं पर सहारा मिले। मैंने एक दल में काम किया। मुझे लगता था कि वहां पर सामाजिक न्याय, आंतरिक लोकतंत्र और पूर्वांचल के लिए स्थान होगा। खैर, देर आए, दुरुस्त आए।

अनिल झा ने कहा कि मैं अरविंद केजरीवाल और उनकी पार्टी का आभार व्यक्त करता हूं कि आपने दिल्ली की 1700 से अधिक सोलह अनऑथराइज्ड कॉलोनियों में पूर्वांचल, दलित और पिछड़े लोग रहते हैं, उनके लिए जो काम किए हैं। मैं बेटियों के चेहरे की मुस्कुराहट को देखता हूं, जब वो सरकारी स्कूलों में अच्छी-अच्छी यूनिफॉर्म पहनकर जाती हैं। उनको वहां पर साफ-सुथरा भोजन मिलता है। वहां पर माता-पिता की मीटिंग होती है। मोहल्ला क्लीनिक में उनका बेहतर इलाज होता है। यही सामाजिक न्याय है। हमने देखा कि अगर कोई सामाजिक न्याय के नारे को पुख्ता कर रहा है तो वो अरविंद केजरीवाल हैं। मैं 32 साल एक पार्टी में रहा हूं

विस चुनाव से पहले गहलोत के इस्तीफे ने दिया आप को बड़ा झटका

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले परिवहन मंत्री कैलाश गहलोत का मंत्रिमंडल एवं आम आदमी पार्टी (आप) की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा देने से पार्टी को बड़ा झटका लगा है। श्री गहलोत ने आज इस संबंध में पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक एवं दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को एक चिट्ठी भी लिखी है। उन्होंने पत्र में इस्तीफा देने की वजह लोगों से किए गए वादों को पूरा नहीं करना बताया है। उन्होंने पत्र में लिखा है, शीशमहल जैसे कई शर्मनाक और अजीबोगरीब विवाद हैं जो अब सभी को संदेह में डाल रहे हैं कि क्या हम अभी भी आम आदमी होने में विश्वास करते हैं। अगर दिल्ली सरकार अपना अधिकांश समय केंद्र से लड़ने में बिताती है तो दिल्ली के लिए वास्तविक प्रगति नहीं हो सकती। मेरे पास ह्यआपह्व से अलग होने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा है और इसलिए मैं पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे रहा हूं ह्व गौरतलब है कि पिछले कुछ महीने में दिल्ली सरकार के दो मंत्री और दो विधायक पार्टी छोड़ चुके हैं। इसके साथ ही श्री गहलोत ने मंत्री पद छोड़ने के लिए दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी और श्री केजरीवाल को यमुना की सफाई और नए बंगले के विवाद को लेकर पत्र में अपनी बात रखी। मुख्यमंत्री ने बिना विलंब श्री गहलोत के मंत्रिमंडल से इस्तीफे को स्वीकार कर लिया है। उल्लेखनीय है कि दिल्ली में विधानसभा चुनाव फरवरी 2025 में प्रस्तावित है। इससे पहले श्री गहलोत के एकाएक पार्टी छोड़ने से कई सवाल उठ रहे हैं। उनके भारतीय जनता पार्टी में जाने की अटकलें भी तेज हो गई हैं। फिलहाल इस संबंध में कोई आधिकारिक बयान सामने नहीं आया है।

पूर्वांचली नेता अनिल झा भाजपा छोड़ आप में शामिल

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

किराड़ी विधानसभा क्षेत्र से भाजपा के दो बार विधायक रहे अनिल झा रविवार को आम आदमी पार्टी में शामिल हो गए। 32 वर्षों तक भाजपा में रहे अनिल झा ने कहा कि वहां पूर्वांचल के नेताओं एवं समाज की उपेक्षा हो रही है। वहीं, अरविंद केजरीवाल ने कच्ची कॉलोनियों में रहने वाले पूर्वांचली, दलित, महादलितों के लिए बीते 10 वर्षों में खूब विकास कार्य किए हैं। अरविंद केजरीवाल द्वारा किए गए कार्यों से प्रभावित होकर उन्होंने आप पार्टी का दामन थामा है। आप मुख्यालय में अरविंद केजरीवाल ने पटका एवं टोपी पहनाकर अनिल झा का पार्टी में स्वागत किया। इस अवसर पर अरविंद केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली में पूर्वांचल का जिक्र किया जाए तो बड़े नेताओं में अनिल झा का नाम शामिल है। उन्होंने विधायक एवं कार्यकर्ता रहते हुए पूर्वांचलियों के हित को ध्यान में रखते हुए काम किया है। केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली में शिक्षा एवं रोजगार के लिए पूर्वांचल से लोग आते हैं। दिल्ली की कच्ची कॉलोनियों में सबसे ज्यादा पूर्वांचल समाज के लोग रहते हैं। इनके साथ कांग्रेस और भाजपा ने केवल राजनीति की है। इनके लिए केवल आप ने बीते दस वर्षों में काम किया है। उन्होंने कहा कि अनिल झा के पार्टी में शामिल होने से न केवल किराड़ी इलाके में बल्कि दिल्ली के पूर्वांचल बहुल क्षेत्रों में पार्टी को मजबूती मिलेगी।

अनिल झा ने कहा कि वह बिहार के मधुबनी से दिल्ली पढ़ने के लिए आए थे। उन्हें लगता था कि पूर्वांचल के लोगों को भाजपा से मदद मिलेगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। अरविंद केजरीवाल की वजह से आज कच्ची कॉलोनियों में अच्छे सरकारी स्कूल बने हैं। मोहल्ला क्लीनिक में मुफ्त उपचार मिल रहा है। अन्य पार्टियों में बड़ी-बड़ी बातें की जाती हैं, लेकिन सामाजिक न्याय पर कोई ध्यान नहीं दे रहा।

अरविंद केजरीवाल ने कहा कि वर्ष 2015 से पहले जब कच्ची कॉलोनी में जाते थे तो वहां लोगों को पीने का पानी नहीं मिलता था। स्वास्थ्य सेवाएं एवं स्कूल नहीं थे। मुख्यमंत्री बनने के बाद अधिकारियों ने उन्हें बताया कि इन क्षेत्रों में विकास नहीं हो सकता, लेकिन सभी बाधाओं को तोड़कर उनकी सरकार ने इन क्षेत्रों में विकास कार्य करवाए। अभी तक 1750 कच्ची कॉलोनियों में से 1650 में पीने का पानी पहुंचा दिया गया है। 10 हजार किलोमीटर सड़क इन क्षेत्रों में वह बनवा चुके हैं। केजरीवाल ने कहा कि वर्ष 2019 में दिल्ली विधानसभा चुनाव से पूर्व केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह और शहरी विकास मंत्री हरदीप पुरी ने ऐलान किया था कि कच्ची कॉलोनियों के लिए रजिस्ट्री खोली जा रही है। इस बात को पांच साल बीत गए हैं, लेकिन आज तक किसी भी परिवार की एक रजिस्ट्री नहीं हुई है। भाजपा ने कच्ची कॉलोनियों के लोगों को धोखा दिया है।

पिछले 25 वर्षों से पद्म श्री डॉ. संजय एवं उनकी टीम के द्वारा सड़क सुरक्षा अभियान

पद्म श्री डॉ. संजय एवं उनकी टीम के द्वारा पिछले 25 वर्षों से सड़क सुरक्षा अभियान

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

17 नवंबर 2024, देहरादून ! संजय ऑर्थोपीडिक, स्पाइन एवं मैटरनिटी सेंटर और सेवा सोसायटी के तत्वाधान में दून विहार, जाखन, राजपुर रोड, देहरादून में हर साल की तरह इस साल भी सड़क दुर्घटना पीड़ितों के लिए विश्व स्मरण दिवस 2024 का आयोजन किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य सड़क यातायात दुर्घटनाओं पर मारे गए एवं गंभीर रूप से घायल हुए सभी लोगों को याद करना, पीड़ितों और उनके परिवारों को मंच प्रदान करना है। पद्म श्री डॉ. संजय तथा उनकी टीम पिछले लगभग 25 सालों से सड़क सुरक्षा के प्रति एक अभियान चला रखा है। वह समय-समय पर प्रदेश एवं देश के शिक्षण एवं सामजिक संस्थाओं के माध्यम से लोगों को सड़क दुर्घटनाओं से होने वाले वाले दुष्परिणामों के प्रति जागरूकता फैलाते रहते हैं। इसी के अंतर्गत माचूर्ला में हुई बस दुर्घटना और देहरादून में हुई कार दुर्घटना के मृतकों के लिए श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया।

वरिष्ठ ऑर्थोपीडिक सर्जन पद्म श्री डॉ. संजय ने बताया कि हर साल अपने देश में लगभग पाँच लाख दुर्घटनाएं होती हैं, जिसमें लगभग डेढ़ लाख लोगों की मौत होती है और लगभग इतने ही लोग अच्छे इलाज के बावजूद स्थाई या अस्थाई रूप से विकलांग हो जाते हैं और सड़क दुर्घटनाओं का दंश जीवन भर झेलते रहते हैं। यदि दुर्घटनाओं के कारण का आंकलन करें तो ओवरलोडिंग, ओवरस्पीडिंग, ओवरटेकिंग सड़क दुर्घटनाओं के मुख्य कारण हैं। इसके अतिरिक्त नींद का अभाव, नशे का प्रभाव, थकान का दबाव एवं वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग करना आग में घी का काम करते हैं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व जस्टिस हाई कोर्ट श्री राजेश टंडन ने कहा कि स्वयं को कानून के समर्थन के रूप में नियमों का पालन करें और रैश ड्राइविंग करने से बचें। उन्होंने कहा कि सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिए मेडिटेसन एक कारगर उपाय होगा जिसके लिए डॉ. संजय को मेडिटेसन के कार्यक्रम को चलाने का सुझाव दिया। प्रो. विशाल सागर ने कहा कि सोशल मीडिया एक ध्यान भटकाने का काम कर रहा है जिसने समाज की परिभाषा ही बदल दी है। सभी लोग समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझें और अपनी ऊर्जा को एक सार्थक दिशा में लगाऐं। आईएएस श्री प्रमोद कुमार, एसपी सिटी, देहरादून ने कहा कि यह केवल पुलिस की जिम्मेदारी नहीं है बल्कि हम सब की जिम्मेदारी है कि हम सब मिलकर दुर्घटनाओं को कम करें। उन्होंने सभी से आग्रह है कि आप सभी नशे से दूर रहें और सड़क यातायात नियमों का पालन करें। डॉ. अश्विनी कांबोज ने कहा कि आज के युवाओं में ओवर स्पीडिंग करने की प्रतिस्पर्धा बढ़ गई है जिसको समय रहते रोक लगाने की आवश्यकता है। ऑर्थोपीडिक सर्जन डॉ. प्रवीण मित्तल ने कहा कि क्योंकि हमारा देहरादून शैक्षणिक संस्थानों से भरपूर है और यहां पर काफी मात्रा में युवा लोग रहते हैं। आप शराब पीकर वाहन न चलाऐं और इस तरह की आदतों को बचपन में ही सिखाया जाना चाहिए। स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ डॉ. सुजाता संजय ने कहा कि अभिभावकों के लिए यह बहुत ही दुःखद बात है। हमें ऐसी दुर्घटनाऐं समय-समय पर देखने को मिलती है परंतु हम इनसे कुछ सीखते नहीं है जो कि बड़े दुर्भाग्य की बात है।

ऑर्थोपीडिक सर्जन डॉ. एस. एन. सिंह ने कहा कि वाहनों में चाहे कितना भी सुधार हो जब तक हम स्वयं में सुधार नहीं ला सकते तब तक हम इस तरह की दुर्घटनाओं में कमी नहीं ला सकते हैं। सभी को पुलिस का, अभिभावकों का और समाज का भय होना चाहिए। देन विहार कॉलोनी की अध्यक्षा श्रीमती जैन ने कहा कि यह एक ऐसी भयानक पीड़ा है जिसे कोई भी व्यक्ति जीवन भर नहीं भूल सकता। आज के युवा जोश में एक क्षण की प्रतिस्पर्धा में पूरी जिंदगी खत्म कर देते हैं। पत्रकार श्री प्रकाश सिंह ने कहा कि अभिभावकों को बच्चों को मार्गदर्शन करें। श्री ललित शर्मा ने कहा कि नींद सड़क दुर्घटनाओं के सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। सभी को 7 से 8 घंटे की पर्याप्त नींद अवश्य लेना चाहिए। ऑर्थोपीडिक सर्जन डॉ. गौरव संजय ने कहा की दुर्घटनाएं क्षण भर में होती है इसीलिए हम सबको इस तरह की घातक दुर्घटनाओं से बचने के लिए या तैयार नियमों का पालन करना चाहिए। डॉ गौरव संजय ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथि गणों, पत्रकारों, छात्र-छात्राओं एवं कार्यक्रम में उपस्थित सभी महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का आयोजन श्री योगेश अग्रवाल के द्वारा किया गया। उत्तरांचल आयुर्वेदिक मेडिकल छात्रों के अतिरिक्त पार्षद् संजय नौटियाल, श्री पारितोष किमोथी, श्री डी. बी. सिंह, सपना इत्यादि कार्यक्रम में मौजूद रहे।

रेजांगला शहीदों को श्रद्धांजलि, वीरता और गौरव का किया स्मरण

- अखिल भारतवर्षीय यादव महासभा के पदाधिकारियों व प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने नमन किया

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

नई दिल्ली। अखिल भारतवर्षीय यादव महासभा ने रविवार को जंतर मंतर पर 1962 के भारत-चीन युद्ध के वीर शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए रेजांगला शहीद दिवस मनाया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में दिल्ली-एनसीआर के गणमान्य व्यक्तियों, पूर्व सैन्य अधिकारियों और समाजसेवियों ने शहीदों की वीरता और बलिदान को याद करते हुए उन्हें नमन किया। सभा में उपस्थित प्रमुख अतिथियों ने भारतीय सेना की गौरवशाली परंपरा और यादव समाज के योगदान को विशेष रूप से रेखांकित किया। इसके अलावा राष्ट्रीय सुरक्षा, समाज में एकता और सहयोग की भावना को प्रबल बनाने पर बल दिया। उन्होंने युवाओं से आग्रह किया कि वे देश की सेवा के प्रति समर्पित रहें और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रयास करें।

श्रद्धांजलि सभा में प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा, लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) मनोज यादव, कैप्टन रामचंद्र, महासभा के कार्यकारी अध्यक्ष जगदीश यादव, महासचिव हेमंत यादव, दिल्ली के अध्यक्ष महेंद्र यादव व उपाध्यक्ष और दिल्ली पंचायत संघ प्रमुख थानसिंह यादव, नीरू यादव और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने रेजांगला में चीनी सैनिकों को खदेड़ने वाले सैनिकों की गौरवगाथा पर प्रकाश डाला। इस मौके पर वीरेंद्र सचदेवा ने 18 नवंबर 1962 की ऐतिहासिक लड़ाई पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि रेजांगला के मोर्चे पर कर्नल शैतान सिंह के नेतृत्व में 13 कुमाऊं रेजिमेंट की चार्ली कंपनी ने अद्वितीय शौर्य का प्रदर्शन किया। इस लड़ाई में 114 सैनिकों ने अपने प्राण न्योछावर कर लगभग 1,200 चीनी सैनिकों के मंसूबों को विफल कर दिया। यह वीरता भारतीय सैन्य इतिहास में अमर है। महासभा के कार्यकारी अध्यक्ष जगदीश यादव ने सभा को संबोधित करते हुए यादव समाज के बहुआयामी योगदान का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि यादव समाज ने कृषि, सामाजिक विकास, शिक्षा और सैन्य सेवा के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाई है। समाज की इस परंपरा को जारी रखते हुए युवाओं को देशभक्ति और राष्ट्रसेवा के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। वहीं दिल्ली उपाध्यक्ष थानसिंह यादव ने इस दिन को न केवल शहीदों के बलिदान का स्मरण करने का अवसर बताया, बल्कि इसे नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत भी करार दिया। उन्होंने कहा कि रेजांगला दिवस हमें सिखाता है कि हम अपने देश की रक्षा और विकास के लिए हर संभव प्रयास करना है।

सभा में महासचिव हेमंत यादव ने कहा कि यह आयोजन केवल श्रद्धांजलि तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज को वीरता, बलिदान और देशभक्ति के महत्व का संदेश देने का प्रयास है। सभा में मास्टर कृष्णपाल, अरूण यादव, मीना यादव, नितिन यादव, मनोज यादव आदि ने शहीदों को श्रद्धांजलि दी।

एशिया पैसिफिक बधिर गेम्स में दक्ष दमखम दिखाएंगे

नोएडा। एशिया पैसिफिक बधिर गेम्स की बैडमिंटन स्पर्धा में शहर के दक्ष राज भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व करेंगे। प्रतियोगिता एक से आठ दिसंबर तक मलेशिया में आयोजित होगी। दक्ष की यह पहला अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता होगी। दक्ष राज सेक्टर-104 स्थित सनराइज शटलर्स एकेडमी में डेढ़ साल से अधिक समय से खेल की बारीकियां सीख रहे हैं। एशिया पैसिफिक बधिर गेम्स की बैडमिंटन स्पर्धा में वह एकल, युगल, मिश्रित युगल और टीम स्पर्धा में भाग लेंगे। इससे पहले वह राज्यस्तरीय और राष्ट्रीय स्तरीय की बधिर बैडमिंटन प्रतियोगिताओं में शानदार प्रदर्शन कर चुके हैं। दक्ष राज मूलरूप से लखनऊ के हैं। वर्तमान में वह बधिर गेम्स के लिए लगाए गए अभ्यास शिविर में हैं। यह अभ्यास शिविर में चल रहा है। स्थानीय प्रशिक्षक कुसुम सिंह ने बताया कि दक्ष ने पिछले डेढ़ साल के दौरान कड़ी मेहनत की है। उनका खेल लगातार निखर रहा है। एशिया पैसिफिक बधिर गेम्स में उनसे पदक जीतने की पूरी उम्मीद है। रिद्धिमा राष्ट्रीय बैडमिंटन में यूपी का प्रतिनिधित्व करेंगी सेक्टर-29 की रिद्धिमा सिंह राष्ट्रीय अंडर-19 बैडमिंटन चैंपियनशिप में उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व करेंगी।

चांदनी चौक वेडिंग फेस्टिवल: ओमैक्स चौक पर 1.56 मिलियन विजिटर्स ने रचा इतिहास

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली। ओमैक्स चौक द्वारा आयोजित चांदनी चौक वेडिंग फेस्टिवल ने 1.56 मिलियन विजिटर्स के साथ एक नया रिकॉर्ड स्थापित किया। एक महीने तक चले इस भव्य आयोजन ने चांदनी चौक की शादी की परंपराओं को आधुनिक शैली के साथ पेश करते हुए हर वर्ग के लोगों को आकर्षित किया।

इस महोत्सव के दौरान भाग्यशाली विजेताओं को शानदार उपहार दिए गए। गुरुग्राम के विकास कुमार ने कैरेटलेन से खरीदारी कर टाटा नेक्सन कार जीती, जबकि चांदनी चौक की शिल्पा जायसवाल ने तनिष्क से शॉपिंग कर रॉयल एनफील्ड हंटर बाइक अपने नाम की। इसके अलावा, कई अन्य विजेताओं को टीवी, वॉशिंग मशीन, रेफ्रिजरेटर और माइक्रोवेव जैसे उपहार मिले।

शादी के मौसम के इस जश्न में पहली बार चांदनी चौक और ओमैक्स चौक के 75 से अधिक ब्रांड्स ने हिस्सा लिया। इनमें कल्याण, तनिष्क, मालाबार, और कैरेटलेन जैसे प्रतिष्ठित ज्वेलरी ब्रांड्स के अलावा तसवा, छाबड़ा 555 और ओढ़नी जैसे मशहूर डिजाइनर्स के वेडिंग कलेक्शन ने आयोजन को खास बनाया। शादी से जुड़ी हर जरूरत को एक ही छत के नीचे पूरा करने वाले इस महोत्सव ने ग्राहकों के अनुभव को यादगार बना दिया। ओमैक्स ग्रुप के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर जतिन गोयल ने कहा कि चांदनी चौक वेडिंग फेस्टिवल की सफलता चांदनी चौक की समृद्ध परंपरा और ओमैक्स चौक की आधुनिकता का प्रतीक है। यह आयोजन न केवल शादी की खरीदारी का नया बेंचमार्क स्थापित करता है, बल्कि परंपरा और शैली को एकसाथ जोड़ने का भी बेहतरीन उदाहरण है।

चांदनी चौक वेडिंग फेस्टिवल ने शादी की खरीदारी के लिए एक नया बेंचमार्क स्थापित किया है, जिससे चांदनी चौक एक ही छत के नीचे गुणवत्ता, परंपरा और स्टाइल के लिए एक बेजोड़ गंतव्य बन गया है।

तीन शादियों के बाद भी नहीं हुआ बच्चा, चोरी करने दिल्ली आई

नई दिल्ली। सफदरजंग अस्पताल से अपने पति के साथ मिलकर बच्चा चोरी करने वाली माही उर्फ सोफिया तीन शादी कर चुकी है, लेकिन उसे बच्चा नहीं हुआ। इसके बाद उसने बच्चा चोरी करने की साजिश रची थी। इसी के तहत वह अपने पति रोहित कुमार के साथ दिल्ली आई थी। दोनों ने अस्पताल से बच्चा चोरी किया और फिर वापस जाने लगे, लेकिन सफदरजंग एन्क्लेव थाना पुलिस ने पूरे मामले में सर्तकता दिखाई और दोनों को उत्तर प्रदेश में ट्रेन में सफर के दौरान ही गिरफ्तार कर बच्चे को परिजनों को सौंप दिया। अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त आकांक्षा यादव ने बताया कि 15 नवंबर को एक महिला ने पुलिस को अपने बच्चे के अपहरण की सूचना दी। सफदरजंग थाना पुलिस मौके पर पहुंची। महिला ने पुलिस को बताया कि वह अपने पति के उपचार के लिए मथुरा से यहां आई थी। शुक्रवार दोपहर करीब डेढ़ बजे एक महिला उनके पास आई और खुद को एनजीओ का कर्मचारी बताया। महिला ने बच्चे को नए कपड़े दिलाने के लिए अपनी गोद में ले लिया और उसके बाद पति रोहित के साथ ऑटो में बैठकर फरार हो गई। आनंद विहार रेलवे स्टेशन से मिला सुराग : पुलिस अधिकारी ने बताया कि बच्ची की तलाश करने के लिए अलग-अलग पुलिस टीमें गठित की गई। टीमों को बस स्टैंड और रेलवे स्टेशन पर भेजा गया। आनंद विहार रेलवे स्टेशन पहुंची पुलिस टीम को सुराग मिला और वहां की सीसीटीवी फुटेज से पता चला कि दोनों आरोपी सद्भावना एक्सप्रेस ट्रेन में बैठे हैं। पुलिस को पता चला कि ट्रेन बरेली रेलवे स्टेशन पहुंचने वाली है। पुलिस ने आरोपियों को ट्रैक करने के लिए तुरंत जीआरपी और आरपीएफ की सहायता ली। शाहजहांपुर रेलवे स्टेशन से जीआरपी, आरपीएफ और पुलिस से संपर्क किया और माही सिंह उर्फ सोफिया और रोहित कुमार को गिरफ्तार कर लिया।

साहित्यकार से मुलाकात कार्यक्रम

साहित्यकार से मुलाकात कार्यक्रम के अंतर्गत रविवार को दिल्ली विश्वविद्यालय के कला संकाय, उत्तरी परिसर में हिन्दी तथा मराठी के प्रतिष्ठित लेखक श्री शेखर पवार से बातचीत की गई। श्री शेखर पवार कवि, नाटककार, अनुवादक, कहानीकार, कला समीक्षा और यात्रा वृतांत आदि विधाओं में लेखन के माध्यम से अपनी पहचान बनाने वाले तथा प्रखर अम्बेडकरवादी लेखक हैं। इअंतर्राष्ट्रीय अम्बेडकरवादी लेखक संघ इ(दिल्ली विश्वविद्यालय शाखा) के महामंत्री प्रोफेसर हंसराज सुमन ने इवर्तमान समय के दलित साहित्य में क्या बदलाव आया है ?इ इस विषय पर श्री शेखर पवार से विस्तृत चर्चा की। साथ ही पिछले एक दशक में दलित साहित्यकारों द्वारा किस विधा पर ज्यादा साहित्य लिखा गया है, इस तरह के लेखन की वजह क्या थी? ऐसे प्रश्नों पर भी विचार-विमर्श किया। बातचीत के क्रम से पूर्व साहित्यकार श्री शेखर पवार का परिचय प्रोफेसर के.पी.सिंह ने दिया। उन्होंने श्री शेखर पवार के साहित्यिक यात्रा की विस्तृत चर्चा करते हुए, मराठी दलित समाज की विडंबना और भोगे हुए यथार्थ के लेखन की चर्चा की। चर्चा-परिचर्चा के दरमियान श्री शेखर पवार ने दलित साहित्य और सामाजिक बदलाव की संभावनाओं पर पूछे गए प्रश्नों का उचित उत्तर दिया।

प्रोफेसर हंसराज सुमन द्वारा पूछे गए प्रश्नों में श्री शेखर पवार ने कहा कि वर्तमान दलित साहित्य अम्बेडकरवादी वैचारिकी तथा अपने सामाजिक दायित्व से दूर हट गया है। आज का दलित साहित्यकार सुविधाभोगी है। वह सवर्ण साहित्यकारों की नकल करना लगा है। यहाँ तक कि उसके सभी लेखन में सवर्ण साहित्यकारों की छाप दिखाई देती है। दलित साहित्यकार दिशाहीन हो गया है, वह सवर्ण साहित्यकारों के साथ निरर्थक प्रतिस्पर्धा कर रहा है। जबकि सवर्ण साहित्यकार अपने समाज के प्रति समर्पित भाव से लेखन कर रहा है। वह दलित साहित्य की उपेक्षा भी कर रहा है और दलित साहित्य को साहित्य की कोटि से बाहर रखने की कोशिश भी कर रहा है। दलित साहित्यकारों की सबसे बड़ी कमी सामाजिकता का अभाव है। दलितों में जाति, क्षेत्र और भाषा का विभाजन बहुत अधिक है। जबकि सभी दलित समाज की समस्याएँ एक ही हैं। सुविधाभोगी दलित साहित्यकार तो घर से बाहर निकलता ही नहीं है, न ही वह अपने समाज से जुड़ने की कोशिश करता है। अखबार और टीवी न्यूज पर दलितों की खबर देखकर वह साहित्य लेखन करता है। ऐसा दलित साहित्यकार दोहरी मानसिकता में जीता है। एक तरफ वह दलित साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित होना चाहता है तो दूसरी तरफ वह सवर्ण समाज के बीच बैठकर दलितों से दूर रहना चाहता है। ऐसे दोहरे व्यक्तित्व वाले दलित साहित्यकारों के लेखन में दलित समाज का यथार्थ कभी भी नहीं वर्णित हो सकता है। लेखक श्री पवार ने बताया कि भारत में दलित साहित्य की शुरूआत मराठी दलित साहित्य से हुई है। अन्य भाषा-भाषी दलित साहित्य मराठी दलित साहित्य के प्रभाव में ही लिखे जा रहे हैं। मराठी दलित साहित्य पर बाबा साहेब के वैचारिकी का गहरा प्रभाव है। यही कारण है कि मराठी दलित साहित्य अम्बेडकरवाद के करीब है। मराठी दलित साहित्य की मुख्य विशेषता जमीनी सच्चाई है। वे दलित समाज के बीच जाकर उनकी समस्याओं का अवलोकन करते हैं। जातिगत उपेक्षा, अभाव की जिन्दगी, सवर्ण जातियों द्वारा दुर्व्यवहार यह सभी कुछ वे दलित परिवेश में जा कर देखते हैं फिर उन पर लेखन करते हैं। सवर्ण जातियों द्वारा दलितों के लिए जिन अपशब्दों और गालियों का प्रयोग किया जाता था वह आज भी हो रहा है। इसे दलित समाज में जाकर ही देखा जा सकता है। गांवों में दलितों के लिए अपशब्दों में बोले जाने वाले मुहावरे, कहावतें अभी भी प्रयोग होते हैं। हैरानी तो यह है कि दलितों में विरोध करने की हिम्मत नहीं है। दलित साहित्यकारों को इन सभी बुराईयों को लेखन में लाना चाहिए। जिससे कि दलित समाज में जागरूकता आए। दलित साहित्यकारों को क्षेत्रीय भाषाओं में लेखन पर विशेष ध्यान देना चाहिए क्योंकि दलित समाज अपनी भाषा में पठन-पाठन से विशेष प्रभावित होता है।

गहलोत का इस्तीफा भाजपा की गंदी राजनीति व षड्यंत्र का हिस्सा : आप

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी (आप) ने कहा है कि श्री कैलाश गहलोत का मंत्रिमंडल और पार्टी से इस्तीफा देना भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की गंदी राजनीति और षड्यंत्र का हिस्सा है। आप के राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने रविवार को कहा कि आज भाजपा एक बार फिर अपने हथकंडे, घिनौनी राजनीति और षड़यंत्र में कामयाब हुई है। श्री गहलोत के ऊपर लगातार भाजपा द्वारा दबाव बनाया जा रहा था। ईडी-सीबीआई के छापे मारे जा रहे थे। ईडी के दफ्तर में पूछताछ के लिए बुलाया जा रहा था। उनके घर पर आयकर के छापे मारे जा रहे थे। श्री गहलोत के ऊपर ईडी, आयकर समेत तमाम तरीके का दबाव था। श्री सिंह ने कहा कि वह ऐसी बात कर नहीं सकते हैं क्योंकि वह पांच साल तक खुद सरकार का हिस्सा रहे हैं। वह इस पार्टी का हिस्सा रहे हैं। यह सारी भाजपा की स्क्रिप्ट है। वह जिस तरह की पटकथा बनाकर देगी और जिस तरह का षड़यंत्र उन्होंने श्री गहलोत के खिलाफ किया है, उन्हें उसी तरह से बोलना पड़ेगा। आप की मुख्य प्रवक्ता प्रियंका कक्कड़ ने कहा कि चुनाव चल रहे हैं और भाजपा के गंदे षड़यंत्र शुरू हो चुके हैं। ईडी और सीबीआई सक्रिय हो चुकी है। श्री गहलोत के ऊपर ईडी-सीबीआई के कई मामले चल रहे थे। उनके परिवार पर भी चल रहे थे इसलिए उन्होंने जेल के संघर्ष से बेहतर भाजपा में शामिल होना समझा। वहीं, आप नेता दुर्गेश पाठक ने कहा पिछले कई महीने से श्री गहलोत को हर दिन ईडी के दफ्तर बुलाया जाता था। उनको ईडी और आईटी की रेड का सामना करना पड़ता था। उनके पास कोई और रास्ता नहीं था। उन्हें भाजपा में ही जाना था। इससे एक चीज साफ हो गई कि भाजपा दिल्ली का चुनाव हार चुकी है। आज उनके पास कोई मुद्दा नहीं बचा है। उनके पास बताने के लिए कोई चीज नहीं है। वह दिल्ली में ईडी-सीबीआई, इनकम टैक्स के माध्यम से चुनाव लड़ रही है और हम लोग दिल्ली के लोगों के काम करने वाली राजनीति के नाम पर वोट मांग रहे हैं।

दिल्ली पुलिस ने नीरज बवाना गिरोह के शूटर को गिरफ्तार किया

नई दिल्ली,। दिल्ली पुलिस ने नीरज बवाना गिरोह के एक शूटर को गिरफ्तार किया है। एक अधिकारी ने रविवार को यह जानकारी दी। पुलिस के अनुसार आरोपी हत्या, हत्या के प्रयास और लूट समेत 18 मामलों में शामिल रहा है तथा अदालती कार्यवाही से बचने के लिए उसे भगोड़ा अपराधी घोषित किया जा चुका है। अधिकारी ने कहा कि आरोपी रघू (35) को शनिवार को सोनीपत से पकड़ा गया। रघु 2014 में दिल्ली में हुए गैंगवार में शामिल था। पुलिस उपायुक्त (अपराध) सतीश कुमार ने बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर पुलिस की एक टीम ने उसे हरियाणा के सोनीपत से पकड़ लिया। पूछताछ के दौरान रघु ने पुलिस को बताया कि उसने 10वीं तक पढ़ाई की और फिर परिवार के साथ खेती करने लगा। अधिकारी ने बताया कि 2009 में उसने अपने पैतृक गांव हसनपुर में पुरानी रंजिश के चलते पहली बार हत्या की थी।

सड़क दुर्घटना में महिला की मौत और एक व्यक्ति घायल

नई दिल्ली। दक्षिणपश्चिम दिल्ली के उत्तम नगर इलाके में रविवार सुबह एक कार से टक्कर लगने से 64 वर्षीय एक महिला की मौत हो गई जबकि एक व्यक्ति घायल हो गया। यह जानकारी एक अधिकारी ने दी।

अधिकारी ने बताया कि पुलिस को घटना की जानकारी सुबह करीब छह बजे मिली थी। उन्होंने बताया कि घटनास्थल पर पहुंचने पर पुलिस को पता चला कि घायलों को निकटवर्ती अस्पतालों में ले जाया गया है। अधिकारी ने बताया, ह्यह्यगुप्ता एन्क्लेव की निवासी कमलेश को दीन दयाल उपाध्याय (डीडीयू) अस्पताल में भर्ती कराया गया था, जबकि घायल व्यक्ति को माता चन्नन देवी अस्पताल ले जाया गया था। घायल वृद्ध व्यक्ति की पहचान नहीं हो पायी है। एक प्रत्यक्षदर्शी के अनुसार, दोनों व्यक्ति उत्तम नगर टर्मिनल के पास सड़क पार कर रहे थे तभी लापरवाही से गाड़ी चला रहे एक वाहन चालक ने उन्हें अपनी कार से टक्कर मार दी। प्रत्यक्षदर्शी ने बताया कि जनकपुरी की ओर से आ रहा वाहन चालक दुर्घटना के तुरंत बाद मौके से फरार हो गया। अधिकारी ने बताया कि कमलेश ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया, जबकि अज्ञात व्यक्ति की हालत गंभीर है और अस्पताल में उसका उपचार किया जा रहा है। उन्होंने बताया, हमने सीसीटीवी फुटेज की जांच की जिससे दुर्घटना में शामिल वाहन की पहचान हो गई हैं और पुलिस संबंधित धाराओं के तहत एक मामला दर्ज कर रही है। अधिकारी ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा जा रहा है और मामले की जांच की जा रही है।

अदालत ने विकास यादव को व्यक्तिगत रूप से पेश होने से छूट दी

नई दिल्ली। दिल्ली की एक अदालत ने कथित खालिस्तानी आतंकवादी गुरपतवंत सिंह पन्नू की अमेरिका में हत्या की कोशिश के आरोपी विकास यादव को उसके खिलाफ दर्ज अपहरण और जबरन वसूली के मामले में व्यक्तिगत पेशी से छूट दे दी है। अदालत ने यादव के खुद की जान को खतरा होने का दावा करने के बाद यह फैसला सुनाया है। विशेष न्यायाधीश सुमित दास ने यादव को उसके वकील की ओर से दायर अर्जी पर 16 नवंबर के लिए व्यक्तिगत पेशी से छूट दे दी। अर्जी में दावा किया गया है कि यादव के व्यक्तिगत विवरण सार्वजनिक कर दिए गए हैं, जिससे उसकी जान को खतरा है। न्यायाधीश ने यादव को सुनवाई की अगली तारीख पर तीन फरवरी को अदालत में पेश होने का निर्देश दिया। दिल्ली पुलिस के विशेष प्रकोष्ठ ने शहर के एक कारोबारी की शिकायत के बाद यादव को पिछले साल दिसंबर में गिरफ्तार किया था। कारोबारी ने यादव पर जबरन वसूली और अपहरण का आरोप लगाया था। इस मामले में मार्च में एक आरोपपत्र दाखिल किया गया और अप्रैल में जमानत दे दी गई।

आप केवल अरविंद केजरीवाल के हितों के लिए काम कर रही : भाजपा

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने रविवार को कहा कि आम आदमी पार्टी (आप) के वरिष्ठ नेता कैलाश गहलोत ने पार्टी छोड़ दी है, क्योंकि आप अपने राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल के हितों के लिए काम करने की खातिर उन मूल्यों से भटक गई है, जिनकी बुनियाद पर इस पार्टी को खड़ा किया गया था। आप पर तीखे वार करते हुए भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने कहा कि पार्टी ने खास बनने के लिए अपने ह्यह्यराजनीतिक मूल्य बदल लिए। भाजपा नेता ने कहा, पार्टी छोड़ने वाला हर व्यक्ति निराश है, क्योंकि आम आदमी पार्टी अब केवल अरविंद केजरीवाल की पार्टी बन गई है। यह अरविंद आदमी पार्टी बन गई है। गहलोत ने यह आरोप लगाते हुए रविवार को आप छोड़ दी कि राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं के आगे लोगों के प्रति पार्टी की प्रतिबद्धता पीछे रह गई है और हम लोगों के अधिकारों के बजाय केवल अपने राजनीतिक एजेंडे के लिए लड़ रहे हैं।

इस घटनाक्रम पर प्रतिक्रिया देते हुए पूनावाला ने कहा, अपने इस्तीफे में कैलाश गहलोत ने कहा है कि आम आदमी पार्टी (आप) एक खास पार्टी बन गई है, जिसने राजनीतिक स्वरूप बदल लिया है और सभी मूल्यों (जिसके लिए पार्टी बनी थी) से दूर हो गई है। उन्होंने आरोप लगाया कि आप भ्रष्टाचार में लिप्त है और उसने दिल्ली के लोगों से किए गए सभी वादे तोड़ दिए, चाहे वह राष्ट्रीय राजधानी को प्रदूषण मुक्त करना हो या यमुना नदी की सफाई करना हो। पूनावाला ने कहा, और जो लोग वादा करते थे कि वे कांग्रेस के साथ हाथ नहीं मिलाएंगे और बड़े-बड़े बंगले स्वीकार नहीं करेंगे, वे शीशमहल में व्यस्त हो गए और अपने निजी हितों को अधिक महत्व देने लगे। भाजपा प्रवक्ता ने कहा कि गहलोत ने केवल पार्टी नहीं छोड़ी है, बल्कि केजरीवाल को बेनकाब भी किया है। उन्होंने कहा, अन्ना हजारे, योगेंद्र यादव और कुमार विश्वास ने भी यही सब बातें कही थीं। भाजपा की दिल्ली इकाई के प्रमुख वीरेंद्र सचदेवा ने गहलोत के इस्तीफे का स्वागत करते हुए कहा कि उन्होंने एक साहसी कदम उठाया है। सचदेवा ने कहा, गहलोत ने उन्हीं मुद्दों को उठाते हुए पद छोड़ा है, जिनके लिए भाजपा केजरीवाल और आप के खिलाफ लड़ाई कर रही थी। उनके इस्तीफे से साबित होता है कि आप के नेता भी केजरीवाल को ईमानदार नहीं मानते हैं। नजफगढ़ से विधायक गहलोत ने तत्काल प्रभाव से मंत्रिपरिषद से इस्तीफा दे दिया। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी ने उनका इस्तीफा स्वीकार कर लिया है।

राष्ट्रीय मानव सेवा रत्न अवार्ड 2024: देशभक्ति और सामाजिक सेवा का भव्य उत्सव

जीतेन्द्र शर्मा

दिल्ली। इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स प्रोटेक्शन काउंसिल, नई दिल्ली द्वारा लिटिल थियेटर ग्रुप ऑडिटोरियम, मंडी हाउस में राष्ट्रीय मानव सेवा रत्न अवार्ड-2024 कार्यक्रम का आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्था के चेयरमैन डॉ टी.एम. ओंकार जी एंव मंच का संचालन एडवोकेट शारलेट सामू जी, डॉ. हीना क्रिस्चियन एंव डॉ. आशा ओंकार जी द्वारा की गयी। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में श्री धन्यकुमार जिनप्पा गुंडे (सदस्य-राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग), श्री संजीव कुमार (मुख्य सचिव, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार), बासम. फ. हैलिस (काउंसलर-ऐंबेंसी ऑफ फिलिस्तीन), सविता अरोडा (समाज सेविका) एंव प्रकाश जैन दीपपुरा जी कार्यक्रम में पधारें। सबसे पहले कार्यक्रम के आयोजक एंव इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स प्रोटेक्शन काउंसिल के चेयरमैन डॉ टी.एम. ओंकार जी एंव दिल्ली स्टेट अध्यक्ष डॉ दीपक मित्तल जी ने आये हुये सभी अतिथिगणों का फूलमालाओं, बुके, प्रतीक चिन्ह व शॉल उडाकर भव्य स्वागत किया। आडिटोरियम में बैठे सभी श्रोतागणों ने खडे होकर आये हुए सभी अतिथिगणों का ताली बजाकर अभिनन्दन किया। उसके बाद आये हुये सभी अतिथिगणों द्वारा दीप प्रज्जवलित कराकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस कार्यक्रम में विभिन्न प्रदेशों से आये हुए लगभग 20 देशभक्तों व समाजसेवियों को मोमेंटो, प्रमाण-पत्र व शॉल पहनाकर राष्ट्रीय मानव सेवा रत्न अवार्ड-2024 से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में संस्था के चेयरमैन डॉ. टी.एम. ओंकार जी ने उपस्थित सभी लोगों को मानव अधिकार के बारें मे जानकारी देकर जागरुक भी किया । इस कार्यक्रम में इमानुअल फँक एंव मेघा भारद्वाज द्वारा गीतों पर प्रस्तुति की गयी जिस पर आडिटोरियम में बैठे सभी जन देशभक्ति के रंग में झूम उठे, इस कार्यक्रम में बच्चों द्वारा देशभक्ति नृत्य व रंगारंग कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में संस्था के पदाधिकारियों डॉ. संदीप रजवाडी, हरसुख देलवडिया, डॉ. रुस्तम गावित, डॉ. सैम्मुल सखरपेकर, डॉ. डी. नालाथम्बी, डॉ. हीना क्रिस्चियन एंव डॉ. आशा ओंकार जी का महत्वपूर्ण सहयोग रहा। कार्यक्रम के अंत में राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ

चुनाव से पहले कैलाश गहलोत ने क्यों छोड़ी पार्टी मनोज तिवारी ने बताया

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार में मंत्री कैलाश गहलोत द्वारा अपने पद से इस्तीफा देने के बाद सियासी दलों के बीच नए सिरे से आरोप प्रत्यारोप का सिलसिला शुरू हो गया है। बीजेपी सांसद मनोज तिवारी ने बयान दिया है। उन्होंने कहा है कि कैलाश गहलोत के इस्तीफे के बाद अब आम आदमी पार्टी में कुछ नहीं बचा है। यह पूछे जाने पर कि क्या वो बीजेपी में शामिल होंगे, इसके जवाब में मनोज तिवारी ने कहा, ये तो मुझे नहीं पता कि वो बीजेपी में शामिल होंगे या क्या आगे क्या करेंगे? अभी उनकी मनःस्थिति क्या है, इसे वो खुद ही बेहतर जानते होंगे। अगर बीजेपी में ज्वाइन करने का प्रस्ताव आता है तो इसके बाद में हमारी पार्टी का शीर्ष नेतृत्व ही अंतिम फैसला लेगी, कि इस मसले पर क्या करना उचित रहेगा? मनोज तिवारी ने इसके अलावा ये भी कहा कि कैलाश गहलोत के इस्तीफे से दिल्ली सरकार में व्याप्त भ्रष्टाचार का पदार्फाश हो गया है। अब आम आदमी पार्टी के पास बचाव के लिए कुछ नहीं बचा है। आम आदमी पार्टी अब खत्म सी हो गई है। यह आप के लिए अब तक का सबसे बड़ा झटका है। अभी आप होश में भी नहीं होगी। आप नेता बचाव के लिए कुछ डायलॉग तैयार कर रहे होंगे। दिल्ली आबकारी नीति मामले में ईडी की पूछताछ पर उन्होंने कहा कि कैलाश गहलोत ने इस मामले में सहयोग किया था। इसके उलट, अरविंद केजरीवाल, मनीष सिसोदिया और संजय सिंह ने सहयोग नहीं किया था। यही वजह है कि वो जांच का सामना कर रहे हैं। उन्होंने ये भी कहा कि कैलाश गहलोत के इस्तीफे के फैसले से आप के सारे कारनामों का खुलासा हो गया है। इससे, अभी तक आप सरकार के खिलाफ जो प्रश्नचिन्ह उठ रहे थे, वो सभी सही सबित हो गए हैं। अब दिल्ली के लोग ठगा सा महसूस कर रहे हैं। लोग यह सोच रहे हैं कि उन्होंने अरविंद केजरीवाल पर भरोसा क्यों किया?

संक्षिप्त खबरें

पैक्स चुनाव को ले नामांकन 19 से,बनाए गए 2 काउंटर

गिद्धौर। आगामी 3 दिसंबर को होने वाले पैक्स चुनाव को लेकर बीडीओ सह निवार्ची पदाधिकारी सुनील कुमार ने प्रखंड स्तरीय पदाधिकारियों व कर्मियों के साथ बैठक की। उन्होंने बताया कि प्रखंड के 4 पैक्स अध्यक्ष तथा प्रबंध समिति के सदस्यों के नाम निर्देशन की तिथि 19 से 21 नवंबर तक निर्धारित है। नामांकन के लिए प्रखंड कार्यालय में चार काउंटर बनाये गए है।प्रत्येक काउंटर पर दो-दो पंचायत के अभ्यर्थियों का नामांकन लिया जाएगा।काउंटर संख्या 1 में सहायक निवार्ची पदाधिकारी सह प्रखंड कृषि पदाधिकारी रामाधार चौधरी के अलावा 4 कर्मियों को प्रतिनियुक्त किया गया है।इस काउंटर पर रतनपुर,पतसंडा का नामांकन होगा।काउंटर नंबर 2 पर सहायक निवार्ची पदाधिकारी सह प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी शिवपूजन कुमार की देखरेख मौरा व गंगरा का नामांकन कराया जाएगा।प्रखंड निवार्ची पदाधिकारी ने बताया कि 22 एवं 23 नवंबर को नामांकन पत्रों की संमीक्षा की जायेगी।अभ्यर्थी 26 नवंबर तक अपना नाम वापस ले सकते है।

प्रखंड स्तरीय रबी कार्यशाला सह प्रशिक्षणकार्यक्रमका हुआआयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/लक्ष्मीपुर:-जमुई कृषि प्रोद्योगिकी प्रबन्ध अभिकरण आत्मा के सौजन्य से प्रखंड मुख्यालय में अवस्थित ई किसान भवन में रविवार 17 नवम्बर को प्रखंड कृषि पदाधिकारी कपिल देव पासवान की अध्यक्षता में प्रखंड स्तरीय रबी कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रमोद कुमार सिंह के०भी०के० के वरिष्ठ वैज्ञानिक साथ ही साथ विशिष्ट अतिथि मनोज कुमार सिंह बी०टी०एम एवं नीधि कुमारी और धर्मेन्द्र कुमार ए०टी०एम उपस्थित हुए और संयुक्त रूप दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रखंड कृषि पदाधिकारी कपिल देव पासवान ने बताया कि कृषि विभाग के द्वारा सरकारी अनुदान राशि पर रबी सीजन का बीज उपलब्ध है। संबंधित किसान सलाहकार से मिलकर अनुदानित दर पर बीज प्राप्त कर सकते हैं। जिसका अनुदानित दर चना 41-80, मसूर 27-00 , सरसों और मटर 25-00 रुपए प्रति किलोग्राम है। वहीं केभीके के वरिष्ठ वैज्ञानिक प्रमोद कुमार सिंह उपस्थित किसानों को रबी फसल की बुआई से संबंधित विस्तृत जानकारी दी। जैसे गेहूं के कई प्रभेद की जानकारी दी।10 नवम्बर से 30 नवम्बर तक डीबीडब्ल्यू 187 जिसे कर्ण बंधन भी कहते हैं और एचडी 2967 प्रभेद की गेंहू लगाते हैं तो उपज अच्छी होती है। दिसम्बर माह में पीबीडब्ल्यू 502,343 और 443 प्रभेद के गेंहू का बीज लगाते हैं तो उत्पादन अच्छी होती हैं। इसलिए सही समय पर बीज की बुआई कर 100,% उत्पादन करें। उन्होंने ने कहा कि आज कृषि क्षेत्र में नई तकनीक, उन्नत बीज, उर्वरक का इस्तेमाल एवं फसलों को अच्छी देखभाल कर उत्पादकता को बढ़ाया जा रहा है। क्यों कि हमारे देश के किसान भारत की आत्मा है। जैसा कि आप जानते हैं कि कृषि के विकास से ही देश का समग्र विकास संभव है। इस कार्यक्रम में प्रखंड कृषि समन्वयक रौशन देव मिश्रा,करम राज, रविन्द्र कुमार,सीम्मी सिन्हा, किसान सलाहकार समिति के अध्यक्षा उषा कुमारी, किसान सलाहकार कौशल किशोर, सुभाष कुमार सिंह,विभाष चन्द्रा, प्रदीप कुमार सिंह, सुबोध पंडित, संतोष पासवान,रवि कुमार दास, सत्यनारायण रविदास एवं चन्द्र शेखर आजाद के साथ ही साथ मटिया, आनन्दपुर,गौरा,चिनवेरिया, मड़ैया, हरला,नजारी,काला जिनहरा, दिग्धी,खिलार, ककनचौर एवं मोहनपुर पंचायत के किसानों ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। जिसमें संजय यादव,संटू यादव, अजय सिंह,बमबम सिंह,लक्ष्मण कुमार, नन्दलाल यादव, शंभू मंडल, उमेश कुमार, सदानंद सिंह, अनिल पांडेय एवं अन्य किसान उपस्थित रहे।

किसानों ने किसान भवन में चना का बीज नही मिलने से किया प्रदर्शन

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] रबी फसल के बीज वितरण को लेकर रविवार को प्रखंड कार्यालय परिसर स्थित किसान भवन में दर्जनों किसानों को चना का बीज नही मिलने के कारण जमकर बबाल काटते हुए प्रदर्शन किया। सुबह 8 बजे से किसान बीज को लेने के लिए कतार में लग गया परन्तु बीज दोहपर 1 बजे तक नही मिलने के कारण किसान आक्रोशित हो उठा और प्रदर्शन करना शुरू कर दिया। प्रदर्शन कर रहे किसान गोपाल यादव, कपिल यादव, सुरजी देवी, रंजन यादव, देवकी देवी आदि ने बताया कि बीते दो दिन से हमलोगों को चना का बीज नही दिया जा रहा है और किसान सलाहकार श्रवण कुमार हमलोगों को रविवार को बीज लेने की बात करते हुए बुलाया। जब रविवार की सुबह हमलोग बीज लेने के लिए लाइन में लग गए तो किसान सलाहकार का कुछ अता पता नही। उनसे सम्पर्क किया तो वह हमेशा आ रहे हैं कि बात करते रहे। वही कुछ लोगों के द्वारा पता चला कि वह ताला लगाकर किसान भवन से निकल चुका है। किसानों ने कहा कि हमलोग घर का कामकाज छोड़कर यहां चना का बीज लेने के लिए आ रहे हैं लेकिन हमलोगों को बीज नही मिल रहा है। किसानों ने कहा कि बीज सही समय पर नही मिला तो सही समय खेती नही हो पायेगा। किसानों ने कहा कि अगर कृषि विभाग का रवैया इसी तरह किसानों के प्रति रहेगा तो हमलोग चरणबद्ध तरीके से आंदोलन।

जातीय अल्पसंख्यक मोर्चा का हुआ गठन संजय केशरी बने संस्थापक अध्यक्ष

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर। धार्मिक और भाषाई अल्पसंख्यकों की तर्ज पर चार प्रतिशत से कम आबादी वाले सभी जातियों को जातीय अल्पसंख्यक का दर्जा दिलाने के संकल्प के साथ दो नंबर गुमटी पुअर हाउस के सामने प्रख्यात पत्रकार चन्द्रशेखरम की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में जातीय अल्पसंख्यक मोर्चा का गठन किया गया जिसके संस्थापक अध्यक्ष संजय केशरी बनाए गए। इस अवसर पर संजय केशरी ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि जब देश में धार्मिक आधार पर धार्मिक अल्पसंख्यक है और जब देश में भाषाई आधार पर भाषाई अल्पसंख्यक है तो फिर हमारे देश में जातीय आधार पर जातीय अल्पसंख्यक क्यों नही है। वार्ड आयुक्त राकेश तिवारी एवं दिलीप तांती ने कहा कि बिना अपवाद के सभी राजनीतिक दलों की राजनीति का आधार ही जातीय राजनीति है लेकिन उसके बाद भी किसी राजनीतिक दल ने आज तक चार प्रतिशत से कम आबादी वाले जातियों को जातीय अल्पसंख्यक का दर्जा देने की पहल नहीं की। श्री राष्ट्रीय राजपूत करणी सेना के प्रदेश उपाध्यक्ष राम कुमार सिंह ने जातीय अल्पसंख्यक मोर्चा को पूर्ण समर्थन देते हुए कहा कि यह समय की मांग है। भारतीय किसान यूनियन के प्रदेश उपाध्यक्ष संजय कुमार सिंह ने कहा कि जातीय अल्पसंख्यक मोर्चा में सवर्ण, पिछड़ा, अतिपिछड़ा एवं दलित सभी कम आबादी वाले जातियों को राजनीति तथा आर्थिक संरक्षण मिलेगा।। इस अवसर पर अनेकों कार्यकर्ता उपस्थित थे।

मच्छरों के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए नगर पंचायत में लगातार की जा रही फॉगिंग

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर)। संग्रामपुर नगर पंचायत में नगर वासियों को मच्छरों के आतंक से निजात दिलाने की दिशा में नगर पंचायत प्रशासन ने कार्रवाई शुरू कर दी है। मच्छर भगाने के लिए नगर पंचायत संग्रामपुर के विभिन्न वार्डों में मच्छर रोधी दवा का छिड़काव शुरू कर दिया गया है। कार्यपालक पदाधिकारी मनीला राज के नेतृत्व में नगर पंचायत के प्रत्येक वार्ड में संध्या के समय प्रतिदिन डबल साइलेंसर वाली फागिंग मशीन से मच्छर रोधी दवा का छिड़काव कराया जा रहा है। बताते चलें कि मच्छर जनित रोगों सहित डेंगू जैसे घातक बीमारी का प्रभाव अब ग्रामीण क्षेत्रों में भी देखने को मिल रहा है। जिसको ध्यान में रखते हुए बढ़ते मच्छरों के प्रभाव से नगर वासियों को निजात दिलाने के लिए यह कदम उठाई गई है। कार्यपालक पदाधिकारी मनीला राज ने कहा कि बदलते मौसम में मच्छरों का आतंक बढ़ गया है। ऐसे में लोग मच्छर जनित रोगों का शिकार हो रहे हैं। इसे देखते हुए नगर पंचायत के विभिन्न वार्डों में प्रतिदिन फागिंग मशीन से मच्छर रोधी दवा का छिड़काव किया जा रहा है। आगे भी समय-समय पर नगर पंचायत में फॉगिंग का कार्य जारी रहेगा। मुख्य पार्षद नीलम देवी ने कहा कि नगर पंचायत में क्रमवार तरीके से मच्छर रोधी दवा का छिड़काव फागिंग मशीन के जरिए किया जा रहा है। वही साफ सफाई सहित दवा के छिड़काव शुरू होने से मच्छरों के आतंक से नगर वासियों को राहत मिलेगी। मौके पर स्वच्छता पर्यवेक्षक जयप्रकाश, उपमुख पार्षद मनोज शाह, समाजसेवी नंदकिशोर यादव, वार्ड पार्षद राजेश केसरी, मुकेश कुमार, कुमारी दीपिका, वंदना कुमारी, राधा देवी, सरोजनी देवी सहित अन्य मौजूद थे।

दो दिवसीय मल्टी डिसिप्लिनरी नेशनल सेमिनार हुआ संपन्न

प्रात : किरण संवाददाता

तारापुर(कोर्ट)। आरएस कॉलेज तारापुर में दो दिवसीय मल्टी डिसिप्लिनरी नेशनल सेमिनार का दूसरे दिन कार्यक्रम होने के बाद समापन हुआ। इसकी अध्यक्षता आर एस कॉलेज के प्राचार्य डॉक्टर यू एस दास के नेतृत्व में हुआ मंच संचालन डॉ अश्वनी कुमार ओझा ने किया मल्टी डिसिप्लिनरी सेमिनार के डायरेक्टर एन कुमार आईसी एसआरडी बेंगलुरू कर्नाटका उन्होंने कहा कि इस सेमिनार को सफल बनाने में कॉलेज प्रशासन एवं छात्र छात्रों का मुझे बहुत ही सहयोग एवं प्यार मिला है । कॉलेज के प्राचार्य डॉक्टर यू एस दास ने कहा कि छात्रों को पढ़ाई के साथ-साथ तकनीकी के क्षेत्र में अपना योगदान देना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम को सफल बनाने में प्राध्यापक एवं छात्र-छात्राओं ने अपना काफी योगदान रहा है इसके लिए उन्हें धन्यवाद देता हूं ऑर्गनिजर सेक्रेटरी प्रोफेसर पूर्णिमा गुप्ता उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि मल्टी डिसिप्लिनरी नेशनल सेमिनार इस आरएस कॉलेज तारापुर में हुआ इसके लिए मैं आप सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूं । इसके अलावा प्राध्यापक एवं छात्र-छात्राओं को मेडल एवं सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर उपस्थित प्रोफेसर अर्चना कुमारी प्रोफेसर सविता कुमारी प्रोफेसर संतोष कुमार प्रोफेसर जसीम राजा प्रोफेसर बसंत कुमार सिंह इसके अलावा छात्र एवं छात्राएं अंकित कुमार सूरज कुमार अनिकेत कुमार अभिषेक कुमार मंतशा खातून माफिया खातून नाजिया खातून कॉलेज के पूर्व एन एस एस आईकॉन मोहम्मद अखलाक उद्दीन ने कहा कि देश में पॉल्यूशन की समस्या से निपटने के लिए आज हम सभी को सोचने की जरूरत है। समापन समारोह में कॉलेजके अध्यापक कर्मचारी गण छात्र और छात्रा सहित अभिभावक मौजूद थे।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकताओं ने बिहार बाल संरक्षण आयोग के सदस्य को अंग वस्त्र देकर किया स्वागत

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर।बिहार बाल संरक्षण आयोग के सदस्य बनने के उपरांत विभागीय दौरे पर मुंगेर से बांका जाने के क्रम में रविवार को हवेली खड़गपुर आए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद बिहार के पूर्व प्रदेश संगठन मंत्री, बिहार भाजपा के प्रदेश सह कार्यालय मंत्री डॉ सुग्रीव दास का नगर के हवेली खड़गपुर अंबेडकर चौक पर विद्यार्थी परिषद के वर्तमान एवं पूर्व कार्यकताओं के द्वारा अंग वस्त्र एवं फूल माला से उत्साह पूर्वक स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। इस दौरान डा सुग्रीव दास ने डॉ भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया किया ,तत्पश्चात उन्होंने नगर परिषद स्थित आश्रय स्थल का भी जायजा लिया साथ ही उन्होंने कई आवश्यक निर्देश दिए। इस दौरान बिहार बाल संरक्षण आयोग के सदस्य डॉ सुग्रीव ने सभी कार्यकताओं का आभार व्यक्त किया। साथ ही उन्होंने सभी कार्यकार्ताओं से कहा कि मोबाइल की वजह से बच्चे एवं छात्र युवा बर्बाद हो रहे हैं उन्होंने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि बच्चे एवं छात्र युवा 7 से 8 घंटे मोबाइल में बेवजह व्यस्त हैं जिस वजह से अपने परिवार से दूर हो रहे हैं। लोगो को इसके लत से बच्चों को बचाने की जरूरत है एवं समाज के लोगों को भी इसके लिए जागरूकता फैलाने की आवश्यकता है। इस मौके पर विद्यार्थी परिषद के पूर्व कार्यकर्ता उप मुख्य पार्षद दीपक यादव, सौरभ सिंघानिया, सत्यम कुमार निराला, विक्की रॉय,राजीव नयन,रवि सिंह, सोनू केसरी,सौरभ झा,अविनाश केसरी, सैलब झा सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद थे।

डीआरएम आसनसोल ने झाझा पहुंचकर यातायात परिचालन से सम्बंधित ली जानकारी

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] आसनसोल रेलवे डिवीजन के डीआरएम अपने डिवीजन क्षेत्र के पड़ने वाले स्टेशनों का निरीक्षण करते हुए रविवार को अपने विशेष सैलून से झाझा स्टेशन पहुंचा। डीआरएम चेतनानंद सिंह झाझा पहुंचने के बाद स्टेशन प्रबंधक रविकांत माथुरी, यातायात निरीक्षक रवि गुप्ता से रेलवे परिचालन से सम्बंधित कई तरह की जानकारी लिया। डीआरएम ने स्टेशन प्रबंधक से आसनसोल डिवीजन से आने वाले रेलवे गाड़ियों के परिचालन के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी लेते हुए उन्होंने मालगाड़ी के अलावा अन्य सवारी गाड़ी के बारे में भी विस्तार पूर्वक जानकारी लिया। डीआरएम ने अपने साथ चल रहे अधीनस्थ अधिकारियों से भी इस पर गहन-विचार विमर्श करते हुए इसका जानकारी लिया । डीआरएम ने अपने विशेष सैलून से दानापुर ओर आसनसोल डिवीजन के शुरूआती छोर दुधीजोर से झाझा तक रेलवे ट्रैक का निरीक्षण किया। डीआरएम ने स्टेशन प्रबंधक से आसनसोल से आने और जाने वाली गाड़ियों के डिले होने वाली समस्याओं की जानकारी लिया। उन्होंने यह भी पूछा कि जो भी गाड़ी हमारे डिवीजन से झाझा इन करती है तो उसे दानापुर डिवीजन के पहले ही रोक दी जाती है। डीआरएम द्वारा परिचालन से जुड़े पूछे गए सवालों पर स्टेशन प्रबंधक ने विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि रेलवे ट्रैक का अभाव व विनियमन की कमी के कारण इस तरह का कारण होता है। मौके पर जसीडीह यातायात निरीक्षक यूपी गुप्ता, वरीय डीईएन2 वंदना राज, आसनसोल मंडल आरपीएफ कमांडेंट राहुल राज समेत कई उच्च अधिकारी मौजूद थे।

पुत्र ने मां की हत्या किये जाने का दर्ज करवाया प्राथमिकी

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] थानाक्षेत्र के चरघरा में शनिवार की शाम को एक महिला की हुई मौत पर उसके पुत्र के द्वारा थाना में गांव के कुछ लोगों पर हत्या का आरोप लगाकर प्राथमिकी दर्ज कराया है। दर्ज आवेदन में मृतिका के पुत्र जितेंद्र कुमार यादव ने बताया कि मेरी माँ सुकुमारी देवी को लाठी, डंडा, रॉड से मारपीट कर हत्या कर दिया गया। मारपीट करने में सिकंदर यादव,किशोरी यादव, सुभाष यादव, मुकेश यादव, विनेश यादव, किशोरी यादव की पत्नी, फूलवंती देवी के अलावे अन्य 4-5 अज्ञात लोग शामिल हैं। प्राथमिकी दर्ज होने के बाद थानाध्यक्ष संजय कुमार ने बताया कि प्राथमिकी दर्ज करने के बाद छानबीन की कार्रवाई की जा रही है।

हॉकी के वूमेन्स एशिया चैम्पियन ट्रॉफी के मुख्य अतिथि शामिल होकर चांदनी ने क्षेत्र का नाम रोशन किया

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर)। कॉमनवेल्थ गेम्स सहित विभिन्न अंतरराष्ट्रीय स्पर्धा में पदक जीतकर प्रखंड क्षेत्र के बलिया पंचायत के सुपौल जमुआ निवासी चंदन कुमार सिंह नहीं कई बार क्षेत्र के लोगों को गौरवान्वित होने का अवसर प्रदान किया है। रविवार को बिहार के राजगीर में आयोजित हॉकी के वुमेन्स ऐशियन चैम्पियन ट्रॉफी के पहले मैच में बतौर मुख्य अतिथि शामिल होकर चंदन ने क्षेत्र के लोगों को गदगद होने का एक और मौका प्रदान किया है। रविवार को खेले गए वुमेन्स ऐशियन चेम्पियन ट्रॉफी के मलेशिया और थाईलैंड के पहले मैच चंदन ने मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित होकर दोनों टीम के महिला कप्तान को बुके देकर बेहतर प्रदर्शन की शुभकामनाएं भी दी।चंदन के साथ इस मैच में मुख्य अतिथि के पैनल में बिहार राज्य खेल प्राधिकरण के रविंद्र नाथ चौधरी एवं लव सिंह भी मौजूद थे।राजगीर में आयोजित महिला हॉकी का यह अंतरराष्ट्रीय टूनार्मेंट की शुरूआत 11 नवंबर से हुई है एवं 20 नवंबर को फाइनल के साथ इस टूनार्मेंट का समापन होगा। विदित हो कि चंदन का चयन खेल कोटे से प्रखंड पंचायती राज पदाधिकारी के तौर पर हुआ है तथा इस समय वह पटना में अपनी सेवा दे रहे हैं। चंदन की उपलब्धि पर बलिया पंचायत की मुखिया सारिका सिंह,मुखिया वीर कुंवर,खेल प्रेमी निर्मल सिंह कुशवाहा, अमित चंद्रा इत्यादि ने खुशी जाहिर की है।

हाट के प्रति लोगों में थी उदासीनता परन्तु हुई जमकर खरीद-बिक्री

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] प्रखंड अंतर्गत बैजला पंचायत के हाई स्कूल मैदान में शनिवार देर शाम मुखिया संघ प्रखंड अध्यक्ष पप्पू यादव, आदर्श युवा प्रकोष्ठ प्रभारी आशीष कुमार, उपमुखिया सुरेश यादव, कामदेव यादव ने सम्मिलित रूप से रिवन फीता काटकर हाट बाजार का शुभारंभ किया। हाट में बैजला के अलावा सरैया, भांझीकुसुम, तिलवरिया सहित कई गांव के लोग शामिल हुए। मुखिया संघ प्रखंड अध्यक्ष सह छापा पंचायत मुखिया पप्पू यादव ने कहा कि हाट के माध्यम से बैजला व आस-पास के क्षेत्र का विकास तय है। छोटे -छोटे किसानों को भी सब्जी इत्यादि उगाने का प्रोत्साहन मिलेगा। आदर्श युवा प्रकोष्ठ प्रभारी आशीष कुमार ने कहा कि हाट के प्रति लोगों में उदासीनता देखने को मिलती थी परंतु हाट में जमकर खरीद बिक्री होते देखकर मन हर्षित है। बैजला का भौगोलिक परिदृश्य ऐसा है जिसके कारण यह छोटा बाजार के रूप में अब तक नहीं उभर पाया है परन्तु हाट के माध्यम से लघु बाजार का रूप ले सकता है। यह लोकल फॉर वोकल के तहत भी बहुत बढ़िया पहल है, किसानों सहित छोटे-छोटे व्यापारियों को स्वरोजगार के अवसर मिलेंगे, ग्रामीणों की भी सब्जी सहित कई दैनिक आवश्यकता पूरी होगी । उपमुखिया सुरेश यादव ने कहा कि हाट के लिए सरकार भी काम कर रही हैं हमलोग जनप्रतिनिधि होने के नाते सरकारी योजना का लाभ दिलाकर इस हाट का उतरोतर विकास के लिए प्रयासरत रहेंगे। मौके पर मनीष कुमार, पिंटू कुमार, प्रदीप यादव,नीतीश कुमार प्रिंस, विशाल कुमार,शंभूशरण दास,मनोज यादव,सदानंद यादव, रामचरण यादव, सुरेश विश्वकर्मा, चक्रधर यादव, सुरेश कुमार यादव, नरेश यादव,विकास कुमार सहित सैकड़ों लोग मौजूद थे।

आरपीएफ के वरीय कमांडेंट ने बैरक का किया निरीक्षण

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] आसनसोल रेल मंडल के आरपीएफ के वरीय कमांडेंट राहुल राज शअधीनस्थ अधिकारियों के साथ रेलवे तालाब के पास अवस्थित बैरक का निरीक्षण किया। बैरक में आसनसोल, जसीडीह के रह रहे आरपीएफ के पदाधिकारी, जवानों से सुविधाओं से सम्बंधित सभी तरह की जानकारी लिया। वरीय कमांडेंट ने बैरक में रह रहे अपने डिवीजन के आरपीएफ पदाधिकारी, जवानों को रेलवे परिचालन के दौरान सुरक्षा को लेकर नियमित स्कॉर्ट करने व रेलयात्रियों की सुरक्षा, सहयोग करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि भारतीय रेल की जिम्मेवारी आरपीएफ के कंधों पर होती है उसकी सुरक्षा का जिम्मा हमलोगों के ऊपर होने के कारण अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को समय समय पर कई तरह के दिशा निर्देश दिया जाता है। उन्होंने कहा कि बैरक में किसी भी प्रकार की कोई समस्या तो उनलोगों को नही हो रहा है इसकी भी जानकारी ली गई साथ ही ट्रेनों में नियमित स्कॉर्ट को लेकर आवश्यक दिशा निर्देश भी दिया गया।

सीपीआई के मजबूत स्तंभ थे पूर्व मुखिया बिमलेश चन्द्र सिंह : चन्द्रभूषण

प्रात : किरण संवाददाता

सिंहवाड़ा।कटका पंचायत के पूर्व मुखिया दिवंगत विमलेश चंद्र सिंह की स्मृति में पुण्यतिथि आयोजित कर श्रद्धांजलि सभा का रविवार को आयोजित किया गया। इस अवसर पर मध्य विद्यालय मोहनपुर के प्रांगण में स्वामी विवेकानंद अस्पताल मब्बी की ओर से निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन गया ।कार्यक्रम की अध्यक्षता मुखिया कुमार किसलय व सरपंच उदय नारायण मिश्र ने संचालन किया।अहिल्या गौतम विद्यापीठ के निदेशक चंद्र भूषण मिश्र ने कहा सामाजिक सरोकार से जुड़े विमलेश चन्द्र सिंह ने चाइल्डलाइन के समन्वयक पद को सुशोभित कर बच्चों के अधिकार को लेकर जगह-जगह जागरूकता अभियान चलाया। मुखिया संघ के संरक्षक अहमद अली तमन्ने ने कहा कि सीपीआई के अंचल सचिव रहे बिमलेश चन्द्र सिंह ने पार्टी की नींव को मजबूत करने के साथ सभी वर्ग को सम्मान देने का निरंतर कार्य किया।दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।शिविर में डॉ. शिशेंद्रु कैंसर विशेषज्ञ डाक्टर अपराजिता , जेनरल फिजिशियन एवं हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ अभिषेक माधवन ने शिविर में अनेकों लाभान्वित रोगियों को रोगों से बचने के उपाय बताकर परीक्षण कर निःशुल्क दवा उपलब्ध कराया।कहा कि परमार्थ कार्यों के लिये दृढ़ संकल्प से ही आगे बढ़ा जा सकता है और ये असहाय लावारिस जनों के बीच सेवा अत्यंत प्रशंसनीय कार्य है। मौके पर मौजूद मानवाधिकार के मनोहर झा ने कहा कि अपने पूर्वजों की पुण्यतिथि पर स्वास्थ्य शिविर लगाकर इसे सेवा पर्व के रूप में मनाएं। मौके पर पंचायत समिति सदस्य राजा पासवान, टोनी सिंह,विकास कुमार, शिव कुमार, धीरेंद्र मिश्र, नागेंद्र मिश्र, रामचंद्र सहनी सहित कई मौजूद रहे ।

रक्तदान करके बचायी जा सकती है कई जानें : डॉ मिलन

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। दूरस्थ शिक्षा निदेशालय अंतर्गत संचालित बीएड (नियमित) के द्वारा डीएमसीएच अवस्थित क्षेत्रीय रक्त केंद्र में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें कुल उन्नीस लोगों ने रक्तदान किया। रक्तदान करने में विभाग के छात्र छात्राओं , नवनियुक्त बीपीएसी शिक्षकों के अलावा विभाग के शिक्षकों ने भी अपना अहम योगदान दिया। बीएड नियमित के विभागाध्यक्ष डॉ अरविंद कुमार मिलन ने कहा कि रक्तदान के जरिये हम कई लोगों की जिंदगी बचा सकते है। एक स्वस्थ्य व्यक्ति नब्बे दिन के अंतराल पर रक्तदान कर सकते है। विभाग के छात्र हर साल रक्तदान शिविर लगाते आये है। वहीं कार्यक्रम की अतिथि नन्हीं दुनिया की निदेशिका नम्रता झा ने कहा कि एक यूनिट ब्लड के माध्यम से तीन लोगों की जान बचाई जा सकती है। रक्तदान करने से शरीर में किसी भी प्रकार की कोई कमजोरी नहीं होती है। सभी लोगों को सामाजिक दायित्व निभाते हुए वर्ष में एक या दो बार रक्तदान अवश्य करना चाहिए। जिससे किसी जरूरतमंद की जान बचायी जा सके। उन्होंने कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए कहा कि ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय का यह एक मात्र डीडीई , बीएड (नियमित) विभाग है जो हर वर्ष रक्तदान शिविर का आयोजन करते आया है । वहीं विभाग के एनएसएस समन्वयक डॉ उदय कुमार ने कहा कि विभाग शिक्षा के साथ साथ सामाजिक कार्यों को लेकर भी प्रतिबद्ध है।रक्तदान शिविर में संदीप कुमार चौधरी, मिथिला इंटरनेशनल स्कूल की निदेशिका गीतांजलि मिश्रा, अखिलेश कुमार, घनश्याम ठाकुर,अंकित कुमार झा, डॉ उदय कुमार, दीपेश कुमार, शिव कुमार, विभूति कुमार झा, प्रभात कुमार, संजीता मिश्रा, मोहित कुमार, मो.अमीन,आदित्य राज,अभिषेक कुमार ,शिव कुमार, राजा कुमार, प्रभाकर कुमार, अरुण कुमार, राहुल राज आदि ने रक्तदान किया । कार्यक्रम के सफल संचालन में राहुल राज, साक्षी झा, प्रभात कुमार, संजीव कुमार, साहिल भारद्वाज, ध्रुव कुमार आदि का अहम योगदान रहा।

झोपड़ीनुमा घर को किया गया क्षतिग्रस्त

जमुई [झाझा] पुस्तैनी जमीन पर झोपड़ीनुमा बने घर को अज्ञात लोगों के द्वारा क्षतिग्रस्त कर दिए जाने पर जमीन मालिक ने थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई है। डॉक्टर बसंत कुमार डालमियां ने दर्ज आवेदन में बताया की धपरी मोड़ के पास मेरा जमीन है जहां एक झोपड़ीनुमा घर है और उसी जगह पुलिस की जब्त किया हुआ वाहन भी रखा जाता है। रात्रि में कुछ अज्ञात लोगों ने घर को क्षतिग्रस्त कर दिया। दर्ज आवेदन के आधार पर पुलिस मामले की जांच में जुट चुकी है।

ट्रम्प की विजय और भारत

अमेरिका में रिपब्लिकल पार्टी की ऐतिहासिक विजय के बाद अब यह तय हो गया है कि पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प दूसरी बार अमेरिका के राष्ट्रपति बनेंगे। अमेरिका का इतिहास बताता है कि ट्रम्प की यह जीत उनकी ऐतिहासिक वापसी है। अमेरिका में यह विजय किसी चमत्कार से कम नहीं है। 130 वर्ष के अमेरिकी इतिहास में यह पहली बार है, जब किसी ने यह कारनामा किया है। डोनाल्ड ट्रम्प ने लगातार तीसरी बार अमेरिका के राष्ट्रपति का चुनाव लड़ा, जिसमें पहली और तीसरी बार वे सफल रहे, दूसरी बार के चुनाव में जो बाइडेन से पराजित हो गए। इस चुनाव में पराजित होने के बाद ट्रम्प अमेरिका में राजनीतिक तौर पर लगातार सक्रिय रहे। उनका मिशन फिर से राष्ट्रपति बनना ही था, जिसे उन्होंने बखूबी अंजाम देकर एक नया कीर्तिमान बना दिया। चुनाव में उनकी प्रतिद्वंदी कमला हैरिस यकीनन राजनीतिक समझ रखती थी, लेकिन यह समझ किसी भी प्रकार से सफलता की परिचायक नहीं बन सकी। हालांकि अमेरिकी मीडिया के एक वर्ग ने तो उनको भावी राष्ट्रपति के रूप में प्रचारित कर दिया। लेकिन यह नैरेटिव भी उनके लिए जीत का मार्ग नहीं बना सका। यहां एक खास तथ्य यह भी माना जा सकता है कि कमला हैरिस को भारतीय मूल का बताने का सुनियोजित प्रयास किया गया। ऐसा इसलिए किया गया कि भारतीय मूल के मतदाताओं को उनके पक्ष में लाया जा सके, लेकिन वे जिन हाथों में खेल रही थी, वह लाइन भारत के लिए राजनीतिक तौर सही नहीं थी। वैश्विक राजनीति के जानकार डोनाल्ड ट्रम्प की जीत कई निहितार्थ निकाल रहे हैं। कई विश्लेषक ट्रम्प की जीत को भारत की कूटनीतिक सफलता के तौर पर भी स्वीकार कर रहे हैं। इसका एक कारण यह माना जा रहा है कि वैश्विक स्तर पर भारत सरकार जिस नीति और विचार को लेकर कार्य कर रही है, उसकी झलक ट्रम्प के विचारों में भी दिखाई देती है। इसके अलावा ट्रम्प का कहना है कि अमेरिका की खोई ताकत को फिर से प्राप्त करना चाहते हैं। आज अमेरिका कहने मात्र को ही महाशक्ति है, लेकिन उसका वैसा दबदबा आज नहीं है, जो पहले हुआ करता था। इस बीच भारत ने महाशक्ति बनने की दिशा में तीव्र गति से अपने कदम बढ़ाए हैं, इसलिए आज विश्व के अनेक देश भारत को महाशक्ति के रूप में देखने लगे हैं। हमें स्मरण होगा कि रूस और यूक्रेन के मध्य युद्ध के दौरान भारत के नागरिक पूरे सम्मान के साथ भारत लौटे थे। उस समय भारत के नागरिकों के समक्ष यूक्रेन की सेना ने अपने हथियार नीचे कर लिए थे। यह केवल एक दृश्य नहीं, बल्कि भारत की शक्ति का ही परिचायक था। भारत की इस बढ़ती शक्ति से अमेरिका भी भली भांति परिचित है। रूस और यूक्रेन युद्ध के बारे में कई बार यह कहा जा चुका है कि भारत चाहे तो युद्ध रुकवा सकता है। इसका तात्पर्य यही है कि आज का भारत विश्व के लिए एक ताकत बन चुका है। अमेरिका के इस चुनाव में भारत के लोकसभा चुनाव की तरह ही प्रचार किया गया। कई प्रकार के नैरेटिव स्थापित करने का प्रयास किए गए। वामपंथी विचार के मीडिया ने ट्रम्प की राह में अवरोध पैदा करने के भरसक प्रयास किए। यहां तक कि उनको सनकी और विलेन कहने में भी गुरेज नहीं किया गया। यही तो भारत में किया गया। वामपंथी समूह ने भारत के लोकसभा चुनावों में सरकार के विरोध में जहरीली भाषा का प्रयोग किया। फिर भी आखिरकार नरेंद्र मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री पद पर आसीन हो गए। अब ऐसा लगने लगा है कि मतदाता बहुत समझदार हो गया है। उसको किसी भी प्रकार से भ्रमित नहीं किया जा सकता। उसे अब देश दुनिया की समझ हो गई है, इसलिए वह वर्तमान के साथ कदम मिलाकर चलने की ओर अग्रसर हुआ है। विश्व के कई देश आज कई प्रकार की समस्याओं से जूझ रहे हैं। कोरोना के बाद कई देशों की आर्थिक स्थिति बिगड़ गई है, उसे पटरी पर लाने के लिए उस देश की सरकार की ओर से भरपूर प्रयास किए जा रहे हैं। इन समस्याओं में कई समस्याएं ऐसी हैं, जो सबके सामने हैं। आतंकवाद एक विकराल समस्या बनता जा रहा है। अमेरिका भी इससे ग्रसित है। रूस और यूक्रेन की बीच तनातनी कम नहीं हो रही। इजराइल और हमास के बीच युद्ध जैसे हालात हैं। अमेरिका में ट्रम्प के पुनः राष्ट्रपति बनने के बाद यह लग रहा है कि अब आतंक के सहारे भय का वातावरण बनाने वाले किसी भी कदम को पूरे जोश के साथ रोकने का प्रयास किया जाएगा। अमेरिका में ट्रम्प की जीत से भारत के पड़ोसी देश यानि पाकिस्तान, चीन और बांग्लादेश में सुगबुगाहट प्रारम्भ हो गई है, क्योंकि यह देश भारत को हमेशा अस्थिर करने की फिराक में रहते हैं। हम वह वाकिया अभी तक भूले नहीं हैं, जब अमेरिका ने आतंक के विरोध में बड़ी कार्यवाही को अंजाम देते हुए ओसामा बिन लादेन को मौत के घाट उतार दिया था, हालांकि उस समय अमेरिका के राष्ट्रपति ओबामा थे।

खुदगर्जी की धरती पर बटवारे का दावानल

मजहब के नाम पर देश-दुनिया में बटवारा करने वालों की जमातों में निरंतर इजाफा होता जा रहा है। बटोगे-तो-कटोगे जैसे नारे बुलंद होने लगे हैं। वास्तविक बटवारा तो उच्चवर्ग और निम्नवर्ग के मध्य, सरकारी नुमाइन्दों और आम आवाम के मध्य, बलशाली और निर्बल के मध्य, शासक और शासित के मध्य, सक्षम और निरीह के मध्य हो कब का चुका है। सच्चाई की ओर से मुंह फेरने वाले लोग निहित स्वार्थों के लिये सम्प्रदाय, क्षेत्र और भाषा जैसे कारकों को रेखांकित करने लगते हैं। राजनैतिक दलों ने बटवारे वाले नारे से मत विभाजन को ध्रुवीकरण के आधार पर साधने की कोशिश की, तो मजहब के ठेकेदारों ने अपनी दुकानें चलाने के लिए इसका उपयोग शुरू कर दिया। कोई इसके समर्थन में अपने पौ-बारह होते देख रहा है तो किसी को विरोध करने पर लाभ की आशा है। मगर सच्चाई को उजागर करने के लिये पहल अभी तक नहीं हुई है। राजनैतिक दलों ने सत्ता के लिए किसी भी हद तक जाने की ठान ली है। चुनावी मंचों से होने वाले उद्घोषों से लोगों की मंशा निरंतर सामने आ रही है। वहीं दूसरी ओर मजहबी इन्तजाम सम्हालने वाले केवल और केवल अपनी निजी सत्ता को कायम रखने की फिराक में ही लगे रहते हैं। वे न तो पैगामों का ईमानदाराना तजुर्मा करते हैं और न ही वेदों की व्याख्या। कमाई करने की ख्वाइश ने उन्हें अन्धा कर दिया है। आस्था के केन्द्रों में धनबली, बाहुबली, जनबली, सत्ताबली, पहुंचबली, संबंधबली जैसे लोगों के लिए नये-नये नियम बनाये जा रहे हैं ताकि बली श्रंखला के सामने आम आवाम को उनकी औकात दिखायी जा सके। कोई पैसों से भगवान के दर्शन खरीद रहा है तो कोई अपने रुतवे से बेधकड गर्भ-गृह तक घुसता चला जाता है। कहीं चादर चढाने के लिये लाइन से हटकर सीधा मजार तक पहुंचने हेतु सामाजिक प्रतिष्ठा का पैमाना है तो कहीं फंड बढाने वालों को खुली सहूलियतें मुहैया कराई जातीं हैं। नौकरशाही तो आस्था के सभी मापदण्डों को अपने ओहदे की ताकत के नीचे कुचलकर शान-ओ-शौकत के साथ किसी भी श्रध्दा के केन्द्र में प्रवेश करने का विशेषाधिकार रखते हैं। जनप्रतिनिधि का दमगा तो चयनित ओहदेदार के पूरे खानदान पर चमकता है। ऐसे में बल श्रंखला के आधुनिक लोगों की भीड को इबादतगाहों में पर्यटन, पिकनिक, मौज, मस्ती जैसे दिखावे ही हासिल होते हैं। वे मालिक के दरवार में न तो हाजिरी ही लगा पाते हैं और न ही उनकी दिखावा भरी दुआओं का असर ही सामने आता है। वहीं श्रध्दा की पूंजी लेकर माथ टेकने वाले आम आवाम की सादगी ही उनके मालिक तक पहुंचकर उनकी मुराद पूरी करती है। मजहबी मजलिशों में खून-खराबे की बातों का बोलबाला, धार्मिक सम्मेलनों में उन्माद फैलाने की कोशिशें, सामाजिक एकरसता की बैठकों में संकीर्ण मानसिकता के पोषण जैसी स्थितियां खुल्मखुल्ला देखने को मिल रहीं हैं। संविधान के रखवालों के लिए ऐसी घटनाएं, नक्कारखाने में तूती की आवाज बनकर रह गई है। सिर से ऊपर पानी पहुंचने की स्थिति में निचले स्तर के उत्तरदायित्व की अन्तिम पायदान वालों को बली का बकरा बनाकर कर्तव्यों की इतिश्री कर ली जाती है। सनातन का ढिंढोरा पीटने वालों को उसकी शाश्वत परिभाषा निरंतर विरोध दर्ज करा रही है तो खुदा के पैगाम का मनमाना तजुर्मा करने वालों को हकीकत का आइना देखने से भी डर लगता है। विभिन्न आस्था के आयामों की सामाजिक व्यवस्था आज धूलधूषित हो चुकी है। ऊंच-नीच की दीवारें अब जातिगत खाइयों में तब्दील होने लगीं हैं। ईमानदाराना बात तो यह है कि बांटने और काटने वाले दो नहीं है बल्कि एक ही हैं। नियम बनाने वाले ही नियमों को तोडते हैं। पहले नियम बनाओ, फिर नियमों को डर दिखाओ और फिर नियम बनाने के वास्तविक लक्ष्य को हासिल करने के लिए उसे पर्दे के पीछे से तोड दो। अब तो आस्था के आसमान में चमकती सच्चाई को ढकने की कोशिश करने वाले अनगिनत चील-कौवे पंख फडफडाते दिखाई देने लगे हैं। वास्तविक आस्था तो गरीब की झोपडी में पैदा होते ही मार दी जाती है। कहीं धन की चाकू से तो कहीं बल की तलवार से, कहीं सत्ता के भाले से तो कहीं मजबूरी की बरछी से किस्तों में कत्ल होती इंसानियत अपनी बदहाली पर जार-जार आंसू बहाती देखी जा सकती है।

बुलडोजर कार्रवाई न्याय नहीं नफरत व कुंठा की पराकाष्ठा

अब जबकि अदालत स्वयं यह कह चुकी है कि-किसी भी सभ्य समाज में बुलडोजर के जरिए इंसाफ नहीं होना चाहिए, ऐसे में सत्ताधीशों को भी सोचना पड़ेगा कि वे भी स्वयं को एक सभ्य समाज के सभ्य नेता के रूप में पेश करें। धर्म जाति के अनुसार या इसके मद्देनजर पक्षपात पूर्ण या विद्वेषपूर्ण फैसले लेना निष्चित रूप से किसी सभ्य समाज के सभ्य नेता की पहचान हरगिज नहीं। सर्वोच्च न्यायायलय के फैसले से एक बार फिर स्पष्ट हो गया है कि बुलडोजर कार्रवाई न्याय के लिये नहीं बल्कि यह नफरत व कुंठा की पराकाष्ठा है।

तनवीर जाफरी
लेखक

भारतीय राजनीति का स्वरूप अब बदल चुका है। अब हाथ जोड़कर विनम्रता प्रदर्शित करते नेताओं का युग शायद चला गया। कम से कम आज के दौर के नेताओं के तेवर उनके मुंह से निकलने वाले जहरीले शब्द बाणों, उनकी नीयत व कार्यशैली आदि को देखकर तो यही लगता है। खासतौर पर गत एक दशक से जब से दक्षिणपंथी शक्तियों के हाथों में देश की सत्ता आई है तब से केंद्र व अनेक राज्य सरकारों द्वारा कई ऐसे फैसले लिये गये जिनके कारण देश ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में भारतीय तर्ज-ए-सियासत की खूब आलोचना हुई। भारतीय जनता पार्टी शासित विभिन्न राज्य सरकारों का ऐसा ही एक मनमाना व अमानवीय निर्णय था ह्यबुलडोजर न्यायह्न। हालांकि देश की विभिन्न अदालतों द्वारा पहले भी इस विषय पर संज्ञान लिया जा चुका है। परन्तु पिछले दिनों देश के सर्वोच्च न्यायलय ने इस सम्बन्ध में नये व सख़्त दिशा-निर्देश के जारी किये और कहा कि उसका यह आदेश हर राज्य में भेजा जाए और सारे अधिकारियों को इसके बारे में बताया जाए। सर्वोच्च न्यायालय की जस्टिस बीआर गवई और जस्टिस केवी विश्वनाथन की दो जजों की पीठ ने कहा है कि किसी व्यक्ति के घर या संपत्ति को केवल इसलिए तोड़ना कि वह अपराधी है या उन पर अपराध के आरोप हैं, कानून के खिलाफ है। न्यायालय ने कहा कि घर या कोई जायदाद तोड़ने से पहले कम से कम 15 दिन का नोटिस देना होगा। अगर किसी राज्य के कानून में इससे लंबे नोटिस का प्रावधान हो तो उसका पालन करना होगा। यह नोटिस रजिस्टर्ड पोस्ट से देना होगा। इसके साथ ही कथित गैर कानूनी ढांचे पर भी इस नोटिस को चिपकाना होगा। नोटिस पर पहले की तारीख न दी जाए। इसके लिए नोटिस की एक कॉपी कलेक्टर/ज़िला मजिस्ट्रेट को भी ईमेल पर भेजनी होगी। सर्वोच्च न्यायालय के दिशा-निर्देश में कहा गया है कि नोटिस में ये भी लिखना होगा कि कौन से कानून का उल्लंघन हुआ है, इस मामले में सुनवाई कब होगी। और जब सुनवाई हो तो उसका पूरा विवरण भी रिकॉर्ड करना होगा। न्यायालय के दिशा-निर्देश में यह भी कहा गया है कि सुनवाई करने के बाद अधिकारियों को अपने आदेश में वजह भी बतानी होगी। इसमें ये भी देखना होगा कि किसी संपत्ति का एक हिस्सा गैर कानूनी है या पूरी संपत्ति ही गैर कानूनी है। न्यायालय के अनुसार यदि तोड़-फोड़ की जगह, जुमार्ना या और कोई दंड दिया जा सकता है तो वह दिया जाएगा। और यदि कानून में संपत्ति तोड़ने या गिराने के आदेश के खिलाफ कोर्ट में अपील करने का प्रावधान है तो उसका पालन किया जाना चाहिए। दिशा-निर्देश के मुताबिक अगर ऐसा प्रावधान नहीं भी है, तो आदेश आने के बाद संपत्ति के मालिक/मालकिन को 15 दिन का समय मिलेगा ताकि वे स्वयं ही गैर कानूनी ढाँचे को सही कर लें। यदि ऐसा नहीं हो, तब ही इसे तोड़ने की कार्रवाई की जा सकती है। ह्यबुलडोजर न्याय ह्य को लेकर आये सर्वोच्च न्यायालय के इन राहत भरे निदेर्शों के बाद अब यह माना जा रहा है कि इस महत्वपूर्ण फैसले से बुलडोजर से की जा रही विध्वं स की गैर-कानूनी कार्रवाइयों पर अब रोक लगेगी। गौरतलब है कि उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, मध्य प्रदेश, राजस्थान, असम, हरियाणा जैसे अनेक भाजपा शासित राज्यों में गत एक दशक के दौरान सैकड़ों घरों व व्यवसायिक प्रतिष्ठानों को बुलडोजर न्याय के नाम पर जमींदोज किया जा चुका है। सरकारें व प्रशासन खुद ही न्यायलय की भूमिका अदा करता रहा है। किसी के मकान को इसलिये ध्वस्त कर दिया गया कि वह किसी आरोपी का मकान है। तो किसी मकान या भवन को इसलिये गिरा दिया गया कि वह अनधिकृत निर्माण है, उसके पास नक़्शा व निर्माण की अनुमति नहीं है, आदि। दरअसल इस तरह की कार्रवाई से पहले मौजूदा सत्ताधीश के तेवर व उनके शब्दों पर यदि गौर करें तो स्वयं ही साफ हो जाता है कि सरकार व प्रशासन द्वारा बुलडोजर कार्रवाई कोई न्याय की मिसाल कायम करने के लिये नहीं की जाती थी। बल्कि इसके पीछे साम्प्रदायिक व जातिवादी कुंठा काम कर रही थी। यही वजह है कि पूरे देश में अब तक जितनी भी बुलडोजर कार्रवाइयां हुई हैं उनमें सबसे अधिक भवनों का ध्वस्तीकरण एक ही समुदाय के लोगों का ही हुआ है। हद तो यह है कि मध्य प्रदेश में एक घटना तो ऐसी भी हुई कि एक आरोपी किसी किराये के मकान में रहता था। परन्तु इस कुंठाग्रस्त सरकार व प्रशासन ने नफरत की आग में जलते हुये उस मकान को भी ध्वस्त कर दिया। जहाँ तक अवैध निर्माण बताकर किसी भवन को गिराने का विषय है तो इस सम्बन्ध में समाजवादी पार्टी नेता अखिलेश यादव द्वारा उत्तर प्रदेश विधान सभा में उठाये गये इस सवाल की भी अनदेखी नहीं की जा सकती जिसमें वे कई बार पूछ चुके हैं कि क्या उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री निवास का नक़्शा पारित है? यदि है तो कहाँ है, किसके पास है, किसने देखा है? अखिलेश के कहने का मतलब साफ है कि जिस भवन में बैठकर लोगों के भवन अवैध बताकर गिरवाये जा रहे हैं वही भवन अवैध रूप से निर्मित है। परन्तु दरअसल बुलडोजर न्याय के पीछे मकसद न्याय का हरगिज नहीं बल्कि यह कार्रवाई सत्ताधीशों के मुंह से समय समय पर निकलने वाले उनके शब्द बाणों को ही अमल में लाने का एक तरीका है। अन्यथा आज तक इतिहास में किसी मुख्यमंत्री ने हम मिट्टी में मिला देंगे, ठोक देंगे, गर्मी उतार देंगे, बक्कल उतार देंगे, बटेंगे तो कटेंगे जैसे निम्नस्तरीय शब्दों का प्रयोग नहीं किया।

क्यों अमरीका में शरण मांग रहे हैं लाखों भारतीय

इसके बावजूद भारतीय ब्रेन इतनी बड़ी तादाद में जोखिम क्यों उठा रहा है? मोटा-मोटी सभी देशों से आर्थिक प्रवासी अवसरों की तलाश करते हैं जिसमें आऊटफ्लो और इनफ्लो की मात्रा देश की वास्तविक परिस्थितियों का बखान कर देती है। जिन 10 वर्षों में 15 लाख भारतीयों ने नागरिकता छोड़ने का आवेदन किया है उसी दौरान विगत पांच सालों में मात्र 5 हजार 220 विदेशियों को भारतीय नागरिकता दी गई है उनमें 4 हजार 552 यानि 87 फीसदी पाकिस्तानी, 8 फीसदी अफगानिस्तानी और 2 फीसदी बंगलादेशी हैं।

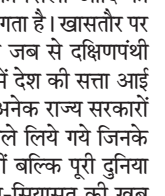

भूपेन्द्र गुप्ता
लेखक

एक समय था जब ब्रिगेडियर उस्मान को बंटवारे के समय पाकिस्तान का सेनाध्यक्ष बनाने का प्रस्ताव दिया गया था लेकिन उन्होंने यह कहकर इनकार कर दिया था कि भारत मेरा देश है इस धरती में मेरे बुजुर्ग दफन हैं। उन्होंने पाकिस्तान का सेनाध्यक्ष बनने की बजाय भारत का ब्रिगेडियर बने रहना स्वीकार किया और अपना नौसेरा बचाने के लिये शहीद हो गये। वह तो अनिश्चितता का समय था, जान-माल का खतरा था किंतु आज तो निश्चिंतता का समय है। संवैधानिक और नियामक संस्थायें देश को आजादी के प्रति सजग कर रहीं हैं ऐसे दौर में कुछ खबरें हैरान भी करतीं हैं और चिंतित भी। संसद में एक प्रश्न के उत्तर में बताया गया है कि पिछले 10 सालों में लगभग 15 लाख भारतीय नागरिकों ने देश की नागरिकता त्याग दी है। इससे भी जो ज्यादा चिंताजनक आंकड़ा है वह यह कि अमेरिका में शरण मांगने वाले भारतीयों की संख्या में 855 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। उल्लेखनीय है कि अमेरिका में शरण मांगने वाले दो तरह से शरण के लिए आवेदन करते हैं एक तो वह जिन्हें एफर्मेटिव कहा जाता है और दूसरा वे जिन्हें डिफेंसिव कहा जाता है। डिफेंसिव यानि वे जो सुरक्षा की दृष्टि से अमेरिका में शरण की गुहार लगाते हैं। अमेरिका की होमलैंड सिक्योरिटी डिपार्टमेंट की इमीग्रेंट एनुअल फ्लो रिपोर्ट बताती है कि 2023 में अमेरिका में शरण चाहने वाले आवेदकों में 41हजार 330 भारतीय शामिल थे जो कि 2022 की तुलना में 855 फीसदी ज्यादा हैं और भी आश्चर्यजनक बात यह है कि इसमें से आधे आवेदक गुजरात राज्य के हैं। जहां 2014 के बाद समृद्धि का विस्फोट हुआ है। समझना जरूरी है कि उन भारतीयों ने क्यों कर सुरक्षा एसाईलम के लिये आवेदन किया है? वर्ष 2022 में शरणार्थी के रूप में आवेदन करने वाले 14 हजार 570 भारतीयों में से 9200 ने डिफेंसिव एसाईलम यानि सुरक्षा शरण का आवेदन किया है। भारत की अर्थव्यवस्था के उछालें भरने के दावे, आम नागरिक के लिये सुरक्षा की गारंटी और बेहतर अवसरों के प्रचार के बीच भी अगर 41हजार 330 नागरिक अमरीका में शरण मांग रहे हैं और उनमें भी 50% से अधिक सुरक्षा कारणों से तो यह पड़ताल का विषय होना ही चाहिए? इन सुरक्षा शरण चाहने वाले भारतीयों को देश में क्या खतरा लग सकता है? उनमें से आधे उस राज्य से क्यों हैं जिसमें सर्वाधिक विकास के दावे किये जा रहे हैं? एलपीआर रिपोर्ट के अनुसार अमरीका में लगभग 28 लाख भारत में जन्मना नागरिक रहते हैं जो मेक्सिको में पैदा हुए अमरीकी नागरिकों के बाद सर्वाधिक संख्या है। अकेले 2022 में ही 1लाख 28 हजार 878 मेक्सीकन, 65 हजार 960 भारतीय, 53 हजार 413 फिलिपाईन नागरिकों को अमरीकी नागरिकता के लिये न्यूट्रिलाईज किया गया है। ऐसा माना जाता है कि सामान्यतःआर्थिक, शैक्षणिक अवसरों और राजनैतिक स्थिरता को देखते हुए सुरक्षित भविष्य की तलाश में लोग अपनी नागरिकता त्याग करने का कठिन फैसला लेते हैं। अमरीका में रहने वाले 28 लाख 31 हजार 330 भारतीयों में 42 फीसदी भारतीय, अमरीकन नागरिकता के लिये अपात्र हैं। इसके बावजूद भारतीय ब्रेन इतनी बड़ी तादाद में जोखिम क्यों उठा रहा है? मोटा-मोटी सभी देशों से आर्थिक प्रवासी अवसरों की तलाश करते हैं जिसमें आऊटफ्लो और इनफ्लो की मात्रा देश की वास्तविक परिस्थितियों का बखान कर देती है। जिन 10 वर्षों में 15 लाख भारतीयों ने नागरिकता छोड़ने का आवेदन किया है उसी दौरान विगत पांच सालों में मात्र 5 हजार 220 विदेशियों को भारतीय नागरिकता दी गई है उनमें 4 हजार 552 यानि 87 फीसदी पाकिस्तानी, 8 फीसदी अफगानिस्तानी और 2 फीसदी बंगलादेशी हैं। इसका अर्थ है कि भारतीय नागरिकता त्यागने वालों के मुकाबले भारतीय नागरिकता चाहने वालों की संख्या 1 प्रतिशत भी नहीं है। लंदन की हेनली एंड पार्टनर की एक रिपोर्ट के अनुसार लगभग 7 हजार सुपर रिच धनाढ्य भारत की नागरिकता छोड़ सकते हैं। सरकार ने राज्यसभा में बताया है कि वह इन लोगों की व्यावसायिक पृष्ठभूमि के बारे में अनभिज्ञ है। भारतीय टेक्स कानूनों, स्वास्थ्य सुविधाओं और इनवेस्टमेंट माईग्रेशन नागरिकता त्यागने की नयी वजह के रूप में सामने आ रही है। मेहुल चौकसी जैसे लोग इसी इवेस्टमेंट माईग्रेशन के नाम पर भाग खड़े हुए हैं। नागरिकता छोड़ने का एक कारण यह भी है कि कई देश दोहरी नागरिकता स्वीकार नहीं करते, दूसरा बड़ा कारण अन्य देशों में निर्वाध आवाजाही के लिये भारतीय पासपोर्ट पर केवल 60 देशों में वीजा फ्री या आगमन पर वीजा सुविधा उपलब्ध है जबकि अमरीकन पासपोर्ट पर 186 देशों में यह सुविधा प्राप्त है। जन्म से भारतीय विदेशी नागरिकों को भारत में ओसीआई(ओवरसीज सिटीजन आफ इंडिया के रूप में पंजीकृत किया जा सकता है) माना जाता है। गृह मंत्रालय ने सदन को जानकारी दी है कि आज ओसीआई की संख्या 1लाख 90 हजार है जो 2005 में मात्र 300 हुआ करती थी। इसका अर्थ है कि लगभग 8 फीसदी नागरिकता त्यागने वाले भारतीय ही ओसीआई के रूप में देश से जुड़े रहना चाहते हैं। अवसरों की तलाश और बेहतर जीवन की महत्वाकांक्षा मानव स्वभाव है किंतु जब अवसर देश से बड़ा बनने लगे तो मानिये चिंता का समय आ गया है।

उत्तर प्रदेश के उपचुनाव : योगी सरकार की प्रतिष्ठा दांव पर

मनोज कुमार अग्रवाल

देश में जनसंख्या के लिहाज से सबसे बड़े प्रदेश उत्तर प्रदेश की नौ विधानसभा सीटों पर 20 नवंबर को उपचुनाव के लिए वोटिंग होगी, 23 नवंबर को नतीजे आएंगे। लोकसभा चुनाव में जिस तरह से भारतीय जनता पार्टी को प्रदेश में झटका लगा और समाजवादी पार्टी उभरी, सभी की नजरें अब चुनाव पर टिकी हैं। राजनीतिक पंडित इस चुनाव को योगी आदित्यनाथ सरकार के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न बता रहे हैं, तो दूसरी तरफ अखिलेश यादव पर लोकसभा चुनाव के प्रदर्शन को दोहराने की चुनौती है। मायावती की बहुजन समाज पार्टी के चुनावी मैदान में आने से मुकाबला दिलचस्प हो गया है। प्रदेश की जिन 9 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव होंगे, उनमें सीसामऊ (कानपुर), कटेहरी (अंबेडकर नगर), कुंदरकी (मुरादाबाद) और करहल (मैनपुरी) इन चार सीटों पर 2022 के विधानसभा चुनावों में एसपी ने जीत दर्ज की थी तो खैर (अलीगढ़), फूलपुर (प्रयागराज) और गाजियाबाद सीटें बीजेपी के पास थीं। मंझवा (मिजार्पुर) में निषाद पार्टी और मुजफ्फरनगर की मीरापुर सीट पर आरएलडी ने जीत दर्ज की थी। सीसामऊ को छोड़कर बाकी सभी सीटें विधायकों के सांसद बनने के बाद खाली हुई हैं। सीसामऊ सीट विधायक इरफान सोलंकी को आपराधिक मामले में दोषी ठहराए जाने के बाद खाली हुई है। वैसे उत्तर प्रदेश में उपचुनाव के नतीजों से बहुत ज्यादा फर्क पड़ने वाला नहीं है। 403 सदस्यीय विधानसभा में बीजेपी के नेतृत्व वाली सरकार के पास 283 सीटों के साथ पूर्ण बहुमत है। एसपी और उसके सहयोगियों के पास सिर्फ 107 सीटें सीटें हैं। जानकारों के मुताबिक, अगर इस चुनाव में एसपी अपनी सीटें बरकरार रखने में सफल होती है, तो यह बीजेपी के लिए टेंशन बढ़ाने वाला संकेत होगा। समाजवादी पार्टी अपने पीडीए फॉमूर्ले यानी पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक के दम पर उपचुनाव में उतर रही है। लोकसभा चुनाव में एसपी ने इसी फॉमूर्ले की बदौलत बीजेपी को पछाड़ा था, पार्टी ने प्रदेश की 80 लोकसभा सीटों में से 37 पर जीत दर्ज की थी। एसपी के जीते हुए उम्मीदवारों में 25 पिछड़ी जातियों से थे। उपचुनाव में एसपी ने चार सीटों पर मुस्लिम उम्मीदवार उतारे हैं, जिनमें दो महिलाएं हैं, तीन सीटों पर ओबीसी और दो पर दलित समुदाय से आने वाले उम्मीदवारों को टिकट दिया गया है, जिनमें गाजियाबाद सीट भी शामिल हैं। एसपी ने कुल पांच महिला उम्मीदवारों को मैदान में उतारा है। लोकसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी के पीडीए फॉमूर्ले की कामयाबी को देखते हुए बीजेपी ने भी इस बार ओबीसी उम्मीदवारों पर दांव लगाया है। पार्टी ने चार ओबीसी, दो ब्राह्मण, एक राजपूत और एक दलित उम्मीदवार को मैदान में उतारा है। सहयोगी पार्टी राष्ट्रीय लोक दल (आरएलडी) ने भी मीरापुर से ओबीसी प्रत्याशी को टिकट दिया है। मीरापुर से दबंग पत्रकार अरशद राणा के चुनावी मैदान में उतरने से यहां मुकाबला काफी दिलचस्प हो गया है। कांग्रेस से टिकट नहीं मिलने पर राणा ने आननफानन में असदुद्दीन औवेसी की पार्टी से टिकट लिया और अब वे पतंग चुनाव चिन्ह के साथ मैदान में हैं। सीसामऊ विधानसभा सीट मुस्लिम बाहुल्य है। इस सीट पर मुकाबला समाजवादी पार्टी की उम्मीदवार नसीम सोलंकी और बीजेपी के सुरेश अवस्थी के बीच है। सोलंकी मुस्लिम समुदाय से आती हैं, जबकि अवस्थी ब्राह्मण हैं। बीएसपी ने भी ब्राह्मण कार्ड खेलते हुए वीरेंद्र शुक्ला को उम्मीदवार बनाया है, जिसके बाद कहा जा रहा है कि बीजेपी की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। इस सीट पर मुस्लिम, ब्राह्मण और दलित वोटर्स मुख्य भूमिका निभाते हैं। इतिहास भी बीजेपी के साथ नहीं है। 28 सालों से इस सीट पर कमल नहीं खिला है। बीजेपी ने 1991 में इस सीट पर पहली बार जीत दर्ज की थी, लेकिन 2012 से इस सीट पर समाजवादी पार्टी का कब्जा है। योगी के नारे बटेंगे तो कटेंगे के जवाब में अखिलेश यादव ने नारा दिया जुड़ेंगे तो जीतेंगे। उन्होंने कहा पीडीए की ताकत से घबराकर बीजेपी ने बटेंगे तो कटेंगे नारा दिया है। इसके लिए सबसे उपयुक्त कौन हो सकता था। इसके लिए हमारे मुख्यमंत्री जी को आगे लाया गया है। इस बार पीडीए लोगों को जोड़ेगा। इन सब के बीच बीएसपी ने नारा दिया बीएसपी से जुड़ेंगे तो आगे बढ़ेंगे, सुरक्षित रहेंगे। पार्टी की ओर से कहा गया है, उपचुनाव में बीएसपी के दमदारी से मैदान में उतरने से बीजेपी और एसपी की नींद उड़ी हुई है और अपनी कमियों पर से जनता का ध्यान बांटने के लिए बीजेपी द्वारा बटेंगे तो कटेंगे और एसपी एंड कंपनी के लोगों द्वारा जुड़ेंगे तो जीतेंगे आदि नारों को प्रचारित किया जा रहा है। बीएसपी पहली बार उपचुनाव में ताल ठोक रही है। पार्टी ने सभी 9 सीटों पर उम्मीदवार उतारे हैं। पिछले कुछ चुनावों में पार्टी का ग्राफ गिरा है। ऐसे में बीएसपी के लिए उपचुनाव अहम माना जा रहा है। मायावती पिछले 20 सालों में चुनाव लड़ने और जीतने के सभी फॉमूर्ले को आजमा चुकी हैं। अब नए प्रयोग के तौर पर उन्होंने उपचुनाव लड़ने का फैसला किया है। उनके लिए ये करो या मरो वाली स्थिति है। इस बार वो ये नहीं देखेंगी कि एसपी का नुकसान हो रहा या फिर बीजेपी का, वो चाहेंगी कि उनका वोट प्रतिशत एक निश्चित लेवल तक बना रहे, जिससे पार्टी की साख बनी रहे। दूसरी तरफ इंडिया गठबंधन की पार्टियों ने 43 सीटों पर जीत हासिल की है।

केंद्र सरकार से पेंशनर्स की माँग एडिशनल पेंशन आठवें वेतन आयोग का गठन एवं चिकित्सा सुविधाओं में सुधार

पेंशनर्स को एसोसिएशन की सदस्यता बढ़ाने पर दिया जोर

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन छपरा शाखा की मासिक बैठक 10 बजे दिन में पराशर कम्प्लेक्स भगवान बाजार में हुई। बैठक की अध्यक्षता कार्यकारी अध्यक्ष ओ पी पराशर ने किया। बैठक को संबोधित करते हुए उप सचिव डॉ.ए एच अंसारी ने छपरा शाखा की निरंतर हो रही उपलब्धियों पर खुशी जताई और पेंशनर्स को एसोसिएशन की सदस्यता बढ़ाने पर जोर दिया। भारत पेंशनर्स समाज के उनहत्तर वाँ एजीएम की मेजबानी पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन ने किया। जो गोरखपुर में आयोजित था। यह पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन के लिए गौरव की बात है। इसमें विभिन्न राज्यों के पेंशनर्स के अतिरिक्त पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन के सभी शाखाओं के पदाधिकारियों तथा सदस्यों ने भाग लिया। सभी पेंशनर्स ने एक स्वर से एडिशनल पेंशन , आठवें वेतन आयोग गठन अठारह महीने का मँहगाई राहत एरियर तथा चिकित्सा सुविधा में सुधार की माँग केंद्र सरकार से की और एजीएम में प्रस्ताव पारित किया। शाखा मंत्री मिथिलेश कुमार सिंह ने अपने संबोधन में पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन छपरा शाखा की उपलब्धियों को क्रमवार चर्चा की। जिन पेंशनर्स का जन्मदिन नवम्बर माह है , उनको बधाई कार्ड देकर लंबी आयु की कामना दी । उन्होंने आठवें वेतन आयोग गठन , अठारह महीने का मँहगाई रिलिफ का एरियर , एडिशनल पेंशन , एक तरह की चिकित्सा सुविधा सभी केंद्रीय कर्मचारियों को , पेंशन को आयकर मुक्त करना , एक्सग्रेसिया पेंशन को मिनिमम नौ हजार डीए सहित , नोशनल इंक्रीमेंट रेलवे पेंशनर्स का हेल्थ केयर अपग्रेडेशन , फिक्स मेडिकल एलाउंस तीन हजार डीए सहित आदि प्रमुख माँग को जोरदार तरीके से उठाया गया। सभी सदस्यों ने जिनका जन्मदिन था , उनको बधाई एवं शुभकामनाएं दिए। पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन का त्रैमासिक बुलेटिन सभी पेंशनर्स सदस्यों को वितरित किया गया। नये पेंशनर्स को एसोसिएशन की सदस्यता ग्रहण कराई गई। बैठक को संबोधित करते कार्यकारी अध्यक्ष ओ पी पराशर ने 65 , 70 , 75 वर्ष आयु पर क्रमशः 5 ,10 ,15 प्रतिशत अतिरिक्त भत्ता की माँग केंद्र सरकार से की। शाखा मंत्री मिथिलेश कुमार सिंह को छपरा शाखा का बेस्ट परफार्मेंस शील्ड एवं मेडल भारत पेंशनर्स समाज के एजीएम में दिए जाने पर पराशर ने बधाई दी। छपरा शाखा की उपलब्धियों पर खुशी जताई। पेंशनर्स की समस्याओं लिखित में एकत्र किया और रेलवे अस्पताल से रोगग्रस्त पेंशनर्स को उचित इलाज और दवा आपूर्ति की माँग की गई। उन्होंने ने कहा कि अब रेलवे अस्पताल से पेंशनधारियों को तीन माह की दवा इकट्ठे मिल रही है। यह पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन की देन है। बैठक को संबोधित करने वालों में मुख्य रुप से डॉ ए एच अंसारी , मिथिलेश कुमार सिंह , ओ पी पराशर , मुद्रिका प्रसाद , राजकुमार श्रीवास्तव , सुरेंद्र सिंह , पी के मांझी , सुधीर श्रीवास्तव , रामानंद महतो ,रामनारायण तिवारी आदि उपस्थित थे।

शिलान्यास स्वागत द्वार बुद्ध मुंडन स्थल में असामाजिक तत्वों द्वारा तोड़फोड़

प्रातः किरण, संवाददाता

बगहा। इंडो नेपाल सीमा से सटे नेपाल नवलपरासी जिला स्थित सुस्ता गांव पालिका के वार्ड नम्बर 5 अमोना घाट में शिलान्यास हुए बुद्ध मुंडन स्थल के स्वागत द्वार में असामाजिक तत्वों द्वारा तोड़ फोड़ किया गया।जिससे थोड़ी देर के लिए आसपास तनाव का माहौल बन गया जिसे नेपाल पुलिस ने फौरन एक्शन लेते हुए स्थिति को संभाल लिया।समाजसेवी रामप्रसाद बढ़ई ने बताया कि सुस्ता गांव पालिका द्वारा रखे गए बुद्ध विहार स्थल में असामाजिक तत्वों द्वारा तोड़ फोड़ कर आपसी सौहार्द बिगाड़ने की कोशिश की गई है।तोड़फोड़ के बाद घटनास्थल पर तोड़े गए स्वागत बोर्ड की जगह ठाढ़ी घाट मेला व्यवस्थापन समिति के फ्लेक्स बोर्ड को रख दिया गया है।हालांकि की गांव वालों ने इस घटना की निंदा करते हुए सम्बंधित थाना रामनगर चौकी में मामला दर्ज करा दिया गया है। बताते की अमोना घाट बुद्ध धर्मावलियों के आस्था का केंद्र है।बताते गौतम बुद्ध कपिलवस्तु से भारत स्थित बोध गया जाने के क्रम में इसी स्थान पर अपना मुंडन कराया था।इस स्थान पर भगवान बुद्ध का मुंडन स्थल है जहां श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है।हालांकि इस जगह से हटकर शिलान्यास किए गए स्वागत द्वार पर तोड़फोड़ किया गया है।पुलिस सूत्रों की माने तो असामाजिक तत्वों की खोजबीन की जा रहा है।

संक्षिप्त खबरें

लापरवाह दोनों बीज विक्रेताओं का खेल खत्म, अब किसानों को मिलेगा समय पर बीज

प्रातः किरण, संवाददाता

डोरीगंज। सदर प्रखंड में बीज वितरण की जिम्मेदारी निभाने वाले दो प्रमुख बीज विक्रेताओं को गंभीर लापरवाही के आरोप में तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है। जिला कृषि कार्यालय द्वारा जारी एक आदेश में यह स्पष्ट किया गया है कि बजरंग मशीनरी स्टोर्स, छपरा और गणपति फर्टिलाइजर, मीना को खरीफ 2024-25 के लिए सदर प्रखंड में बीज वितरण की जिम्मेदारी सौंपी गई थी, लेकिन दोनों विक्रेता समय पर बीज वितरण स्थल पर उपस्थित नहीं होते थे, जिसके कारण किसानों को बीज उपलब्ध नहीं हो पा रहा था। जिससे परेशान किसानों की लगातार शिकायतों के बाद विभाग ने तीन स्तरीय जांच टीम का गठन किया था, जिसने अपनी रिपोर्ट में यह स्पष्ट किया कि गणपति फर्टिलाइजर और बजरंग मशीनरी स्टोर्स, दोनों विक्रेता अपनी जिम्मेदारी से बचते हुए समय पर बीज वितरण नहीं कर रहे थे। दोनों विक्रेताओं की लापरवाही के कारण न केवल किसानों को परेशानियों का सामना करना पड़ा, बल्कि विभाग की छवि भी खराब हुई ।वहीं जिला कृषि विभाग के निर्देश के मुताबिक, अब बीज वितरण की जिम्मेदारी आनन्द फर्टिलाईजर को सौंपी गई है। जिसमें आनन्द फर्टिलाईजर को यह सख्त आदेश दिया गया है कि वे तुरंत कार्य शुरू करें और किसानों को बीज उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें।

शादी की नीयत से दो युवतियों को भगाया, प्राथमिकी दर्ज

प्रातः किरण, संवाददाता

दरियापुर। प्रखंड क्षेत्र के दो अलग अलग गांवों से शादी की नीयत से दो युवतियों को भगा ले जाने का मामला प्रकाश में आया है ।इस संबंध में दोनों के परिजनों ने थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई है ।महम्मदपुर गांव की एक युवती की मां ने धनंजय सिंह सहित तीन लोगों को आरोपित करते हुए कहा है कि उसकी पुत्री को शादी की नीयत से सभी आरोपी बहला फुसला कर भगा ले गए हैं ।वहीं मनपुरा की एक युवती के पिता ने आरोप लगाया है कि उसी के गांव का सूरज कुमार उसकी पुत्री को बहला फुसला कर अपने घर ले गया ।फिर चार अन्य लोगों के सहयोग से उसे शादी की नीयत से अन्यत्र लेकर चला गया है ।हालांकि की प्रेम प्रसंग में दोनों के भागने की चर्चा है ।पुलिस दोनों युवतियों की बरामदगी में लग गई है।

दो वारंटी गिरफ्तार

चनपटिया। सिरिसिया थाने की पुलिस ने समकालिन अभियान के दौरान दो वारंटी को गिरफ्तार किया है। सिरिसियां थाना प्रभारी मदन कुमार मांझी ने बताया की गुप्त सूचना के आधार क्षेत्र के विभिन्न जगहों पर छापेमारी की गई। जिसके दौरान फरार दो वारंटी गरभुआ लाला टोला गांव निवासी रामजी राम व असोक राम को उसके गांव से गिरफ्तार कर बेतिया न्यालय के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए भेज दिया गया।

परसा में दूसरे दिन अध्यक्ष पद के लिए छह अभ्यर्थियों ने किया नामांकन

परसाः परसा पुलिस की चाक चौबंद सुरक्षा व्यवस्था के बीच दूसरे दिन परसा में पैक्स चुनाव के लिए नामांकन कार्य संपन्न हुआ। निवार्ची पदाधिकारी सह परसा बीडीओ राकेश कुमार ने बताया कि पैक्स अध्यक्ष पद के लिए छह अभ्यर्थियों ने नामांकन पर्चा दाखिल किया ।जबकि प्रबंध कार्यकारिणी सदस्य के लिए 27 अभ्यर्थियों ने नामांकन किया। दूसरे दिन कई पंचायतों से निवर्तमान पैक्स अध्यक्ष दूसरे या तीसरी बार अध्यक्ष पद पाने के लिए अपने समर्थकों के हुजूम के साथ नामांकन पत्र दाखिल किए। वहीं कई नए चेहरे भी नामांकन चाक चौबंद सुरक्षा व्यवस्था के बीच दूसरे दिन परसा में पैक्स चुनाव के लिए नामांकन कार्य संपन्न हुआ। निवार्ची पदाधिकारी सह परसा बीडीओ राकेश कुमार ने बताया कि पैक्स अध्यक्ष पद के लिए पचलख पैक्स से निवर्तमान पैक्स अध्यक्ष संतोष कुमार सिंह, बहरमारर से संजय कुमार सिंह की पत्नी मदोर देवी,धर्मजीत कुमार सिंह,पचरुखी पैक्स से मनोरंजन कुमार चौधरी,रामजीनिस सिंह, व सगुनी पैक्स से ब्रजेश सिंह की पत्न ी निवर्तमान पैक्स अध्यक्ष अंशु देवी ने दो प्रतियों में नामांकन पर्चा दाखिल किया । जबकि प्रबंध कार्यकारिणी सदस्य के लिए 27 अभ्यर्थियों ने नामांकन किया। दूसरे दिन कई पंचायतों से निवर्तमान पैक्स अध्यक्ष दूसरे या तीसरी बार अध्यक्ष पद पाने के लिए अपने समर्थकों के हुजूम के साथ नामांकन पत्र दाखिल किए।

27 दिसंबर को जिला कार्यकारिणी की बैठक होगी

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। जिला जदयू अध्यक्ष अल्ताफ आलम राजू की अध्यक्षता में सारण प्रमंडल प्रभारी रणविजय कुमार की उपस्थिति में जिला जदयू कोर कमिटी की बैठक जिला जदयू कार्यालय डाक-बंगला रोड छपरा में महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई बैठक में मुख्य रूप से विधान पार्षद वीरेंद्र नारायण यादव,पूर्व मंत्री गौतम सिंह, पूर्व मंत्री मुनेश्वर चौधरी, पूर्व उपसभापति सलीम परवेज,जदयू उपाध्यक्ष सह प्रांतीय विधानसभा प्रभारी बैजनाथ प्रसाद सिंह विकल ने अपने अपने विचार रखे

बैठक में आगामी 8 दिसंबर 2024 (रविवार)को सारण जिला जदयू कार्यकर्ता सम्मेलन को लेकर विस्तार से चर्चा की गई सर्वप्रथम जिले के प्रवेश द्वार सोनपुर से लेकर छपरा तक 40 जगहों पर तोरणद्वार लगाने को लेकर व्यापक चर्चा हुई साथ ही सभी बूथों से बूथ अध्यक्ष बूथ सचिव एवं समर्पित कार्यकर्ता साथियों को इस कार्यक्रम में प्रमुखता के साथ शामिल होने पर बल दिया गया । मुख्य रूप से जिला सम्मेलन में माननीय मुख्यमंत्री के नीति एवं कामों को लेकर व्यापक चर्चा किया गया साथ ही माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा किए गए जनकल्याणकारी कार्यों को जन-जन तक पहुंचने पर भी बल दिया जायेगा 27 दिसंबर को पटेल छात्रावास में जिला कार्यकारिणी की बैठक होगी जिसमें जिला कार्यक्रता सम्मेलन की तैयारी की समीक्षा की जाएगी पूर्व जिला अध्यक्ष दिनेश सिंह, सुधाकर भारद्वाज,जयप्रकाश यादव,महेश सिंह,ओमप्रकाश शर्मा,कार्यलय प्रभारी ब्रजेश सिंह, ई प्रभास शंकर,संभू सिंह जिला प्रवक्ता मोहम्मद फिरोज आदि उपस्थित थे।

नगर निगम में करोड़ों के भ्रष्टाचार पर हाईकोर्ट ने कसा शिकंजा:गरिमा

पटना हाईकोर्ट में दायर सी डब्ल्यूजेसी याचिका में दर्ज आरोपों पर तीन माह के अंदर जांच कर कार्रवाई करने का आदेश

प्रातः किरण, संवाददाता

बेतिया। नगर निगम में बीस करोड़ से भी अधिक के भ्रष्टाचार के आरोपों की बीते करीब एक साल से अनदेखी पर पटना हाईकोर्ट ने बड़ी कार्रवाई की है। करीब एक साल पहले से महापौर गरिमा देवी सिकारिया के द्वारा अपर मुख्य सचिव के यहां दिया गए आवेदन के गंभीर आरोपों की पूरी जांच और दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई का आदेश दिया है। यहां उल्लेखनीय है कि बीते वर्ष जुलाई 2023 से ही महापौर द्वारा विभाग को आवेदन सौंप कर नगर निगम बोर्ड का चुनाव होने से पूर्व तत्कालीन नगर आयुक्त शंभू कुमार ने विधि मान्य व्यवस्था की धज्जियां उड़ाते हुए अनेक विवादास्पद फैसले और वित्तीय नियमन के विरुद्ध अनुबंध के विरुद्ध जांच की अपील की थी। करोड़ों की खरीदारी और बिना किसी निविदा के ही करोड़ों के विकास कार्य आदि के नाम पर अनेक अनाधिकार तथा विवादास्पद निर्णय लिया था। महापौर ने दिए पत्र में कुल करीब बीस करोड़ का घपला और बंदरबांट से संबंधित पार्षद गण के दर्जनाधिक आरोपों से सहमत होकर आरोपित तत्कालीन नगर आयुक्त शंभू कुमार और उनके दोषी सहयोगियों के खिलाफ विधि सम्मत कार्रवाई का अनुरोध महापौर ने किया था। नगर विकास एवम आवास विभाग के तत्कालीन अपर मुख्य सचिव अरुणेश चावला की सख्त आदेश पर अमान्य तरीके से चयनित आउट सोर्सिंग सफाई एजेंसी ह्लपाथेयह्व का अनुबंध पूर्ववर्ती नगर आयुक्त शंभू कुमार ने ही रद्द कर दिया। वही श्री चावला का तबादला हो जाने के बाद संबंधित आरोपों जांच और दोषियों पर कार्रवाई अब तक पूरी नहीं की जा सकी है। तत्कालीन नगर आयुक्त का बीते माह तबादला भर हुआ है। इसकी जानकारी देते हुए महापौर गरिमा देवी सिकारिया बतातीं हैं कि नगर निगम की सशक्त समिति सदस्य और करोड़ों के भ्रष्टाचार के विरुद्ध उनकी जारी लड़ाई में सशक्त स्थायी समिति के निर्णय के आलोक में उनके सहयोगी नगर पार्षद मनोज कुमार की याचिका सी डब्ल्यू जे सी - 17004/2024 का निष्पादन करते हुए न्यायमूर्ति नवनीत कुमार पांडेय के एकल पीठ द्वारा पारित आदेश की तिथि 12 नवंबर 2024 से तीन माह के अंदर विभागीय अपर मुख्य सचिव को सौंपे गए आवेदन में वर्णित आरोपों की अपने स्तर से जांच कर दोषियों के विरुद्ध विधि सम्मत कार्रवाई करने का आदेश पारित किया है। इस आदेश का स्वागत करते हुए महापौर गरिमा देवी सिकारिया बतातीं हैं कि हाईकोर्ट का यह आदेश भ्रष्टाचार और नगर निगम क्षेत्र की जनता जनार्दन की हकमारी और भ्रष्टाचार के विरुद्ध उनकी जारी लड़ाई में यह पहली जीत है। नगर निगम को भ्रष्टाचार मुक्त और समग्र विकास का संवाहक बनाए बिना वे रुकने या झुकने वाली नहीं हैं।

जातीय जनगणना मे 4 प्रतिशत दिखाकर कोइरी समाज के साथ अत्याचार किया है:नागमणि

प्रातः किरण, संवाददाता

बनियापुर । बिहार मे कोइरी समाज की 12 प्रतिशत जनसंख्या है ,सरकार ने पदाधिकारियो की मिलीभगत जातीय जनगणना मे 4 प्रतिशत दिखाकर कोइरी समाज के साथ अत्याचार किया है,अपमानित करने का काम किया है,यह बाते भारत सरकार के पूर्व मंत्री नागमणि ने पैगम्बरपुर सब्जी मंडी मे अपने 23 फरवरी को पटना के गांधी मैदान मे आयोजित कोइरी आक्रोश महारैला की तैयारी कार्यक्रम के प्रखंड स्तरीय बैठक को संबोधित करते कही,उन्होंने कहा कि नितीश कुमार जिसकी जितनी भागीदारी उसकी उतनी हिस्सेदारी के तर्ज पर काम कर रहे है तो हमारे साथ इतनी बड़ी धोखाबाजी हम बतदास्त नही करेंगे,23 फरवरी से पहले हमारी मांगे पुरी नही हुई तब कोइरी समाज नितीश कुमार का बहिष्कार करेगा,हम पूरे बिहार मे घूम कर नित्य तीन चार सभाएं कर रहे है ।समाज मे व्यापक जन आक्रोश है ।कोइरी समाज के साथ अत्याचार पर बिहार मे सरकार के प्रति आक्रोश है ।उन्होंने पटना के महा रैला मे शामिल होने के लिए आग्रह किया ।वही कार्यक्रम का अध्यक्षता करते वरिय नेता नवल किशोर कुशवाहा ने भी सरकार के इस उपेक्षा भरी रवैए पर खेद व्यक्त करते सरकार के नीतियों का विरोध किया ।मौके पर प्रो राजू कुमार ह्मोहन प्रसाद नंदू प्रसाद प्रकाश कुशवाहा अजय प्रसाद राम कुमार प्रसाद मदन प्रसाद सहित सैकड़ो लोग शामिल थे।

जिला स्तरीय प्रतिभा खोज परीक्षा हुई 9 केन्द्र पर सम्पन्न, हजारों छात्र- छात्राएं हुए शामिल

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। ग्यारहवीं जिला स्तरीय प्रतिभा खोज परीक्षा रविवार को संपन्न हुआ। जिसमें जिले भर से लगभग 4000 से अधिक संख्या में छात्राओं ने विभिन्न परीक्षा केंद्रों पर कदाचार मुक्त परीक्षा दिया। आयोजन समिति के सचिव शशिकांत सर परीक्षा का निरीक्षण करते दिखे। इन्होंने बताया कि परीक्षा जिला के 9 केंद्रों पर आयोजित की गई है। ए, बी, सी, डी तथा ई, पांच ग्रुप में परीक्षा आयोजित किया गया। ग्रुप ए में जहां दशम के विद्यार्थी शामिल हुए। इस बार बारहवीं के छात्र भी शामिल हुए। वहीं ग्रुप बी में नवम के विद्यार्थी ग्रुप सी से 8 क्लास के विद्यार्थी ग्रुप डी से 7 क्लास के विद्यार्थी तथा ई ग्रुप से 4, 5 तथा 6 के विद्यार्थी शामिल हुए। 7 8 9 तथा 10 वर्ग का प्रश्न सिलेबस पर आधारित था जिसमें विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, हिंदी व्याकरण, अंग्रेजी व्याकरण जीके के प्रश्न पूछे गए थे। कुंदन तिवारी ने कहा कि परीक्षा आयोजित करने में लगभग 3 महीने कड़ी मेहनत करनी पड़ती है।

तब जाकर यह आयोजन संभव हो पाता है। परीक्षा का संचालन बिशेश्वर सेमिनरी के प्रचार्य सह परीक्षा केंद्र पर्वेक्षक राजेश ओझा सर ने प्रतियोगी छात्रों के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों मैं प्रतिभाओ की कमी नहीं है बस उन्हे सही मार्गदर्शन व उचित की आवश्यकता है । परीक्षा केंद्राधीक्षक कुंदन तिवारी की देखरेख में हुई। अर्जुन सिंह ने बताया कि कम उम्र में ही प्रतियोगी परीक्षा में प्रतिभाग करने का अनुभव दिलाने के लिए यह परीक्षा आयोजित की गई। परीक्षा में शामिल होकर बच्चों को आगे चलकर बड़ी प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रतिभाग का अनुभव मिल सकेगा। इससे उनमें परीक्षा को लेकर किसी भी प्रकार का डर नहीं होगा। ऐसी परीक्षाएं बच्चों के लिए बेहद जरूरी हैं। मौखिक परीक्षा के लिए दिसंबर में 22 तारीख का समय निर्धारित किया गया है इस बार मौखिक परीक्षा सह पुरस्कार वितरण समारोह श्रीधर बाबा दारोगा प्रसाद राय इंटर कालेज भेल्दी में आयोजित किया जाएगा। इस दौरान मुख्य रूप से अजित सर , विंदिया जयसवाल , ई. विजय राज , सर्वजित कुशवाहा, रामबाबू सिंह , दिपक कुमार भारती, नितिश कुमार , मनोज सर, मौजूद थे।

नवलपरासी जिला में बृहत बिरहा गीत संगीत का दो दिवसीय कार्यक्रम सम्पन्न

प्रातः किरण, संवाददाता

बगहा। इंडो नेपाल सीमा नवलपरासी जिला स्थित ठाढ़ी घाट में सीमा से सटे सुस्ता गांव पालिका वार्ड नम्बर 5 स्थित अनोमा ठाढ़ी घाट में मंगलवार और बुधवार को सदर मुकाम जिला नवलपरासी में बृहत बिरहा गीत संगीत कार्यक्रम संपन्न हो गया। यह प्रोग्राम अनोमा घाट निर्माण उपभोक्ता समिति के सौजन्य से किया गया ।जिसमे आजमगढ़ के बिरहा महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजकुमार यादव और गायिका काजल कंचन के द्वारा आयोजित संगीत कार्यक्रम में प्रस्तुति की गई,जिसे सुन श्रोता झूम उठे ।इस कार्यक्रम में नेपाल के माननिय मुख्य अतिथि पूर्व कानून मंत्री धुर्व बहादुर प्रधान,पूर्व मंत्री घनश्याम यादव,रास्ट्रीय संविधान सभा सदस्य रामलखन हरिजन व समाजसेवी छिनक प्रसाद समेत बड़ी संख्या लोग शामिल हुए।

कार्यक्रम के संयोजक सुग्रीव यादव ने बताया कि पहले दिन अमोना घाट और दूसरे दिन नवलपरासी सदर मुकाम में आयोजित हुए।

जिसमे भारत के सुप्रसिद्ध बिरहा गायकों ने अपने प्रस्तुति से सभी का मन मोह लिया।

उत्तरवारी पोखरा बेतिया से सीएस ने की बच्चे को ड्राप पिलाकर की पल्स पोलियो अभियान की शुरूआत

बेतिया(घनश्याम)। उत्तरवारी पोखरा बेतिया से सिविल सर्जन डॉ विजय कुमार ने बच्चे को पोलियो ड्राप पिलाकर पल्स पोलियो अभियान की शुरूआत की। मौके पर सिविल सर्जन ने कहा की पल्स पोलियो अभियान के तहत 0-5 साल तक के आठ लाख बच्चों को दो बूंद दवा पिलाई जायगी। उन्होंने जानकारी देते हुए कहा की विकलांगता से बचाव को पोलियो की दो बूंद आवश्यक है ।जिले में 17 नवम्बर से 21 नवम्बर 2024 तक पांच दिवसीय पोलियो अभियान चलाई जा रहीं है। जिसमें सभी निर्धारित आयु वर्ग को यह दवा पीना आवश्यक है, आज बच्चों को पोलियो के दो बूंद पिलाकर अभियान की शुरूआत अर्बन पीएचसी उत्तरवारी पोखरा के प्रांगण में किया गया है।

हम अपील करते हैं की इस अभियान को सफल बनाने के लिए हमारे टिकाकर्मी निष्ठा पूवर्क कार्य करते हुए इस अभियान को सफल बनायें। साथ ही उन्होंने सभी प्रखंड के चिकित्सा पदाधिकारी को निर्देश दिया की शाम मे इवनिंग ब्रीफिंग के बाद सभी रिपोर्ट समय से जिला को भेजे तथा नहीं कार्य करने वाले कर्मी का रिपोर्ट जिला को प्रेषित करें। अपर मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी डॉक्टर रमेश चंद्रा ने कहा कि हमारा लक्ष्य है कि 0 से 5 साल तक के बच्चों को घर घर जाकर पोलियो की खुराक अवश्य पिलाये। उन्होंने कहा कि हमारे जिला में 1441 घर-घर दल, 255 ट्रांजिट दल, 08 मोबाइल दल, 525 सुपरवाइजर के निगरानी में 118 सबडिपो के सहायता से 705779 घरो पर जा कर 803576 लक्षित बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाई जायगी। इस अभियान को सफल बनाने हेतु जिलास्तरीय और प्रखंडस्तरीय मॉनिटरिंग के लिए पदाधिकारीगण को लगाया गया है। इस अवसर पर एसीएमओ डॉक्टर रमेश चंद्रा, जिला प्रतिरक्षण पदाधिकारी डॉक्टर अवधेश कुमार सिंह, यूनिसेफ के एसएमसी राजीव कुमार, एसएमओ, डब्लूएचओ प्रतिनिधि व अन्य स्वास्थ्यकर्मी उपस्थित रहे।

अमृतांश कप सारण जिला क्रिकेट लीग प्रतियोगिता : त्रिशूल क्रिकेट अकादमी की शानदार जीत

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय ।रविवार को मढ़ौरा क्रिकेट अकादमी के मैदान में सारण जिला क्रिकेट लीग का भव्य उद्घाटन हुआ। इस आयोजन के मुख्य अतिथि अमितेश रंजन (एचडी होटल अमृतांश, छपरा खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किए साथ में संयुक्त सचिव चन्दन शर्मा रंजन प्रसाद यादव, सच्चिदानंद ओझा रिजवी राज, अमित कुमार गिरि, और आशु भारद्वाज रहे। इनके द्वारा पारंपरिक रूप से टूनामेंट का शुभारंभ किया गया। उद्घाटन के विशेष अवसर पर रोहित यादव, आदित्य मुकुल यादव, और आलोक ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

पहला मैच: त्रिशूल क्रिकेट अकादमी बनाम युवराज क्रिकेट अकादमी

उद्घाटन मैच त्रिशूल क्रिकेट अकादमी और युवराज क्रिकेट अकादमी के बीच खेला गया। युवराज क्रिकेट अकादमी ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का निर्णय लिया।

त्रिशूल क्रिकेट अकादमी की पारी

त्रिशूल क्रिकेट अकादमी ने 25 ओवर और 2 गेंद में कुल 160 रन बनाए। उनकी बल्लेबाजी का प्रदर्शन इस प्रकार रहाःकेशव शर्मा ने 23 गेंदों पर शानदार 33 रन बनाए।

अवधेश ने 18 गेंदों पर 28 रन, जिसमें उन्होंने 3 चौके लगाए।

मुकुल यादव ने 5 गेंदों पर तेज 12 रन बनाए ।युवराज क्रिकेट अकादमी की गेंदबाजी में रवि ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए 5 विकेट हासिल किए ।युवराज क्रिकेट अकादमी की पारी। 160 रनों का पीछा करने उतरी युवराज क्रिकेट अकादमी की टीम ने संघर्ष किया, लेकिन युनाइटेड क्रिकेट क्लब की पूरी टीम केवल 103 रनों पर ही सिमट गई ।उनकी बल्लेबाजी में सचिन ने 30 गेंदों पर महत्वपूर्ण 22 रन बनाए ।गेंदबाजी के क्षेत्र में भी सचिन का प्रदर्शन शानदार रहा, जहां उन्होंने 5 विकेट चटकाए ।त्रिशूल क्रिकेट अकादमी की ओर से गेंदबाजी में मुकुल यादव ने भी शानदार प्रदर्शन करते हुए 2 विकेट हासिल किए, जिससे युवराज क्रिकेट अकादमी की बल्लेबाजी लड़खड़ा गई ।त्रिशूल क्रिकेट अकादमी की जीत त्रिशूल क्रिकेट अकादमी ने यह मैच शानदार 57 रनों से जीता। उनकी गेंदबाजी और बल्लेबाजी दोनों में बेहतरीन समन्वय दिखा, जिसने उन्हें यह बड़ी जीत दिलाई।

मैन ऑफ द मैच

आज के मैच में शानदार प्रदर्शन करने वाले बंटी को ह्मैन ऑफ द मैचह्व का खिताब दिया गया। उनकी ऑलराउंड क्षमता और खेल में प्रभावशाली भूमिका ने उनकी टीम को यह जीत दिलाने में अहम योगदान दिया ।त्रिशूल क्रिकेट अकादमी ने न केवल 160 रनों का मजबूत स्कोर खड़ा किया, बल्कि अपनी गेंदबाजी से युवराज क्रिकेट अकादमी को दबाव में रखा। रवि और सचिन जैसे खिलाड़ियों के ऑलराउंड प्रदर्शन के बावजूद, युनाइटेड क्रिकेट क्लब का प्रदर्शन लक्ष्य का पीछा करने में असफल रहा। त्रिशूल की गेंदबाजी में मुकुल यादव के 2 विकेट और बल्लेबाजी में केशव शर्मा का योगदान उल्लेखनीय रहा ।इस टूनामेंट का आयोजन स्थानीय क्रिकेट प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने और उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने के उद्देश्य से किया गया है। मुख्य अतिथियों और खिलाड़ियों की उपस्थिति ने इस आयोजन को और भी भव्य और प्रेरणादायक बना दिया।

सारण जिला मदरसा संस्कृत एसोसिएशन संघ का चिंतन समारोह संपन्न

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। सारण जिला अंतर्गत सारण एवं मदरसा शिक्षक संघ के संयुक्त तत्वाधान में गुरुकुल संस्कृत उच्च विद्यालय छपरा के प्रांगण में अवकाश प्राप्त शिक्षकों एवं शिक्षित कर कर्मियों का सम्मान समारोह शाह चिंतन समारोह का आयोजन किया गया ' चिंतन समारोह की अध्यक्षता स्थानीय माननीय विधान पार्षद वीरेंद्र नारायण यादव एवं शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र के पूर्व प्रत्याशी इंजीनियर आनंद पुष्कर और बिहार प्रदेश संस्कृत माध्यमिक शिक्षक संघ के संयुक्त सचिव अवधेश प्रसाद सिंह और माध्यमिक शिक्षक संघ सारण के जिला सचिव विद्यासागर विद्यार्थी ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का विद्वत उद्घाटन किया ' उद्घाटन के अवसर पर मुख्य अतिथि वीरेंद्र नारायण यादव ने कहा कि मैं हमेशा संस्कृत मदरसा शिक्षकों की लड़ाई के लिए सरकार से वातार्लाप करता हूं आप लोगों की जैसी भी समस्या होगी उसके समाधान के लिए मैं हमेशा सदन में आपकी आवाज बनकर हमेशा कार्य करूंगा ' शिक्षक नेता आनंद पुष्कर ने कहा कि मैं संस्कृत मदरसा के समस्याओं के लिए कुछ दिन पहले शिक्षा मंत्री से मिलकर विशुद्ध रूप से आपकी समस्या पर वातार्लाप किया और मैं संस्कृत मदरसा शिक्षकों को समान वेतन दिलाने के लिए हमेशा प्रयासरत था और रहूंगा 'बिहार प्रदेश संस्कृत माध्यमिक शिक्षक संघ के संयुक्त सचिव अवधेश प्रसाद सिंह ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि ऐसा कार्यक्रम हमेशा होते रहना चाहिए और मैं स्वयं संस्कृत शिक्षक का नेता होने के नाते मैं सरकार स्तर पर हमेशा आवाज उठाते रहा हूं और आप सभी के सहयोग से संघर्ष रूप से इस कार्य को करने के लिए मैं हमेशा तत्पर रहता हूं '।

चिंतन सिविल में संस्कृत मदरसा शिक्षकों के समस्याओं पर विशद विवेचना करते हुए संघ के अध्यक्ष सचिव और राज्य से आए संघ के संयुक्त सचिव ने कहा कि जिला स्तर पर संगठन को और मजबूत करने की जरूरत है और नए को को संघ में स्थान देने की जरूरत है इसके पूर्व संघ के तरफ से रिक्त पदों को भरने के लिए चिंतन शिविर में सभी की सहमति प्राप्त की गई सहमति के उपरांत ध्वनि मत से विभिन्न पदों पर शिक्षकों को संगठन के प्रभारी के रूप में नामित किया गया ' संघ के अध्यक्ष के रूप में गोपाल जी त्रिपाठी सचिव के रूप में रमेश नाथ मिश्रा संघ सचिव के रूप में विकास कुमार सिंह उपाध्यक्ष के रूप में सौरभ कुमार पांडे ,पूनम त्रिपाठी, मुनमुन मिश्रा, राकेश कुमार सिंह, सुभाष चंद्र रॉय, उप सचिव के पद पर अनिल कुमार पांडे और मुन्ना तिवारी परीक्षा प्रभारी में रानी कुमारी और अतुल कुमार चौबे, संगठन सचिव में अशोक कुमार झा , मीडिया प्रभारी निलेश कुमार त्रिपाठी, कार्यालय सचिव संजय कुमार राम और प्रभात कुमार' संघ के संरक्षण के रूप में सुरेंद्र सिंह आनंद पुष्कर सुलेश्वरी नाथ पांडे हरेंद्र सिंह सुरेंद्र ओझा अवधेश प्रसाद सिंह को संघ के तरफ से मनोनीत किया गया ' कार्यक्रम में सारण जिला के चार मदरसा के आए शिक्षक मोहम्मद शरीफ मोहम्मद सैफुल्लाह मोहम्मद अरशद को संघ के तरफ से सम्मानित किया गया ' जिसमें कार्यक्रम के अवसर पर सारण जिले के विभिन्न संस्कृत विद्यालय में मदरसा विद्यालय से आए शिक्षकों को अंग वस्त्र और पुष्प कुछ देकर सम्मानित किया गया जिसमें ललन पांडे बृजेंद्र पाठक भगवान ठाकुर सुरेंद्र ओझा सुरेश्वर नाथ पांडे उपेंद्र मिश्रा सहित दर्जनों अवकाश प्राप्त शिक्षक एवं शिकेतन एकेडमी उपस्थित थे '

गोपाल नारायण सिंह विश्वविद्यालय के तृतीय दीक्षान्त समारोह में पूर्व राष्ट्रपति ने कहा: बदलते भारत की तस्वीर में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका काफी सराहनीय

प्रातः किरण संवाददाता

सासाराम (रोहतास) भारत गणराज्य के 14वें राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द ने कहा है कि बदलते भारत की तस्वीर में महिलाओं एवं दबे कुचले समुदाय का शैक्षणिक विकास एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। उन्होंने कहा कि हमें शिक्षा के साथ-साथ अपनी संस्कृति और माटी से भी कसकर जुड़े रहना चाहिए ताकि कितनी भी विषम स्थितियां क्यों ना हो हम मजबू'' ती से उसका मुकाबला कर सकते हैं ।आज रोहतास जिले के जमुहार स्थित गोपाल नारायण सिंह विश्वविद्यालय के तृतीय दीक्षान्त समारोह में मुख्य अतिथि पद से संबोधित करते हुए श्री कोविन्द ने यहां अधिक संख्या में बेटियों के गोल्ड मेडल प्राप्त करने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह बढ़ते बिहार और विकसित होते भारत की निशानी है। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे बिहार के राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ अर्लेकर ने छात्रों का अहवान किया कि आप केवल नौकरी पाने वाली शिक्षा ग्रहण न करें बल्कि अपने शिक्षा से दूसरों को नौकरी प्रदान करने की क्षमता रखने का संकल्प लें । उन्होंने कहा कि आज लोग कृषि और व्यवसाय को अच्छी दृष्टि से नहीं देखते हैं जो की उचित नहीं है।

उन्होंने कई उदाहरण देते हुए कहा कि इंजीनियरिंग करने के बाद नौकरी छोड़कर लोग कृषि से अपनी आय को दुगनी कर रहे हैं और इस परिस्थिति में कई अन्य को रोजगार भी प्रदान कर रहे हैं। उन्होंने छात्रों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की तथा कुलाधीपति गोपाल नारायण सिंह की भूरि भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि ग्रामीण परिवेश में स्थित यह विश्वविद्यालय बिहार ही नहीं बल्कि राष्ट्र के शैक्षणिक मानचित्र पर स्थापित हो चुका है और निश्चित रूप से शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी संस्थान बनकर उभरा है ।कार्यक्रम को कुलाधिपति गोपाल नारायण सिंह ,बिहार के शिक्षा मंत्री सुनील कुमार ,भूमि राजस्व मंत्री दिलीप कुमार जायसवाल आदि ने भी संबोधित किया।

कार्यक्रम का संचालन गोपाल नारायण सिंह विश्वविद्यालय के कुल सचिव डॉक्टर प्रोफेसर धर्मेश श्रीवास्तव ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन संस्थान के सचिव गोविंद नारायण सिंह ने किया ।इस अवसर पर मंचाशीन सभी अतिथियों के अलावे कुलाध्यक्ष एवं छपरा विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉक्टर हरिकेश सिंह एवं लखनऊ विश्वविद्यालय के डॉक्टर संजय कुमार सिंह को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के आरम्भ में प्रबन्ध निदेशक त्रिविक्रम नारायण सिंह ने शिक्षा मंत्री एवं भू राजस्व मंत्री को पुष्प गुच्छ, प्रतीक चिन्ह एवम अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया। अवसर पर सभी संकाय के अध्यक्ष ,वरीय शिक्षक ,शिक्षकेत्तर कर्मचारी, उपाधि एवं पदक प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राए तथा उनके अभिभावक उपस्थित रहे।

गोपाल नारायण सिंह विश्वविद्यालय के तृतीय दीक्षान्त समारोह पर रंगारंग कार्यक्रम आयोजित

प्रातः किरण संवाददाता

सासाराम (रोहतास) गोपाल नारायण सिंह विश्वविद्यालय के तृतीय दीक्षान्त समारोह की संध्या में वाराणसी से आए कलाकारों ने अपने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।देवमंगल सभागार में अपने गायन,वादन और नृत्य की तिकड़ी से कलाकारों ने ऐसा जलवा विखेरा कि दर्शक देर रात तक जमें रहे।कार्यक्रम के संयोजक और कुलाधिपति के निजी सचिव योगेश उपाध्याय ने बताया कि युवा संगीत नाटक अकादमी पुरस्कृत प्रस्तुति निर्देशक रुद्र शंकर मिश्रा की संस्था के गुरु पंडित माता प्रसाद मिश्र की अगुवाई में कार्यक्रम आयोजित किया गया।इसमे कत्थक कलाकार के रूप में सुश्री सुनिधि पाठक, अनन्या सिंह, यशिका डोलवानी, उदिता विश्वास और नेहा सिंह ने प्रस्तुति दी।कार्यक्रम के दौरान ड्रम पर उदय शंकर मिश्रा, तबला पर श्रीकांत मिश्रा, गायन में राघवेन्द्र शर्मा और वायलिन पर हेमंत ने जोरदार प्रदर्शन करके सबका मन मोह लिया।दर्शक के रूप में कुलाधिपति गोपाल नारायण सिंह, मैडम कुलाधिपति श्रीमती शैल सिंह समेत परिवार के सदस्य गण,शिक्षक गण एवं भारी संख्या में छात्र छात्राएं मौजूद रहे।

एक संपूर्ण और समृद्ध गांव की पहचान है गांव में पुस्तकालय का होना : बंटी पाण्डेय

प्रातः किरण संवाददाता

आरा। एक संपूर्ण और समृद्ध गांव की पहचान है गांव में पुस्तकालय का होना। पुस्तकालय पढने की आदत विकसित करने के साथ-साथ दैनिक जीवन में सामाजिक कौशल और शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार लाता है। इन्हीं सोच के साथ बभनगवां ग्राम के करीब एक वर्ष पहले 1 सितंबर 2023 को गुरुकुल नामक एक लाइब्रेरी की स्थापना बंटी पाण्डेय के द्वारा किया गया। एक भेंट में लाइब्रेरी संचालक बंटी पाण्डेय बताते हैं कि मैं अध्ययन का एक ऐसा केन्द्र अपने गांव के नजदीक बनाना चाहता था जहां पठन पाठन का माहौल बने और शिक्षार्थियों में पढ़ाई को लेकर उत्सुकता जगने के साथ - साथ शिक्षा के प्रति समर्पण का भाव आए।शुरूआती दौर असमंजस भरा रहा। मन में नकारात्मक भाव आते थे क्या ग्रामीण क्षेत्र में मेरा सपना साकार होगा ? क्या ग्रामीण क्षेत्र के ये आर्थिक रुप से विपन्न परिवार से आने वाले शिक्षार्थी पुस्तकालय के खर्च को वहन कर पायेगें ? आदि आदि। समय का पहिया चल पड़ा, शिक्षार्थियों का प्यार मिला।

श्रम संसाधन विभाग के तत्वावधान में किया गया रोजगार कैंप का आयोजन

प्रातः किरण संवाददाता

आराःजिला नियोजनालय, आरा में श्रम संसाधन विभाग के तत्वावधान में एक दिवसीय रोजगार कैंप का आयोजन किया गया। इस कैंप का आयोजन वर्केश सॉल्यूशन एंड सर्विसेस प्राईवेट लिमिटेड द्वारा किया गया। जिला नियोजन पदाधिकारी अनीश तिवारी ने इस कैंप की जानकारी दी।

कंपनी ने लॉजिस्टिक्स, मैन्युफैक्चरिंग और आईटीआई सेवाओं में वेयरहाउस एग्जीक्यूटिव, ऑपरेटर, और ट्रेनिंग पदों के लिए साक्षात्कार आयोजित किए। इस रोजगार कैंप में कुल 65 आवेदक साक्षात्कार के लिए उपस्थित हुए, जिनमें से 48 आवेदकों का चयन किया गया। चयनित उम्मीदवारों को 15,000 से 18,000 तक का वेतन प्रस्तावित किया गया।

कंपनी ने यह साक्षात्कार बिहार, हरियाणा, नोएडा, और बेंगलुरु जैसे विभिन्न स्थानों के लिए आयोजित किया।इस अवसर पर जिला कौशल प्रबंधक संजय कुमार और राकेश कुमार के साथ अमृता कुमारी, इंदु कुमारी, अजीत कुमार, और अंकित कुमार भी उपस्थित थे।

स्मार्ट प्रीपेड मीटर में मानव हस्तक्षेप नहीं होने से विद्युत विपत्र में त्रुटि की संभावना नहीं : एईई बिक्रमगंज

प्रातः किरण संवाददाता

बिक्रमगंज(रोहतास) : विद्युत आपूर्ति अवर प्रमंडल बिक्रमगंज के सभी पुराने मीटरों को बदलकर स्मार्ट मीटर का अधिष्ठापन किया जा रहा है एवं स्मार्ट मीटर के अधिष्ठापन के समय उपभोक्ताओं से कोई भी शुल्क नहीं ली जाती है। स्मार्ट मीटर मे डाटा स्वतः ही बिलिंग सर्वर पर आ जाता है जिससे ऊर्जा रीडिंग के लिए मीटर रीडर की जरूरत नहीं पड़ती है एवं ऑन लाईन के माध्यम से समय पर विपत्र प्राप्त कर सकतें हैं एवं मानव हस्तक्षेप नहीं होने से विद्युत विपत्र में त्रुटि की संभावना नहीं रहती है। स्मार्ट मीटर के कारण बिलिंग प्रक्रिया अधिक पारदर्शी होने से उपभोक्ताओं में विद्युत विपत्र को समझने में सुविधा होती है। स्मार्ट प्रीपेड मीटर उपभोक्ता को दैनिक ऊर्जा खपत या राशि की कटौती की जानकारी वास्तविक समय में प्रदान करता है, जिससे उपभोक्ता अपने उपयोग की आदतों को बेहतर तरीके से समझ सकते हैं और ऊर्जा की बचत कर अपने विपत्र की राशि को कम कर सकतें हैं। वास्तविक समय डाटा की उपलब्ध होने से अधिक खपत करने वाले उपकरणों की पहचान कर सकतें हैं, जिससे ऊर्जा बचत करने के उपाय ढूंढ़ सकतें हैं। स्मार्ट मीटर अधिष्ठापन

से पूर्व विद्युत बकाया राशि को किस्तों में भुगतान करने की व्यवस्था की गई है, जिससे उपभोक्ताओं को बकाया राशि एक मुश्त जमा करने की वित्तीय भार से मुक्ति मिलती है। भुगतान ऊर्जा विभाग, केन्द्र सरकार के द्वारा प्रदत दिशा-निर्देश के अन्तर्गत किसी भी उपभोक्ता को पोस्टपेड से प्रीपेड में परिवर्तित करते समय बकाये की राशि की वसूली किसी भी कीमत पर प्रतिमाह पिछले तीन माह की औसत खपत के 25 प्रतिशत से ज्यादा की जा सकती है। स्मार्ट मीटर द्वारा नये विद्युत संबंध स्थापित करने हेतु किसी भी प्रकार का प्रतिभूति राशि नहीं लिया जाता है।पहले से लिए गए प्रतिभूति की राशि को स्मार्ट मीटर लगने के उपरांत वापस भी किया जाता है। स्मार्ट मीटर अधिष्ठापन उपरांत यदि मैक्सिमम डिमांड स्वीकृत भार से बढ़ जाता है तो उपभोक्ता को छः माह तक मैक्सिमम डिमांड शुल्क से राहत दी जाती है। स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं के परिसर में सोलर पैनल अधिष्ठापन के उपरान्त स्मार्ट मीटर को नेट मीटर में बदल दिया जाता है, जिससे उपभोक्ताओं का अलग से नेट मीटर खरीदने की आवश्यकता नहीं पड़ती है।स्मार्ट मीटर से प्राप्त स्टीक और विस्तृत डेटा समस्याओं का समाधान जल्दी करने में मदद करता है। उपभोक्ता को मोबाइल एप के माध्यम से ही विपत्र प्राप्त हो जाता है तथा बिना कार्यालय गए अपने स्मार्ट मीटर का रिचार्ज भी कर सकते है। त्रुटिरहित विपत्रीकरण से उपभोक्ताओं को विद्युत कार्यालय का चक्कर नहीं लगाना पड़ता है।

विद्युत विभाग ने दो लोगों पर किया प्राथमिकी दर्ज

प्रातः किरण संवाददाता

बिक्रमगंज(रोहतास) : विद्युत ऊर्जा चोरी को लेकर चलाये जा रहे विशेष अभियान तहत कनीय विद्युत अभियंता बिक्रमगंज नवदीप गोयल के नेतृत्व में एक जांच दल का गठन किया गया । जांच दल द्वारा अवैध रूप से विद्युत ऊर्जा चोरी को लेकर दो लोगों पर प्राथमिकी दर्ज कराई है । बताते चले कि बकायेदार उपभोक्ताओं का विद्युत विपत्र की राशि बकाया रहने के कारण विभाग द्वारा विशेष अभियान चलाकर विद्युत कनेक्शन काट रही है । परंतु कुछ उपभोक्ताओं द्वारा बिना बकाया राशि एवं रिकनेक्शन शुल्क जमा किए अवैध रूप से तार जोड़कर विद्युत ऊर्जा की चोरी करने लग रहे हैं । इसी बीच नगर पंचायत बिक्रमगंज के मोहल्ला श्याम नगर निवासी बिन्दा देवी पति उदय नारायण सिंह के बकाया पर विद्युत कनेक्शन कटने के पश्चात अवैध रूप से तार जोड़कर जलाने को लेकर 1लाख 23 हजार 424 रुपए दंडित राशि लगायी गयी है । आगे बताते चले कि मीटर बाईपास कर अवैध रूप से विद्युत ऊर्जा चोरी करने को लेकर आस्कामिनी नगर के अनीता राय पति मनोज कुमार राय पर 12 हजार 598 रुपए राजस्व की क्षति लगायी गयी है । सहायक विद्युत अभियंता राज कुमार द्वारा सभी उपभोक्ताओं से आग्रह किया गया कि जिनका बकाया पर लाइन कटा हुआ है वो अपना बकाया राशि एवं रिकनेक्शन शुल्क जमा करने के पश्चात ही विद्युत ऊर्जा का उपभोग करें एवं अनावश्यक होने वाली परेशानियों से बचें । जो उपभोक्ता मीटर बाईपास कर विद्युत ऊर्जा की चोरी कर रहे हैं । वह दुरुस्त कर लें तथा जो व्यक्ति बिजली का कनेक्शन नहीं लिए हैं वह कनेक्शन ले लें अन्यथा पकड़े जाने पर कानूनी कार्रवाई की जाएगी ।

भिखारी ठाकुर लोकोत्सव 2024 की तैयारी समिति की समीक्षात्मक बैठक संपन्न

प्रातः किरण संवाददाता

आरा/भोजपुर 17 नवंबर। भिखारी ठाकुर लोकोत्सव 2024 को मनाने को लेकर आज स्थानीय पटेल बस पड़ाव परिसर स्थित भिखारी ठाकुर सांस्कृतिक मंच पर तैयारी समिति की समीक्षात्मक बैठक प्रो डॉ आलोक कुमार सिंह (रंगकर्मी) जैन कॉलेज की अध्यक्षता में संपन्न हुई।संचालन पत्रकार नरेंद्र सिंह ने किया।

भिखारी ठाकुर सामाजिक शोध संस्थान आरा के बैनर तले आयोजित बैठक के दौरान लोक गायिका अंकिता पांडे जो स्व शारदा सिन्हा की शैली की गायिकी करती है को बुलाने का निर्णय लिया गया।और अब तक की चल रही तैयारियों की समीक्षा करते हुए दो हजार स्मारिका निकालने पर बल दिया गया।शोध संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष नरेंद्र सिंह ने भोजपुरी पर परिचर्चा के संयोजक शोधार्थी रवि प्रकाश ह्लसूरजह्वऔर शोधार्थी सोहित सिन्हा के सुझावों पर भोजपुरी के शोधार्थियों को ज्यादा से ज्यादा कार्यक्रम में शामिल किया जाए इसपर आम सहमति बनाई गई।साथ अश्लील गायिकी से दर किनार करने का निर्णय लिया गया।

बैठक में डॉ किरण कुमारी , डॉ भीम तिवारी,व्यास कमलेश पासवान,वरिष्ठ रंगकर्मी प्रशांत रंजन,अर्जुन सिंह,रमेश कुमार सिंह उर्फ साधु जी,गांधी जी आदि शामिल रहे।

घायल को मंत्री संतोष सिंह ने पहुंचाया अस्पताल

प्रातः किरण संवाददाता

करगहर (रोहतास) थाना क्षेत्र के सासाराम चौंसा पथ मे सहुआर गांव के समीप रविवार को एक अनियंत्रित बाइक सवार ने एक अधेड़ में टक्कर मार दी। जिससे वह गंभीर रूप से जख्मी हो गया। घटना को अंजाम देकर बाइक सवार भागने में सफल हो गया।इस बीच मोहनियां गांव में मुखिया अरविंद सिंह के घर आयोजित शादी समारोह से कोचस की ओर जा रहे। श्रम संसाधन मंत्री संतोष कुमार सिंह ने अधेड़ को सड़क पर छटपटाते देखा। उन्होंने अपनी गाड़ी रोकवाई और तत्काल पुलिस वाहन से सीएचसी करगहर में भर्ती करवाया। जहां चिकित्सकों प्राथमिक उपचार के लिए बाद बेहतर इलाज के लिए सासाराम रेफर कर दिया।घटना के संबंध में बताया जाता है कि रुपैठा निवासी 60 वर्षीय रविंद्र राम सड़क किनारे पैदल करगहर जा रहे थे कि विपरीत दिशा से आ रहे एक अनियंत्रित बाइक सवार ने टक्कर मार दी।घटना को अंजाम देकर सवार बाइक लेकर भाग निकला ।इस घटना में अधेड़ गंभीर रूपसे जख्मी हो गया ।जिसका इलाज सदर अस्पताल में चल रहा है।

मंत्री ने जख्मी के परिजनों को आश्वासन दिया कि इलाज में परेशानी होने पर उन्हें सूचना दे।

सिविल सर्जन डॉ. शिवेंद्र कुमार सिन्हा ने पल्स पोलियो अभियान का भोजपुर के चंदवा सामुदायिक भवन में किया उद्घाटन

प्रातः किरण संवाददाता

आरा। पुरे भोजपुर में पल्स पोलियो अभियान का आज शुभारंभ किया गया इस कार्यक्रम का उद्घाटन भोजपुर के सिविल सर्जन डॉ. शिवेंद्र कुमार सिन्हा ने आज, 17 नवंबर 2024 को चंदवा सामुदायिक भवन में किया।यह अभियान 17 नवंबर से 21 नवंबर तक चलेगा, जिसके दौरान जिले के शून्य से पाँच वर्ष तक के सभी बच्चों को पोलियो की दो खुराक पिलाई जाएगी। इस अभियान का लक्ष्य भोजपुर जिले में कुल 3.93 लाख बच्चों को पोलियो की दवा पिलाना है।

इस अभियान के तहत भोजपुर जिले में कुल 1,351 पल्स पोलियो टीम और 413 पर्यवेक्षक कार्य करेंगे। इनमें 1,151 घर-घर टीम, 115 ट्रांजिट टीम, 26 मोबाइल टीम और 17 एक-सदस्यीय टीम शामिल हैं।

भोजपुर जिले में यह पल्स पोलियो अभियान लगभग 11 महीने बाद आयोजित किया जा रहा है, इसलिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। सभी माता-पिता से अपील है कि वे पाँच वर्ष तक के अपने बच्चों को पोलियो की दो खुराक अवश्य पिलाएं।

पोलियो की दवा पिलाकर बीडीओ ने की अभियान की शुरूआत

संझौली(रोहतास)। संझौली प्रखंड स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में रविवार की सुबह पल्स पोलियो अभियान की शुरूआत बीडीओ प्रभा कुमारी द्वारा बच्चे को पोलियो की खुराक पिलाकर की गई। इस दौरान बीडीओ ने कहा कि अभियान में लगे पदाधिकारी व कर्मी अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए दो बूँद जिंदगी की बच्चों को पिलाएं। ताकि पोलियो का मरीज फिर से देखने को नहीं मिले। वहीं आम जनता से अपील की गई कि यह खुराक बच्चों के लिए बेहद लाजिमी है इससे बहुत सी बीमारियों के लिए कवच के रुप में सुरक्षा होती है। यह अभियान 17 नवंबर से 21 नवंबर तक चलना है। जिसमें बच्चों को पोलियो की खुराक दी जाएगी। मौके पर बीसीएम,आवास सहायक आदि पीएचसी के कई कर्मी मौजद थे।

अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन में अंतरराष्ट्रीय कलाकारों की प्रस्तुति

स्व. सन्मत कुमार जैन की 125वीं जयंती पर किया गया अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन का आयोजन

प्रातः किरण संवाददाता

आराःडॉ. जया जैन शैक्षणिक एवं सामाजिक कल्याण ट्रस्ट द्वारा स्व. सन्मत कुमार जैन की 125वीं जयंती पर अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन आयोजित हुआ । स्थानीय जेल रोड स्थित ललिता पैलेस में इस सम्मेलन का उद्घाटन श्री अभय कुमार जैन, डॉ. दिवाकर पांडेय डॉ. ओम प्रकाश राय, श्री आदित्य विजय जैन, डॉ. जया जैन व डॉ. नीरज सिंह ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया । इस अवसर पर डॉ. जया जैन ने कहा कि स्व. संमत कुमार जैन जी संगीत के परम अनुरागी थे, संगीत अनुरागियों को एकत्र कर वातावरण को गायन वादन से अनुप्राणित करना उनका अनुष्ठान था। कार्यक्रम में कलकत्ता से पधारी शास्त्रीय गायिका सोमा चक्रवर्ती ने राग विहाग में विलंबित कैसे सुख सोए तीनताल में निबद्ध चिंता न करे, द्रुत तीनताल की बंदिश लट उलझी सुलझा जा बालमह्व व दादरा मिस्र पीलू सवारियां प्यार रे प्रस्तुत कर समां बाँधा । वही लखनऊ से पधारे सितार वादक श्री नीरज मिश्रा ने सितार वादन में नीरज मिश्रा ने राग मारवा में आलाप जोड़ झाला, विलंबित तीनताल व मध्यलय झपताल द्रुत लय तीनताल तथा धुन

प्रस्तुत कर दर्शको को मंत्रमुग्ध कर दिया । पटना से पधारे कथक नर्तक राजीव रंजन ने तीनताल में उपज, उठान, आमद, परण, लरी प्रस्तुत कर दर्शकों की तालियां बटोरी । तबले पर बनारस से पधारे तबला वादक श्री उदय शंकर मिश्रा ने सितार व कथक के साथ युगलबंदी कर रंग भरा । शास्त्रीय गायन पर सिवान से पधारे तबला वादक श्री अनूप कुमार दुबे उर्फ पप्पू महाराज ने व नृत्य पर तबला वादक श्री राजेश सिंह एवं हारमोनियम पर संतोष अनिशाबादी ने बखूबी संगत किया । मंच संचालन श्री आशीष कुमार जैन व धन्यवाद ज्ञापन संस्था की सचिव डॉ. जया जैन ने किया ।

महिला के साथ मारपीट करने वाले दारोगा सिपाही को जेल भेज बर्खास्त की मांग : प्रदेश अध्यक्ष आशुतोष सिंह

प्रातः किरण संवाददाता

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के बैठक जिला कार्यालय सासाराम में किया गया,जिसका अध्यक्षता राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी किसान के प्रदेश अध्यक्ष आशुतोष सिंह ने किया,इस बैठक के संचालन महिला प्रदेश अध्यक्ष संगीता देवी ने किया,इस बैठक को संबोधन करते हुए राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के प्रदेश मुख्य प्रवक्ता सह किसान के प्रदेश अध्यक्ष आशुतोष सिंह ने कहा कि गौरक्षणी सासाराम घर में घुसकर दरोगा सिपाही ने गंदी-गंदी गाली देते हुए एक निर्दोष महिला के साथ मारपीट किया है जिसका वीडियो सबने देखा है,आम जनता अगर दरोगा सिपाही को गंदी-गंदी गाली देकर मारपीट करती तो पुलिस बिना केस दर्ज कर बिना जेल भेजे क्या छोड़ती पुलिस,मैं यह मांग करता हूं बिहार के मुख्यमंत्री,मुख्य सचिव,डीजीपी बिहार से और डेहरी डीआईजी,पुलिस अधीक्षक रोहतास से कि सभी घिनौना कार्य करने वाले दरोगा सिपाही पर केस दर्ज कर जेल भेजने के बाद पुलिस विभाग के नौकरी से बर्खास्त करने की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी मांग करती है ताकि भविष्य में कोई भी पुलिस विभाग के लोग किसी भी निर्दोष गरीब आम जनता महिला को गंदी-गंदी गाली देकर मारपीट करने का घिनौना कार्य नहीं कर सके,इस बैठक में महिला प्रदेश अध्यक्ष संगीता देवी ने भि सरकार पुलिस विभाग से मांग किये कि महिला को पितने वाले सभी सिपाही दरोगा पर कठोर कानूनी कार्रवाई करने की मांग किया है नहीं तो महिला विरोध प्रदर्शन करने के लिए बाध्य होगी,इस बैठक में मुख्य रूप से शामिल राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के किसान के प्रदेश अध्यक्ष बिहार सह प्रदेश मुख्य प्रवक्ता आशुतोष सिंह,महिला प्रदेश अध्यक्ष संगीता देवी,महिला नेत्री लता सिन्हा,सुषमा देवी,गंगा कुमारी सहित प्रदेश महासचिव अनिल सिंह,जिला अध्यक्ष रामबाबु,भूतपूर्व सैनिक जिला अध्यक्ष परशुराम सिंह,संजय दुबे,विमलेश सिंह,एनुल खान,मृत्युंजय पांडे,रविंद्र शर्मा,संतोष राय,सिकंदर शर्मा,सतीश पासवान,अर्जुन यादव,अमरजित गुप्ता,दीपक यादव,विशेश्वर प्रसाद गुप्ता,बिन्देकेशवरी आदि थे।

चंद्रवंशी समाज ने धूमधाम से जरासंध महाराज की मनाई 5227वीं जयंती जरासंध महाराज की वीरगाथा का लोहा ईश्वर ने भी मना था : प्रेम कुमार

प्रातः किरण संवाददाता

सासाराम (रोहतास) अखिल भारतवर्षीय चंद्रवंशी क्षत्रिय महासभा के द्वारा मगध सम्राट जरासंध महाराजजी की 5227वीं जयंती होटल मंगलम सासाराम मे धूमधाम से मनाई गई। जयंती समारोह के मुख्य अतिथि महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं बिहार सरकार के मंत्री डॉक्टर प्रेम कुमार ने अपने उद्बोधन में बताया कि मगध सम्राट जरासंध जी वीर, प्रतापी, दानी व भगवान शंकर के एकनिष्ठ भक्त थे। वे कुश्ती, मल्लयुद्ध में प्रवीण थे। उन्होंने भगवान श्री कृष्ण को 17 बार युद्ध में हराया था। समूचे भारत का एकीकरण करने के लिए सैकड़ो राजाओं को पराजित कर बंदी बनाया था। मगध सम्राट जरासंध महाराज जी शौर्य, वीरता के साथ-साथ अदम्य साहस के धनी थे। जब तक मानव का इतिहास रहेगा,भारत की धरती रहेगी,तब तक सूरज की भांति उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व याद किया जाता रहेगा। आने वाली युवा पीढ़ी को अपने आराध्य के कृतित्व और व्यक्तित्व को याद कर समाज में शांति एवं खुशहाली लाने के लिए आगे आना होगा। साथ ही साथ देश के लोकप्रिय माननीय प्रधानमंत्री जी के द्वारा 10 वर्षों में समाज के अंतिम पायदान पर बैठे व्यक्तियों के लिए विभिन्न तरह के योजनाओं के संबंध में जानकारी देते हुए बताया की आयुष्मान भारत जिसमें 5 लाख तक का इलाज का व्यवस्था है। जो आवास के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना, फुटपाथ दुकानदारों के लिए पीएम सौ निधि योजना महिलाओं के लिए प्रधानमंत्री उज्जवला गैस योजना, प्रधानमंत्री जनधन योजना मुद्रा योजना सहित विभिन्न योजनाओं के चर्चा करते हुए लोगों से अपील की कि विकसित भारत संकल्प यात्रा सभी पंचायत में और सभी शहर के वार्डों में रथ के माध्यम से माननीय मोदी जी के 10 वर्षों के किए गए विकास की जानकारी दी जा रही है एवं छुटे हुए गरीबों को फिर से निबंध करने का विभिन्न योजनाओं में अवसर मिल रहा है, डॉ कुमार ने कहा माननीय मोदी जी ने पिछडा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा प्रदान किये और पिछड़े वर्गों के लिए लायी गई योजनाओं से लाभान्वित हो रहा है' संगठन को गांव गांव तक विस्तार के संबंध में कहा कि गांव की ओर जाएं और महासभा की संगठन के विस्तार करें एक जुटता का परिचय दें मगध सम्राट जरासंध के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि उनके बताए रास्ते पर चलकर आत्मनिर्भर भारत विकसित भारत बनाने का सपना माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी का है। संगठन के बल पर राजनीतिक भागीदारी बढ़ाने के लिए लोगों को आह्वान किया सामाजिक बुराई नशा एवं जुआ से नई पीढ़ी को दूर रखने की सलाह दि वर्ष 2024-25 को संगठन पर्व के महासभा चल गांव की ओर का उन्होंने नारा दिया युवाओं को बाप दादाओ के संगठन को और जीवन एवं मजबूत करने के लिए आगे आने का उन्होंने आह्वान किया। दक्षिण बिहार प्रदेश अध्यक्ष कृष्णा कुमार चंद्रवंशी जी अपने संबोधन में कहा कि समाज में महिलाओं को हर क्षेत्र में आगे आना हो ताकि समाज का संपूर्ण विकास होगा उन्होंने कहा कि महिलाओं में जागृति लाने के लिए उनकी शिक्षा पर विशेष ध्यान देना होगा अब महिला अबला नही सबला बनकर हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है। इसे समाज के अंतिम पायदान पर रह रहे हैं लोगों तक पहुंचाना होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिलाअध्यक्ष प्रकाश चंद्रवंशी ने की। मौके पर प्रदेश अध्यक्ष कृष्ण कुमार चंद्रवंशी राष्ट्रीय महामंत्री नीलम चंद्रवंशी प्रदेश महामंत्री पप्पू चंद्रवंशी उपाध्यक्ष विजय चंद्रवंशी नागेंद्र चंद्रवंशी जिला महासचिव महासभा प्रेम प्रकाश सिंह चंद्रवंशी, मंटू चंद्रवंशी, दीपक चंद्रवंशी, मनोज चंद्रवंशी, पन्नू चंद्रवंशी, चंदन चंद्रवंशी, गुप्तेश्वर मुखिया, विजय आदि थे।

सोशल मीडिया पर नयनतारा ने की अभिनेता धनुष की खूब आलोचना

नयनतारा ने दक्षिण भारतीय फिल्मों में काफी अच्छे किरदार निभाए है, दर्शकों के बीच उनकी फैन फॉलोइंग काफी ज्यादा है। दर्शक उनकी जिंदगी को और भी करीब से जान सके, इसके लिए नयनतारा अपनी एक डॉक्यूमेंट्री लेकर भी आ रही हैं। यह डॉक्यूमेंट्री 18 नवंबर को नेटफ्लिक्स पर दिखाई जाएगी। इसमें नयनतारा की जिंदगी के कई पहलुओं को दिखाया जाएगा, साथ ही उनके संघर्ष की झलक भी इसमें मिलेगी। वह अपनी इस डॉक्यूमेंट्री को लेकर काफी खुश हैं, लेकिन अब उनकी इस खुशी पर अभिनेता धनुष ने पानी फेर दिया है। असल में उन्होंने नयनतारा की इस डॉक्यूमेंट्री में अपनी फिल्म के एक

धनुष ने कर दिया कॉपीराइट केस

नयनतारा की डॉक्यूमेंट्री में उनके जीवन के कई किस्सों को साझा किया गया है। इसमें उनके पुराने रिश्तों पर भी बात हुई है। लेकिन अब उनकी यह डॉक्यूमेंट्री मुश्किल में पड़ती हुई नजर आ रही है। दरअसल, दक्षिण भारतीय फिल्मों के नामी अभिनेता धनुष ने नयनतारा की डॉक्यूमेंट्री पर केस कर दिया है। उनका कहना है कि डॉक्यूमेंट्री में उनकी एक फिल्म नानुम राउडी धान के कुछ दृश्यों का इस्तेमाल हुआ है। जैसे ही इस बात का पता नयनतारा को चला तो उन्होंने सोशल मीडिया के जरिए धनुष की आलोचना की। साथ ही उन्होंने कहा कि धनुष के व्यवहार के कारण वह काफी दुखी हैं।

नयनतारा ने लिखा ओपन लेटर

कॉपीराइट केस के बाद नयनतारा ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक ओपन लेटर धनुष को लिखा। इसमें उन्होंने बताया कि वह एक सेल्फ मेड अभिनेत्री हैं और बिना किसी सपोर्ट के आगे बढ़ी हैं। साथ ही लेटर में वह यह भी बताती हैं कि धनुष से उन्होंने अनुमति मांगने के लिए बहुत कोशिश की। नयनतारा ओपन लेटर में लिखती हैं, मेरी इस डॉक्यूमेंट्री का इंतजार फैंस और मेरे शुभचिंतक कर रहे हैं। यह डॉक्यूमेंट्री कई लोगों के प्रयासों का परिणाम है। दो साल तक हम आपकी अनुमति का इंतजार करते रहे, आपसे एनओसी मांगते रहे, लेकिन आपने नानुम राउडी धान के कुछ दृश्य, गाने और यहां तक की फोटोग्राफ तक इस्तेमाल करने की अनुमति नहीं दी। आखिर में हमने हार मान ली और मौजूदा वर्जन के साथ डॉक्यूमेंट्री को रिलीज करने का निर्णय लिया। मुझे दुख है कि इस डॉक्यूमेंट्री में मेरी सबसे खास फिल्म शामिल नहीं हो सकी।

संजय सर के साथ काम करने के बाद मुझमें बदलाव आया है

बॉलीवुड एक्ट्रेस आलिया भट्ट इंडस्ट्री में पिछले 12 साल से एक्टिव हैं। उन्होंने करण जौहर की मूवी से डेब्यू किया और आज संजय लीला भंसाली जैसे दिग्गज के साथ काम कर चुकी हैं और नेशनल अवॉर्ड जीत चुकी हैं। एक बेटी की मां बनीं। कपूर खानदान की बहू बनीं। और करियर रुका नहीं। दिदोगुनी-रात चौगुनी बढ़ता गया। सफलता कदम चूमती गई। अब वह अल्फा में नजर आएंगी।

आपने अपने करियर की शुरुआत स्टूडेंट ऑफ द ईयर से की थी और अब आपके करियर को 12 साल हो गए हैं, जिसमें आप उड़ता पंजाब, हाइवे, राजी, गंगूबाई, गल्ली बॉय, जिगरा जैसी कई फिल्में हैं। देखती हैं अपने सफर को?

बीते सालों में इतने विविध किरदारों को जीते हुए, मुझे अपने काम से और प्यार हो गया है। मुझे अभिनय के इस पहलू ने सबसे ज्यादा मंत्रमुग्ध किया है और साथ ही इंस्पायर भी कि एक कहानी और किरदार में कितने सारे इमोशन होते हैं जताने को। मुझे इस बात की बेहद खुशी है कि मैंने अपने करियर में एक से बढ़कर एक प्रतिभावान डायरेक्टर्स और राइटर्स के साथ काम किया है और उम्मीद करती हूं कि ये सिलसिला आगे भी जारी रहेगा।

आपके खाते में 6 फिल्मफेयर अवॉर्ड के बाद एक नैशनल अवॉर्ड भी दर्ज है, लोग कहते हैं आप और अवॉर्ड एक-दूसरे के पूरक बन चुके हैं?

सच कहूं, तो फिल्म करते वक्त ये खयाल नहीं आता कि इस फिल्म के लिए अवॉर्ड मिलेगा। हर चरित्र को निभाते वक्त मेरी कोशिश यही रहती है कि वो फिल्म। कहानी और किरदार दर्शकों को प्रेरित करे और वे उसे अपने साथ ले जाएं। पुरस्कार निश्चित रूप से हौसला देते हैं कि हम सही रास्ते पर हैं। गंगूबाई काठियावाड़ी की बात करूं, तो इसकी संपूर्ण यात्रा मेरे लिए बहुत ही खास रही है और जब मुझे राष्ट्रीय पुरस्कार मिला, तो निसंदेह वह एक अद्भुत पल था। यह सम्मान मिलना किसी भी कलाकार के लिए बहुत ही गर्व की बात है।

इतनी कम उम्र में गंगूबाई के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार हासिल करना कैसा लगता है? आपका रोल बहुत ही मुश्किल और लेयर वाला था?

गंगूबाई काठियावाड़ी मेरी अभिनय यात्रा का सबसे कठिन और चुनौतीपूर्ण किरदार रहा है। सबसे पहले, संजय लीला भंसाली की दुनिया में कदम रखना किसी भी कलाकार का एक सपना होता है। व्यक्तिगत रूप से, संजय सर के साथ इस फिल्म पर काम करने के बाद मुझमें बदलाव आया है, जीवन के प्रति मेरा नजरिया बदल गया है। उन दो सालों को मैं अपनी जिंदगी के लिए बहुत महत्वपूर्ण मानती हूं। राष्ट्रीय पुरस्कार जैसे सम्मान के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं, ये एक बहुत ही अविश्वसनीय अनुभव था। वो मेरी जिंदगी का एक बहुत ही अहम दिन था, बेहद खास ।

जिगरा में आपने इमोशन के साथ-साथ एक्शन में भी दम दिखाया, कितना चैलेंजिंग था पर्दे पर एक्शन करना?

हर फिल्म के साथ मेरी यही कोशिश रहती है कि इस बार मैं क्या नया कर रही हूं? खुद को एक एक्टर की तरह कैसे चैलेंज कर रही हूं। मुझे अपने कम्फर्ट जोन से बाहर आकर कुछ करना है। जिगरा में सत्या का किरदार भी कुछ ऐसा ही है, कि वो अपने भाई को बचाने के लिए किस हद तक जा सकती है। एक्शन तो काफी एक्साइटिंग और चैलेंजिंग रहा।

अपनी आने वाली फिल्म अल्फा के बारे कुछ बताएं?

मैं इस फिल्म को लेकर बहुत उत्साहित हूं। ज्यादा कुछ नहीं बता सकती फिलहाल, लेकिन यह एक ऐसी फिल्म है, जिसमें दो नायिकाएं मुख्य भूमिका में ऐक्शन अवतार में नजर आएंगी और यह मेरे लिए बहुत ही रोमांचक है।

रहस्यों का मायाजाल लेकर आ रहे विपुल अमृतलाल शाह

विपुल अमृतलाल शाह हिंदी फिल्म इंडस्ट्री के ऐसे फिल्मकार हैं, जो दर्शकों के सामने हमेशा अलग तरह की कहानी परोसने में विश्वास रखते हैं। उनकी हर नई फिल्मों में लोगों को हमेशा कुछ नया देखने को मिलता है। कई शानदार फिल्मों के बाद वह दर्शकों के लिए एक नया शो लेकर आ रहे हैं।

दिखेगा रहस्यों का मायाजाल

इस शो का नाम भेद भरम है। इस हॉरर शो का ट्रेलर हाल ही में रिलीज किया गया है। सन साइन पिक्चर्स के सोशल मीडिया हैंडल से साझा किए गए ट्रेलर को देखने के बाद अंदाजा लगाया जा सकता है कि इस सीरीज में लोगों को हॉरर के साथ रहस्यों का मायाजाल भी देखने को मिलेगा।

लोकप्रिय उपन्यास पर आधारित है शो

यह शो हरकिशन मेहता के लोकप्रिय उपन्यास पर आधारित है। मौजूदा समय में हॉरर फिल्में और सीरीज को लोग काफी ज्यादा पसंद कर रहे हैं। इस बीच विपुल शाह भी अपने इस शो के माध्यम से इस शैली में कदम रखने जा रहे हैं। भेद भरम की स्टारकास्ट की बात करें तो इसमें यशपाल शर्मा, अतुल कुमार, गौरव चोपड़ा, ऐश्वर्या सखूजा, वैशाली ए. ठक्कर, विशाल मल्होत्रा, प्रणव मिश्रा, दिव्यांगना जैन, वाणीकी त्यागी और समीर धर्माधिकारी जैसे प्रभावशाली कलाकार नजर आएंगे।

शादी के बंधन में बंधने वाली हैं कीर्ति सुरेश, क्या होने वाली है अरेंज मैरिज!

कीर्ति सुरेश तमिल, तेलुगू और मलयालम फिल्मों में अभिनय करती हैं। उन्होंने कई नामी साउथ स्टार्स के साथ फिल्मों में काम किया है। कीर्ति अपनी फिल्मों के अलावा अपने निजी जीवन को लेकर भी चर्चा में रहती हैं। उनके अफेयर्स के बारे में फैंस के बीच चर्चा होती रहती है, लेकिन कीर्ति कभी खुलकर इस बारे में बात नहीं करती हैं। हाल ही में सुनने में आया है कि वह साल के आखिरी में शादी करने वाली हैं।

अरेंज मैरीज की बात आई सामने

अगर सोशल मीडिया और साउथ इंडस्ट्री के गलियारों में चल रही एक खबर पर यकीन करें, तो कीर्ति इस साल के अंत तक शादी करने वाली हैं। सुनने में आया है कि वह अरेंज मैरीज कर रही हैं। यह शादी गोवा में होने वाली है। माना जा रहा है कि कीर्ति के माता-पिता ने उनका यह रिश्ता तय किया है। कीर्ति का होना वाला जीवनसाथी उनके ही रिश्तेदारी में है। वह दोनों पहले से एक-दूसरे को जानते हैं। वैसे अब तक शादी की खबर के बारे में कीर्ति की तरफ से कोई पुष्टि नहीं की गई है।

पहले भी उड़ी है शादी की अफवाह

कुछ समय पहले भी कीर्ति की शादी को लेकर सोशल मीडिया पर अफवाह उड़ी, लेकिन तब परिवार वालों ने इस बात से इंकार कर दिया।

संगीत के लिए अभिनय के बराबर जुनूनी हैं आयुष्मान, बैंड के साथ विदेशी दौरे पर निकले

आयुष्मान खुराना बॉलीवुड के मशहूर अभिनेता हैं, जिन्हें उनकी बहुमुखी प्रतिभा की वजह से जाना जाता है। अभिनेता अपने शानदार अभिनय कौशल के अलावा अपनी गायकी और लेखन के लिए भी काफी मशहूर हैं। आज, बुधवार को उन्हें मुंबई एयरपोर्ट पर देखा गया, जहां वे अपने बैंड आयुष्मान भव के साथ 14 नवंबर, 2024 को शिकागो से शुरू होने वाले अपने टूर के लिए रवाना हो रहे थे। अपने इस टूर के दौरान आयुष्मान शिकागो के बाद 24 नवंबर तक न्यूयॉर्क, सैन जोस, न्यू जर्सी और डलास सहित चार अन्य शहरों का दौरा करेंगे।

अपने संगीत के साथ करेंगे विदेशी दौरा

अपनी अनोखी फिल्मों के लिए जाने जाने वाले आयुष्मान ने लगातार अपने काम के जरिए लोगों को चौंकाया है। फिल्मों से लेकर संगीत तक, उनकी कहानी और विचारों में हमेशा एक ताजगी देखने को मिलती है, जो दर्शकों और श्रोताओं के लिए एक यादगार अनुभव प्रदान करती है। अब अपने यूएस टूर के साथ अपने संगीत को विदेशों में ले जाते हुए, वे इस आगामी कॉन्सर्ट के साथ अपने प्रशंसकों और समर्थकों से मिलने वाले हैं।

संगीत को बताया घर वापसी जैसा

अपने इस टूर को लेकर अभिनेता ने कहा, एक कलाकार के तौर पर, मैं हमेशा ऐसे लोगों से जुड़ने का इंतजार करता हूं, जो मेरे संगीत और फिल्मों की सराहना करते हैं। मुझे उनकी प्रतिक्रियाएं पहली नजर में देखना अच्छा लगता है। मैंने अपने काम के जरिए उन तक पहुंचने के प्रयास करता रहता हूं। संगीत बनाना और ये टूर करना निश्चित रूप से मेरे लिए लोगों से मिलने, बातचीत करने और उनसे जुड़ने का एक बड़ा अवसर है, साथ ही अपने संगीत के जरिए उन्हें यह दिखाने का मौका भी देता है कि मैं कौन हूं, मेरा मूल क्या है। इसके अलावा, मैंने कॉलेज के दिनों में संगीत भी किया है, इसलिए यह मेरे लिए घर वापसी जैसा है। आयुष्मान खुराना ने कुछ संगीत भी बनाए हैं, जिन्हें काफी पसंद भी किया गया है। उन्होंने अपनी डेब्यू फिल्म विक्की डोनर में पानी दा रंग के साथ एक गायक के रूप में भी शुरुआत की। ये गाना काफी सफल रहा था। संगीत को अपना जुनून बताते हुए, आयुष्मान ने कहा, मैं हमेशा एक अभिनेता बनना चाहता था, लेकिन संगीत मेरा समानांतर जुनून है। हर किसी के लिए समानांतर जुनून होना बहुत जरूरी है और मुझे खुशी है कि मुझे गीत लेखन, गायन और मंच पर प्रदर्शन करने का कौशल मिला है। मंच हमेशा मेरा पहला प्यार रहेगा, क्योंकि जब वहां आप प्रदर्शन करते हैं, तो लोगों को तुरंत संतुष्टि मिलती है। मुझे खुशी है कि मुझे दुनिया भर में अपने प्रशंसकों और बॉलीवुड प्रेमियों के साथ घूमने और बातचीत करने का यह अवसर मिला है।

आयुष्मान का है दूसरा अमेरिका दौरा

यह आयुष्मान का अमेरिका में दूसरा दौरा है। इस बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा, यह मेरा दूसरा यूएस दौरा है और मैं बहुत उत्साहित भी हूं, क्योंकि मैं आठ साल बाद वहां अपने गाने को प्रस्तुत करने, बातचीत करने और जीवन और कविता पर चर्चा करने जा रहा हूं। मैं चाहता हूं कि लोग इस अनुभव को महसूस करें और जो लोग वहां नहीं आ पाए, उन्हें बताएं कि उन्होंने कुछ खास मिस किया है। अगर मैं ऐसा कर पाता, तो मेरा संगीत उनके दिलों को छू जाता।

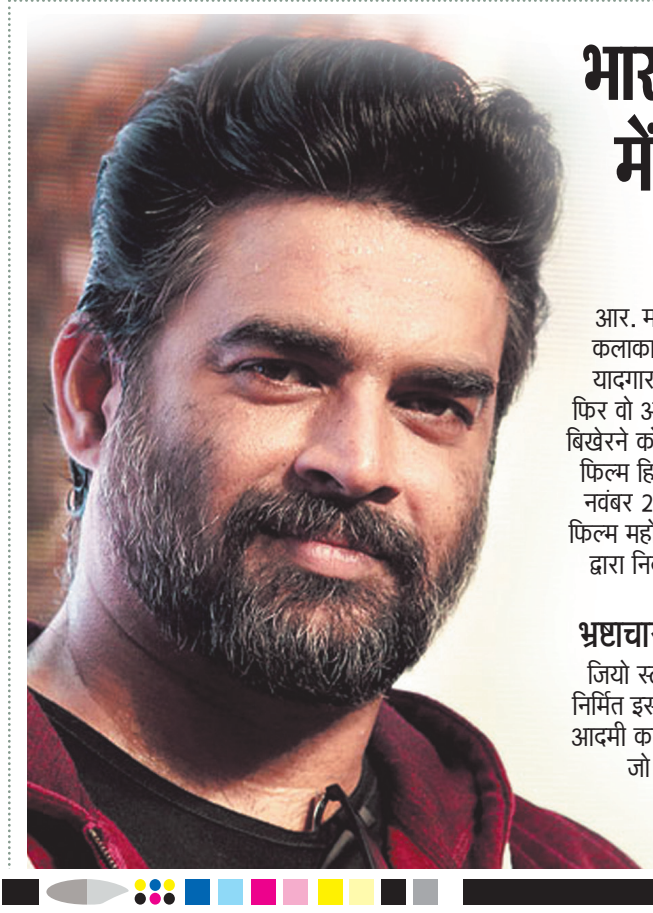

भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में होगा माधवन को जलवा, अपनी फिल्म से करेंगे हिसाब बराबर

आर. माधवन भारतीय सिनेमा के मंझे हुए कलाकार हैं। उन्होंने अपने करियर में कई यादगार भूमिकाएं निभाई हैं। अब एक बार फिर वो अपनी शानदार अदाकारी का जलवा बिखेरने को तैयार हैं। उनकी सामाजिक ड्रामा फिल्म हिसाब बराबर का वर्ल्ड प्रीमियर 26 नवंबर 2024 को 55वें भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में होने वाला है। अश्विनी धीर द्वारा निर्देशित, ये फिल्म हास्य, व्यंग्य और भावनाओं का मिश्रण है।

भ्रष्टाचार से लड़ते दिखेंगे माधवन

जियो स्टूडियोज और एसपी सिनेकॉर्प द्वारा निर्मित इस फिल्म में आर. माधवन एक आम आदमी का किरदार निभाते हुए नजर आएंगे, जो कॉरपोरेट बैंक के अरबों डॉलर के घोटाले को उजागर करने की साहसी लड़ाई के बाद वित्तीय धोखाधड़ी जैसे मद्दों का अभिनेता फिल्म में राधे मोहन शर्मा की भूमिका निभा रहे हैं, जो एक सतर्क रेलवे टिकट चेकर है, जिसे अपने बैंक खाते में एक छोटी लेकिन समझ से परे विसंगति का पता चलता है। एक छोटी सी समस्या से शुरु हुई ये चीज जल्द ही एक बड़ी जांच में बदल जाती है।

नील नितिन मुकेश और कीर्ति कुल्हारी भी आएंगे नजर

फिल्म में नील नितिन मुकेश एक शक्तिशाली बैंकर, मिकी मेहता के किरदार में नजर आएंगे, जिसके द्वारा किए गए एक बड़े वित्तीय घोटाले का राधे मोहन शर्मा को पता चलता है। इसके बाद राधे सिस्टम में मौजूद भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई लड़ता है। इस दौरान उसे अपने निजी जीवन की मुश्किलों का भी सामना करना पड़ता है। यहां उसे एहसास होता है कि बैलेंस शीट के विपरीत, रिश्तों को केवल संख्याओं से ठीक नहीं किया जा अहम भूमिका में हैं, जो न्याय, ईमानदारी और सही के लिए खड़े होती हैं।

हिसाब बराबर के प्रीमियर को लेकर उत्साहित हैं आर. माधवन

फिल्म के बारे में बात करते हुए, आर. माधवन ने साझा कहा, हिसाब बराबर केवल भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई नहीं है। यह व्यक्तिगत खामियों का सामना करने और यह समझने के बारे में है कि न्याय हमेशा एक बहीखाते को संतुलित करने जितना आसान नहीं होता है। यह नैतिक जवाबदेही की कहानी है और मैं दर्शकों को आईएफएफआई में इसका अनुभव कराने के लिए उत्साहित हूं। फिल्म को लेकर अपना उत्साह साझा करते हुए, निर्देशक अश्विनी धीर ने कहा, मुझे 55वें आईएफएफआई में हिसाब बराबर प्रस्तुत करने का सम्मान मिला है। यह फिल्म एक थ्रिलर से कहीं बढ़कर है। यह धोखे से घिरी दुनिया में सच्चाई के लिए कठिन संघर्ष को दिखाती है। राधे की यात्रा के माध्यम से, हम एक आम आदमी की जटिलताओं का पता लगाते हैं, जो एक ऐसी दुनिया को समझने की कोशिश कर रहा है जहां न्याय अक्सर पहुंच से बाहर लगता है। मुझे जियो स्टूडियो और एसपी सिनेकॉर्प के साथ हमारे सहयोग पर अविश्वसनीय रूप से गर्व है और मुझे उम्मीद है कि हिसाब बराबर दर्शकों का

अक्षय कुमार को निर्देशित करेंगे अजय देवगन

अजय देवगन और अक्षय कुमार एक बार फिर साथ आ रहे हैं दोनों इन दिनों हालिया रिलीज फिल्म सिंघम अगेन में नजर आ रहे हैं। इसी कड़ी में अजय देवगन ने अपनी अगली फिल्म का एलान कर उत्साह बढ़ा दिया है। हालांकि, अगली फिल्म में अजय अभिनय नहीं निर्देशन की कमान संभालेंगे। वहीं, अजय देवगन के निर्देशन में बनी इस फिल्म में अक्षय कुमार मुख्य अभिनेता होंगे इससे पहले दोनों को सुहाग, खाकी और सूर्यवंशी जैसी फिल्मों में साथ देखा

एलन मस्क के दो लाख रुपये गिर जाएं तो वह उसे उठाएंगे नहीं

कारण जानकर आप भी कहेंगे- क्या अमीरी है!

नई दिल्ली, एजेंसी। दुनिया के सबसे अमीर शख्स एलन मस्क की संपति इस समय बहुत तेजी से बढ़ रही है। डोनाल्ड ट्रंप के अमेरिकी चुनाव जीतने के बाद इनकी संपत्ति में और तेजी आई है। ब्लूमबर्ग बिलेनियर्स इंडेक्स के अनुसार मस्क की नेटवर्थ 313 बिलियन डॉलर है। अमेजन के जेफ बेजोस 224 बिलियन डॉलर की संपत्ति के साथ दूसरे नंबर पर हैं। इस साल कमाई में अभी तक एलन मस्क सबसे आगे रहे हैं। एक जनवरी 2024 से लेकर अब तक उन्होंने 84.3 बिलियन डॉलर (करीब 7.12 लाख करोड़ रुपये) की कमाई की है। इस साल कमाई करने

के मामले में दूसरे नंबर पर एनवीडिया के जेसन हुआंग हैं। जेसन ने इस साल 80 बिलियन डॉलर की कमाई की है।

10, 20 नहीं... पूरे 85 बिलियन डॉलर का अंतर, दुनिया के नंबर वन और टू अमीर के बीच बढ़ रहा फासला, कहां हैं अंबानी और अडानी

एक सेकेंड में कितना कमाते हैं मस्क

मस्क ने इस साल करीब 7.12 लाख करोड़ रुपये की कमाई की है। अगर हम इस कमाई को इस साल के 320 दिन की कमाई (नवंबर के 14 दिन और दिसंबर के 31 दिनों को छोड़कर) मान लें तो मस्क ने रोजाना करीब 2226 करोड़ रुपये कमाए हैं।

ऐसे में उन्होंने 92.73 करोड़ रुपये हर घंटे, 1.54 करोड़ रुपये हर मिनट और करीब 2.58 लाख रुपये हर सेकेंड कमाए। यानी अपने देश में बड़ी पोस्ट पर बैठे किसी कॉर्पोरेट एम्प्लॉई की जितनी महीने की सैलरी होती है, उतनी मस्क ने मात्र एक सेकेंड में कमा डाली।

2 लाख रुपये क्यों नहीं उठाएंगे मस्क

अब मान लीजिए कि मस्क के रास्ते में दो लाख रुपये गिर जाते हैं, तो वह रकम रकम को उठाने में अपना समय बर्बाद नहीं करेंगे। क्योंकि उस रकम को उठाने में कम से कम 4 या 5 सेकेंड का समय तो लगेगा ही। इतनी देर में मस्क 10 लाख रुपये से ज्यादा कमा लेंगे। ऐसी है मस्क की अमीरी।

क्यों आई मस्क की कमाई में तेजी

ट्रंप के चुनाव जीतने के बाद मस्क की प्रमुख कंपनी टेस्ला के शेयरों में काफी तेजी आई है। 4 नवंबर को टेस्ला के एक शेयर की कीमत 242.84 रुपये थी। अगले दिन यानी 5 नवंबर को अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव के नतीजे आए थे। इसमें ट्रंप ने जीत हासिल की। ट्रंप को जिताने में मस्क का भी काफी योगदान रहा है।

अब टेस्ला के शेयर की कीमत 320.72 रुपये है। यानी दो हफ्ते से भी कम समय में टेस्ला के शेयरों में 32 फीसदी की वृद्धि हुई है। इसके कारण ही मस्क की संपत्ति में तेजी आई है।

संक्षिप्त समाचार

भारत ने अक्टूबर में बनाया उच्चतम निर्यात रिकॉर्ड

नई दिल्ली, एजेंसी। अर्थशास्त्री आयात बिल में वृद्धि का कारण सोने और तेल के अधिक आयात को मानते हैं और वाणिज्य सचिव का कहना है कि भारत का गैर-पेट्रोलियम निर्यात बढ़कर 211.3 बिलियन डॉलर के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया है। वाणिज्यिक खुफिया और सांख्यिकी महानिदेशालय द्वारा जारी आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, भारत ने अक्टूबर महीने में पिछले एक दशक में अब तक का सबसे अधिक 39.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर का व्यापारिक निर्यात दर्ज करके एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है, जो वैश्विक व्यापार में देश की बढ़ती ताकत को दर्शाता है। आंकड़ों से पता चलता है कि इंजीनियरिंग सामान, इलेक्ट्रॉनिक्स और रसायन जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों ने मजबूत प्रदर्शन किया है। इन क्षेत्रों में नीतिगत सुधारों और बढ़ी हुई प्रतिस्पर्धा ने निर्यात के आंकड़ों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। एक दस्तावेज में उल्लेख किया गया है कि अक्टूबर के रिकॉर्ड-तोड़ निर्यात के आंकड़े अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भारत के बढ़ते प्रभाव और उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन (पीएलआई) योजनाओं और निर्यात को सुविधाजनक बनाने के उद्देश्य से विभिन्न व्यापार समझौतों जैसी सरकारी पहलों की सफलता को दर्शाते हैं।

25 नवंबर को खुलेगा राजेश पावर सर्विसेज आईपीओ

नई दिल्ली, एजेंसी। गुजरात की कंपनी राजेश पावर सर्विसेज का आईपीओ 25 नवंबर को खुलने जा रहा है। बाजार के नकारात्मक रुख के बीच यह 6वां एसएमई आईपीओ खुलने जा रहा है। कंपनी के आईपीओ का साइज 160 करोड़ रुपये का है। आइए डीटेल्स में जानते हैं इस कंपनी के आईपीओ के विषय में - इस आईपीओ का प्राइस बैंड 320 रुपये से 335 रुपेये प्रति शेयर तय किया गया है। इंस्टीट्यूशनल इनवेस्टर्स 22 नवंबर को दांव लगा पाएंगे। एंकर निवेशकों से कंपनी 44.77 करोड़ रुपये जुटाने का प्रयास करेगी। सभी के लिए आईपीओ 27 नवंबर को बंद हो रहे हैं। इस आईपीओ के जरिए 27.90 लाख फ्रेश शेयर जारी किया जाएगा। वहीं, ऑफर फार सेल के तहत 20 लाख शेयर जारी किया जाएगा। कंपनी के प्रमोटर्स पंचाल और पटेल फैमिली शेयर बेच रहे हैं। बता दें, मौजूदा समय में प्रमोटर्स की कुल हिस्सेदारी 100 प्रतिशत से अधिक है। आईपीओ का अधिकतम 50 प्रतिशत क्वालीफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स के लिए आरक्षित रहेगा। वहीं, रिटेल निवेशकों के लिए कम से कम 35 प्रतिशत हिस्सा रिजर्व रहेगा।

स्विगी, जोमैटो, जेप्टो, ब्लिंकिट को लेकर उदय कोटक ने दी चेतावनी

नई दिल्ली, एजेंसी। इन दिनों क्विक कॉमर्स प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल तेजी से बढ़ रहा है। 10 से 15 मिनट से लगभग हर जरूरत का सामान घर पर डिलीवर करने वाली इन कंपनियों को लेकर अब चर्चाएं भी शुरू होने लगी हैं। कोटक महिंद्रा बैंक के फाउंडर उदय कोटक ने इन क्विक कॉमर्स कंपनियों के कारण खुदरा विक्रेताओं पर पड़ रहे प्रभाव पर चिंता व्यक्त की है। टाइम्स ऑफ इंडिया के मुताबिक एक कार्यक्रम में उदय कोटक ने भविष्यवाणी की है कि यह एक राजनीतिक मुद्दा बन सकता है। सीएनबीसी टीवी18 के एक कार्यक्रम में बोलते हुए कोटक ने कई अन्य देशों के विपरीत भारत में क्विक कॉमर्स की सफलता को लेकर भी बात कही। उदय कोटक ने इस कार्यक्रम में कहा कि क्यू-कॉम (क्विक कॉमर्स) स्थानीय खुदरा विक्रेताओं के लिए एक चुनौती है। यह एक ऐसी चुनौती है जो राजनीतिक मोर्चे पर आएगी। उन्होंने किराना और फूड डिलीवर करने वाली कंपनी स्विगी की लिस्टिंग के ठीक बाद यह बात कही।

गवर्नर शक्तिकांत दास बोले- भारतीय अर्थव्यवस्था वैश्विक घटनाओं के असर से निपट सकती है, बाहरी क्षेत्र मजबूत

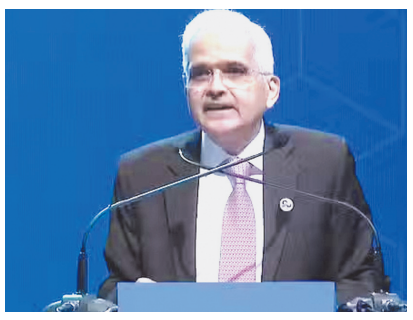

कोच्चि एजेंसी। भारतीय अर्थव्यवस्था को लेकर भारतीय रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) के गवर्नर शक्तिकांत दास ने शनिवार को कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था और वित्तीय क्षेत्र वैश्विक घटनाओं से उत्पन्न किसी भी प्रभाव को संभालने के लिए पूरी तरह से तैयार है। उन्होंने कहा कि देश का बाहरी क्षेत्र भी मजबूत है और हमारा चालू खाता घाटा प्रबंधनीय सीमा के भीतर रहा है और 1.1 प्रतिशत पर रहा।

कोच्चि इंटरनेशनल फाउंडेशन में बोले दास

कोच्चि इंटरनेशनल फाउंडेशन के शुभारंभ के अवसर पर आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए गवर्नर शक्तिकांत दास ने कहा कि आज भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि स्थिरता और मजबूती की तस्वीर पेश करती है। उन्होंने बताया कि इससे पहले 2010 और 2011 में यह छह से सात प्रतिशत के बीच थी। इसके साथ ही दास ने यह भी कहा कि भारत के पास दुनिया के सबसे बड़े विदेशी मुद्रा भंडार में से एक है, जो करीब 675 अरब अमेरिकी डॉलर है।

मुद्रास्फीति के बारे में बोले दास

इसके साथ ही मुद्रास्फीति के बारे में आरबीआई गवर्नर ने कहा समय-समय पर उतार-चढ़ाव के बावजूद इसके मध्यम रहने की उम्मीद है। जहां खाद्य मुद्रास्फीति के कारण भारत की मुद्रास्फीति सितंबर के 5.5 प्रतिशत से बढ़कर अक्टूबर में 6.2 प्रतिशत हो गई।

मुद्रास्फीति की कमरे में मौजूद हाथी की तरह- दास

अपने संबोधन में आगे शक्तिकांत दास ने मुद्रास्फीति की तुलना कमरे में मौजूद हाथी से की। उन्होंने कहा अब हाथी टहलने के लिए कमरे से बाहर चला गया है फिर वह जंगल में वापस चला जाएगा। दास ने कहा कि जब यूक्रेन युद्ध शुरू हुआ तो मुद्रास्फीति बढ़ गई, फिर हमने तुरंत नकारात्मक ब्याज दरों से परहेज किया। इसके साथ ही दास ने कहा कि हमने भारत में जो नहीं किया, वह भी महत्वपूर्ण है। हमने आरबीआई ने नोट नहीं छापे, क्योंकि अगर हम नोट छापना शुरू कर देते हैं, तो हम जिन समस्याओं को हल करने की कोशिश कर रहे हैं, वे बढ़ जाएंगी और उन्हें संभालना मुश्किल हो जाएगा।

दैनिक उपभोग की चीजों पर खर्च घटा रहे हैं लोग, लेकिन परफ्यूम-डिओडोरेंट्स की बिक्री हो गई दोगुनी

नई दिल्ली, एजेंसी। इस समय खुशबू का कारोबार तेजी से आगे बढ़ रहा है। इस सेक्टर में बड़ी-बड़ी कंपनियों के साथ छोटे-छोटे भी काफी प्लेयर आ रहे हैं। इसका सबसे बड़ा कारण है कि परफ्यूम, डिओडोरेंट्स आदि का इस्तेमाल करने वालों की संख्या में तेजी आ रहा है। स्थिति यह है कि उपभोक्ता दैनिक उपभोग की चीजों पर कटौती कर रहे हैं, लेकिन खुशबू वाले इन प्रोडक्ट को जरूर खरीद रहे हैं।

चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही (अप्रैल-सितंबर) में खुशबू वाले प्रोडक्ट्स की जमकर बिक्री हुई है। गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स, इमामी, आईटीसी और शॉपर्स स्टॉप जैसी कंपनियों ने बिक्री की जानकारी दी है। इसके आधार पर मार्केट रिसर्चर नीलसनआईक्यू ने बताया कि इस साल खुशबू वाले इन प्रोडक्ट्स की बिक्री लगभग दोगुनी हो गई है।

तेजी से बढ़ रहा यह क्षेत्र

नीलसनआईक्यू ने अपना यह डेटा इकनॉमिक टाइम्स के साथ शेयर किया है। इस डेटा के अनुसार इस कैलेंडर वर्ष में सितंबर तक फ्रेगरेंस सेगमेंट में साल-दर-साल 12 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इसमें रोल-ऑन डिओडोरेंट्स ने 26 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की। नीलसनआईक्यू के अनुसार, पर्सनल केयर सेगमेंट में 6.2 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई। वहीं एफएमसीजी इंडस्ट्री में 5.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई। रिपोर्ट के मुताबिक भारत में फ्रेगरेंस इंडस्ट्री 4,771 करोड़ रुपये की है।

नीलसनआईक्यू के भारत में कमर्शियल हेड रूजवेल्ट डिसूजा ने कहा कि फ्रेगरेंस प्रोडक्ट्स अब छोटी-छोटी जगह भी पहुंच रहे हैं यानी इनका डिस्ट्रिब्यूशन तेजी से हो रहा है। वहीं लोग अब पर्सनल ग्रूमिंग में तेजी से रुचि दिखा रहे हैं। इस कारण रोल-ऑन डिओडोरेंट्स की बिक्री में उछाल आया है।

विदेशी संपत्ति, आय का खुलासा न करने पर लगेगा 10 लाख रुपये का जुर्माना, आयकर विभाग ने किया आगाह

नई दिल्ली, एजेंसी। आयकर विभाग ने रविवार को करदाताओं को आगाह किया कि अगर उन्होंने विदेश में मौजूद संपत्ति या विदेश में अर्जित आय का खुलासा अपने आयकर रिटर्न्स में नहीं किया तो इसके लिए करदाताओं पर 10 लाख रुपये तक का जुर्माना लग सकता है।

आयकर विभाग ने किया आगाह

आयकर विभाग ने हाल ही में शुरू किए गए अनुपालन-सह-जागरूकता अभियान के तहत शनिवार को यह जानकारी दी। विभाग ने करदाताओं को चेताया कि वे 2024-25 के निर्धारण वर्ष में आयकर रिटर्न में ये जानकारी जरूर दें। विभाग ने कहा कि भारत के करदाताओं के लिए विदेशी बैंक खाते, नकद मूल्य बीमा अनुबंध या वार्षिकी अनुबंध, किसी इकाई या व्यवसाय में वित्तीय साझेदारी, अचल संपत्ति, कस्टोडियल खाता, इक्विटी और ऋण ब्याज, आदि कोई भी पूंजीगत संपत्ति की जानकारी देना जरूरी है। आयकर विभाग ने कहा कि करदाताओं को अपने आईटीआर में विदेशी संपत्ति या विदेशी स्रोत आय अनुसूची को अनिवार्य रूप से भरना होगा, भले ही उनकी आय कर योग्य सीमा से कम हो। एडवाइजरी में कहा गया है, आईटीआर में विदेशी संपत्ति/आय का खुलासा न करने पर काला धन (अघोषित विदेशी आय और संपत्ति) और कर अधिरोपण अधिनियम, 2015 के तहत 10 लाख रुपये का जुर्माना लगाया जा सकता है।

आयकर रिटर्न्स भर चुके लोगों को भेजे जाएंगे संदेश

कर विभाग के प्रशासनिक निकाय, केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड ने कहा था कि अभियान तहत उन करदाताओं को संदेश और ईमेल भेजा जाएगा, जिन्होंने पहले ही 2024-25 के लिए अपना आईटीआर दाखिल कर दिया है। यह संचार ऐसे व्यक्तियों को भेजा जाएगा, जिनकी द्विपक्षीय और बहुपक्षीय समझौतों के तहत प्राप्त जानकारी के माध्यम से पहचान की गई है कि उनके पास विदेश में संपत्ति या विदेशी आय हो सकती है। सीबीडीटी ने कहा कि इस अभियान का उद्देश्य उन लोगों को याद दिलाना जिन्होंने अपने जमा किए गए आईटीआर (एवाई 2024-25) में विदेशी संपत्तियों का विवरण नहीं दिया है।

आरबीआई की समीक्षाः टाटा संस ने आईपीओ से मांगी राहत, सितंबर से पहले शेयर बाजार में होना होगा सूचीबद्ध

नई दिल्ली, एजेंसी। टाटा संस ने आईपीओ लाने से आरबीआई से राहत मांगी है। इस आवेदन पर वह विचार कर रहा है। आरबीआई ने सूचना का अधिकार के तहत (आरटीआई) दिए गए जवाब में कहा कि टाटा संस ने स्वेच्छा से अपना पंजीकरण प्रमाणपत्र लौटाया है। अगर इस आवेदन को आरबीआई स्वीकार कर लेता है तो टाटा संस को निर्गम लाने से छूट मिल जाएगी। अगर टाटा संस को छूट मिलती है तो इससे करोड़ों निवेशकों को इसमें भाग लेने से वंचित होना पड़ सकता है।

आईपीओ नियमों से छूट पाने के लिए टाटा संस ने 20,000 करोड़ का कर्ज भी चुकाया है। आरबीआई ने 14 नवंबर को आरटीआई के जवाब में कहा, टाटा संस ने इस साल 28 मार्च को प्रमुख निवेश कंपनी (सीआईसी) पंजीकरण छोड़ने के लिए आवेदन दिया

है। दरअसल, आरबीआई ने 2022 में स्केल आधारित विनियमन (एसबीआर) के तहत 15 बड़ी कंपनियों को ऊपरी श्रेणी में रखा था। इन सभी को शेयर बाजार में सितंबर, 2025 से पहले सूचीबद्ध होना अनिवार्य था। इसमें से 11 कंपनियां सूचीबद्ध हो भी चुकी हैं।

विशेषज्ञों का कहना है कि आईपीओ लाने के लिए कम से कम 6-8 महीने की जरूरत होती है। इस आधार पर अब टाटा संस के पास समय भी कम है। उसे अब मंजूरी मिलती भी है तो तैयारी करने में ही 8 महीने लग जाएंगे। एसबीआर ढांचा प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) पर सख्त गवर्नेंस और पारदर्शिता मानदंड लागू करता है।

राहत मिली तो बाकी भी कर सकती हैं अपील

विश्लेषकों का कहना है कि अगर टाटा संस को लिस्टिंग से छूट मिलती है तो ऊपरी श्रेणी वाली अन्य कंपनियां भी राहत मांग सकती हैं। टाटा ट्रस्ट के उपाध्यक्ष वेणु श्रीनिवासन की भागीदारी ने स्थिति को और भी जटिल बना दिया है। श्रीनिवासन आरबीआई के केंद्रीय निदेशक मंडल में भी कार्यरत हैं। यह दोहरी भूमिका सीधे-सीधे हितों के टकराव का मामला है। मर्चेंट बैंकरों का मानना है कि टाटा संस अब तक का सबसे बड़ा इश्यू ला सकता है जो 55,000 करोड़ रुपये का हो सकता है। टाटा संस में दूसरे सबसे बड़े शेयरधारक शापुरजी पलोनजी है।

भारत के चावल निर्यात में अक्टूबर में लगभग 86 प्रतिशत की वृद्धि, रिकॉर्ड उत्पादन की उम्मीदों के बीच

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत का चावल निर्यात अक्टूबर में 1 अरब डॉलर के आंकड़े को पार कर गया, इसके पीछे सरकार द्वारा चावल के शिपमेंट को सुगम बनाने के लिए उठाए गए कई कदम थे। वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, अक्टूबर 2024 में चावल निर्यात 1,050.93 मिलियन डॉलर रहा, जो पिछले साल अक्टूबर में 565.65 मिलियन डॉलर के मुकाबले 85.79 प्रतिशत की बढ़ोतरी है। इसी वर्ष सितंबर में चावल निर्यात का मूल्य 694.35 मिलियन डॉलर था। चावल शिपमेंट में यह तेज़ वृद्धि सरकार द्वारा पिछले दो महीनों में चावल निर्यात को सुगम बनाने के लिए उठाए गए कदमों के कारण हुई है। 28 सितंबर को केंद्र सरकार ने नॉन-बासमती व्हाइट चावल के निर्यात पर लगाए गए प्रतिबंध को हटा लिया था। हालांकि, इस पर 490 डॉलर प्रति टन का न्यूनतम निर्यात मूल्य निर्धारित किया था, जिसे अंततः 23 अक्टूबर को हटा लिया गया।

27 सितंबर को सरकार ने नॉन-बासमती व्हाइट चावल पर 20 प्रतिशत निर्यात शुल्क को हटा लिया और तीन अन्य चावल श्रेणियों पर निर्यात शुल्क को आधा कर दिया। हस्क में चावल (पैडी या रफ), हस्केड (ब्राउन) चावल और पारबॉयल्ड चावल पर शुल्क 20 प्रतिशत से घटाकर 10 प्रतिशत कर दिया गया था। हालांकि, 22 अक्टूबर को इसे और घटाकर शून्य कर दिया गया। अक्टूबर में वृद्धि के साथ, चालू वित्त वर्ष 2024-25 के पहले सात महीनों (अप्रैल से अक्टूबर) में कुल चावल निर्यात 5.27 प्रतिशत बढ़कर 6,171.35 मिलियन डॉलर हो गया, जो पिछले वर्ष की समान अवधि में 5,862.23 मिलियन डॉलर था। सितंबर तक, इस वर्ष भारत का कुल चावल निर्यात (5,120.43 मिलियन) पिछले वित्तीय वर्ष की पहले छमाही (5,296.58 मिलियन) की तुलना में 3.33 प्रतिशत कम था।

अनिल अंबानी की बढ़ी मुसीबत, लोन अकाउंट्स पर उठे सवाल, सरकारी बैंक ने भेजा नोटिस

नई दिल्ली, एजेंसी। सार्वजनिक क्षेत्र के केनरा बैंक ने अनिल अंबानी की टेलीकॉम सेक्टर की कंपनी रिलायंस कम्युनिकेशंस और उसकी सहायक कंपनियों के लोन अकाउंट्स को फ्रॉड घोषित कर दिया है। बता दें कि दिसंबर 2020 में भारतीय स्टेट बैंक, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया और इंडियन ओवरसीज बैंक द्वारा कंपनी के अकाउंट को फ्रॉड घोषित करने के बाद यह ऐसा करने वाला चौथा बैंक है। केनरा बैंक ने कंपनी को दिए गए नोटिस में कहा- बैंक ने रिलायंस कम्युनिकेशंस के लिए 1,050 करोड़ रुपये की नॉन-फंड आधारित क्रेडिट सीमा के तहत क्रेडिट फैसलिटीज, टर्म लोन, गारंटी और लेटर ऑफ क्रेडिट को मंजूरी दी थी। लोन, क्रेडिट फैसलिटीज का लाभ उठाने और आनंद लेने के बाद आपकी कंपनी ने डिफॉल्ट किया है और स्वीकृत नियमों, शर्तों का उल्लंघन किया है। बता दें कि मार्च 2017 में लोन अकाउंट को गैर-निष्पादित परिसंपत्ति यानी एनपीए घोषित कर दिया गया था। डिफॉल्ट के बाद स्वीडन की एरिक्सन 2018 में टेलीकॉम कंपनी को नेशनल कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल, मुंबई (एनसीएलटी) में ले गई।

चैस:

मैग्नस कार्लसन और लैग्नो ने इंडिया ब्लिट्ज में बढ़त बनाई

भारतीय ग्रैंडमास्टर प्रज्ञानंद दूसरे स्थान पर

कोलकाता, एजेंसी। दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी मैग्नस कार्लसन और तीन बार की विश्व महिला ब्लिट्ज चैंपियन कैटरीना लैग्नो शनिवार को कोलकाता में चल रहे टाटा स्टील शतरंज इंडिया ब्लिट्ज 2024 के मध्य में शीर्ष स्थान, जबकि भारत के आर प्रज्ञानंद दूसरे स्थान पर रहे। कार्लसन ने संभावित नौ में से 6.5 अंक से पहले नौ दौर का समापन किया। नॉर्वे के इस दिग्गज खिलाड़ी ने शानदार शुरुआत की लेकिन आठवें दौर में अर्जुन एरिगेसी ने उन्हें शानदार अंदाज में महज 20 चाल में हरा दिया। दिन के अंतिम दौर में कार्लसन ने विदित गुजराती के खिलाफ ड्रॉ खेला। भारत के युवा खिलाड़ी प्रज्ञानंद छह अंक से दूसरे स्थान पर रहे। उन्होंने अपनी पहली तीन बाजियां गंवाने के बाद शानदार वापसी कर लगातार छह जीत दर्ज कीं। एरिगेसी और रूस के दानिल डुबोव 5.5 अंक लेकर संयुक्त रूप से तीसरे स्थान पर हैं। महिला वर्ग में लैग्नो ने सात अंक से शीर्ष स्थान हासिल किया। उन्होंने पांच जीत और चार ड्रॉ खेले। उन्हें एक भी बाजी में हार नहीं मिली। वैलेंटिना गुनिना उनसे एक अंक पीछे दूसरे स्थान पर हैं, जबकि रैपिड चैंपियन एलेक्जेंड्रा गोर्याचकिना पांच अंक से तीसरे स्थान पर हैं। गोर्याचकिना ने लगातार तीन जीत के साथ शानदार शुरुआत की, लेकिन बाकी छह मैच में केवल चार ड्रॉ ही हासिल कर पाईं।

गौतम गंभीर के सपोर्ट में उतरे सौरव गांगुली

ऑस्ट्रेलियाई टीम को सुनाई दो टूक

नईदिल्ली, एजेंसी। गौतम गंभीर के हेड कोच बनने के बाद भारतीय क्रिकेट टीम को दो बड़ी सीरीज में हार मिली है. पहले श्रीलंका के खिलाफ वनडे सीरीज में 0-2 और फिर न्यूजीलैंड के हाथों टेस्ट सीरीज में 0-3 से हार ने कई सवाल खड़े कर दिए हैं. अब कोच गौतम गंभीर के सामने बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी 2025 (2024) की चुनौती है. इसमें भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच पांच टेस्ट मैच खेले जाने हैं. अब एक तरफ गंभीर की आलोचना हो रही है, दूसरी ओर भारत के पूर्व कप्तान सौरव गांगुली उनके सपोर्ट में उतर आए हैं.

एक मीडिया इंटरव्यू में सौरव गांगुली ने कहा है कि गौतम गंभीर जैसे हैं, वैसे ही रहेंगे. एक वनडे और टेस्ट सीरीज हार जाने से इतनी जल्दी उनका आंकलन करना सही नहीं है. गांगुली ने कहा, मैं इतना कहूंगा कि गंभीर को उनके हाल पर छोड़ दिया जाए. मैंने देखा कि प्रेस कॉन्फ्रेंस में जो उन्होंने कहा, उसकी खूब आलोचना हुई. वो ऐसे ही हैं क्योंकि केकेआर आईपीएल

का खिताब जीता, गंभीर तब भी ऐसे ही थे. तब आप उनकी तारीफ करने में लगे थे. वो तीन टेस्ट मैच और श्रीलंका से एक वनडे सीरीज क्या हार गए, उन्हें आड़े हाथों लिया जाने लगा है.

गौतम गंभीर ने कुछ गलत नहीं कियाऑस्ट्रेलियाई दिग्गज रिकी पोंटिंग ने बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी से पूर्व चिंता जताई थी कि विराट कोहली की फॉर्म चिंता का विषय है. प्रेस कॉन्फ्रेंस में जब गौतम गंभीर से इस संबंध में सवाल पूछा गया तो उन्होंने कहा कि रिकी पोंटिंग को भारतीय क्रिकेट के बजाय ऑस्ट्रेलियाई टीम पर अधिक ध्यान देने की जरूरत है.

इस विवाद पर सौरव गांगुली ने अपने विचार रखते हुए बताया,गंभीर ऐसा क्यों ना करें? मैं जबसे क्रिकेट देख रहा हूं तभी से ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी अपने हिसाब से क्रिकेट पर विचार रखते आए हैं, फिर चाहे वो स्टीव वॉ हों, रिकी पोंटिंग या फिर मैथ्यू हेडन. गंभीर ने जो कहा, उसमें कुछ गलत नहीं है. वो लड़ते हैं और प्रतिस्पर्धा करते हैं, इसलिए हमें उन्हें मौका देना चाहिए. उन्हें आए 2-3 महीने हुए हैं और आप अभी से उनका आंकलन कर रहे हैं ।

रणजी ट्रॉफी:

पहली पारी में 89 रन पर सिमटने के बाद भी ड्रॉ कराने में सफल रहा यूपी

कर्नाटक को मिले तीन अंक

लखनऊ, एजेंसी। मेजबान उत्तर प्रदेश का रणजी ट्रॉफी के एलीट ग्रुप सी में शर्मनाक प्रदर्शन जारी रहा। टीम के बल्लेबाज दूसरी पारी में दमदार प्रदर्शन ने कर्नाटक के खिलाफ मुकाबला ड्रॉ करवाने में सफल रहे, लेकिन मेहमान टीम को पहली पारी में बढ़त के आधार पर तीन अंक हासिल करने से नहीं रोक सके। वहीं यूपी को एक अंक मिला। अटल बिहारी वाजपेयी इकाना स्टेडियम में मेजबान टीम ने दूसरी पारी में सभी विकेट खोकर 446 रन बनाए। जवाब में 261 रन की जीत के लक्ष्य का पीछा करने उतरी कर्नाटक की टीम पांच विकेट खोकर 178 रन ही बना सकी और मुकाबला ड्रॉ हो गया। इस मुकाबले के साथ उत्तर प्रदेश की टीम छह अंक के साथ ग्रुप सी में शामिल आठ टीमों में सातवें स्थान पर फिसल गई, जबकि कर्नाटक की टीम 12 अंक के साथ चौथे स्थान पर बनी हुई है।

इससे पहले उत्तर प्रदेश ने कल के पांच विकेट खोकर 325 रन से आगे खेलना शुरू किया। 402 रन पर टीम को छठा झटका लगा, जब सौरभ कुमार 54 रन की अर्धशतकीय पारी खेलकर श्रेयस गोपाल की गेंद पर पहली स्लिप पर स्मरण की द्वारा लपके गए। अपनी अर्धशतकीय पारी के दौरान उन्होंने 55 गेंदों का सामना करते हुए सात चौके जमाए। कुछ ही देर के बाद टिककर खेल रहे आदित्य शर्मा 41 रन के निजी योग पर गोपाल का चौथा शिकार बने। यूपी की पूरी टीम 134वें ओवर में 446 रन बनाकर आउट हो गई।

कर्नाटक की ओर से 122 रन देकर पांच बल्लेबाजों को पवेलियन की राह दिखाई, जबकि विद्याधर पाटिल और मोहसिन खान ने दो-दो विकेट झटके। जवाब में 261 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरे कर्नाटक के लिए निकिन जोस और कप्तान मयंक अग्रवाल ने ठोस शुरुआत करते हुए 77 रन जोड़े। मयंक अग्रवाल 37 रन बनाकर आकिब खान की गेंद पर सौरभ कुमार द्वारा लपके गए। 100 रन के योग पर निकिन जोस 48 रन बनाकर दुर्भाग्यपूर्ण ढंग से रन आउट हो गए।

125 के योग तक पहुंचते हुए कर्नाटक ने पांच बल्लेबाज खो दिए। इस दौरान स्मरण (15), कृष्णन श्रीजिथ (7) और श्रेयस गोपाल (1) सस्ते में चलते बने। इसके बाद मनीष पांडेय ने अभिनव के साथ संभलकर बल्लेबाजी की और कोई विकेट नहीं गिरने दिया। पांडेय 78 गेंदों पर चार चौकों की मदद से 36 और अभिनव मनोहर 73 गेंदों पर तीन चौके और दो छक्कों की मदद से 31 रन पर नाबाद रहे। यूपी की ओर से विप्रज निगम ने 65 रन देकर दो विकेट हासिल किए।

बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी से पहले भारत के लिए अच्छी खबर, रोहित शर्मा का रिप्लेसमेंट हुआ फिट

नईदिल्ली, एजेंसी। बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी 2024 की शुरुआत 22 नवंबर से होनी है, लेकिन उससे पूर्व तैयारियों दुरुस्त करने के लिए भारतीय टीम ने अभ्यास मैच खेला है. इंडिया बनाम इंडिया ए मैच में केएल राहुल को चोट आई थी, जिसके कारण उन्हें रिटायर्ड हर्ट होकर पवेलियन लौटना पड़ा था. अब भारतीय फैंस के लिए खुशखबरी यह है कि पर्थ टेस्ट शुरू होने से पांच दिन पहले राहुल ने दोबारा से नेट्स में अभ्यास शुरू कर दिया है. इस सिम्यूलेशन मैच के दूसरे दिन राहुल चोटिल होने की वजह से मैदान पर आए ही नहीं थे, लेकिन रेव स्पोर्ट्ज की एक रिपोर्ट अनुसार तीसरे दिन की शुरुआत में उन्हें नेट्स में पसीना बहाते देखा गया. चूंकि रोहित शर्मा हाल ही में दूसरी बार पिता बने हैं, इसलिए वो पहला टेस्ट मैच मिस कर सकते हैं. ऐसे में राहुल को रोहित के रिप्लेसमेंट के तौर पर देखा जा रहा है और वो पर्थ टेस्ट में यशस्वी जायसवाल के साथ पारी की शुरुआत करते दिख सकते हैं. एक तरफ राहुल के वापस आने की अच्छी खबर है, तो दूसरी ओर शुभमन गिल के बाएं अंगूठे में फ्रैक्चर ने टीम इंडिया की मुश्किलें बढ़ा दी हैं. इस चोट के कारण उन्हें पहला टेस्ट मिस करना पड़ सकता है.

श्रेयस अय्यर से केकेआर ने कप्तानी छीनी, लेकिन अब इस टीम की अगुआई करते आएंगे नजर 23 नवंबर से शुरू होगा टूर्नामेंट

नईदिल्ली, एजेंसी। श्रेयस अय्यर की कप्तानी में केकेआर ने साल 2024 में आईपीएल खिताब जीतने में सफलता हासिल की थी और ये इस टीम का इस लीग में तीसरा टाइटल था, लेकिन कोलकाता फ्रेंचाइजी ने श्रेयस अय्यर को आईपीएल 2025 के लिए रिटेन नहीं किया। श्रेयस अय्यर के लिए ये किसी बड़े झटके से कम नहीं था, लेकिन अब उन्हें मुंबई क्रिकेट एसोसिएशन (एमसीए) की सीनियर चयन समिति ने सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी के लिए मुंबई टी20 टीम का कप्तान नियुक्त किया है।

श्रेयस अय्यर करेंगे मुंबई की कप्तानी – एमसीए की सीनियर चयन समिति ने रविवार को सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी 2024-25 के लिए टीम का चयन करने के लिए बैठक की। 23 तारीख से शुरू होने वाले इस टूर्नामेंट के लिए इस चयन समिति ने श्रेयस अय्यर को मुंबई का कप्तान नियुक्त किया।

चयन समिति के मुताबिक इस टूर्नामेंट में कप्तानी करने के लिए श्रेयस अय्यर सबसे बेस्ट विकल्प हैं। श्रेयस को कप्तान बनाए जाने के बाद मौजूदा रणजी सीजन में मुंबई की कप्तानी कर रहे अजिंक्य रहाणे अब उनके अंडर में खेलते हुए नजर आएंगे। इंडियन एक्सप्रेस के मुताबिक एमसीए की चयन समिति ने रहाणे को सूचित कर दिया था कि वो शॉर्ट फॉर्मेट में मुंबई टीम के कप्तान के रूप में श्रेयस अय्यर को देख रहे हैं।

पृथ्वी शॉ को टीम में किया गया शामिल

इस टूर्नामेंट के लिए मुंबई की टीम में पृथ्वी शॉ को भी शामिल किया गया है जिन्हें रणजी ट्रॉफी के मैच से बाहर कर दिया गया था और अपनी फिटनेस में सुधार करने के लिए कहा गया था। एमसीए का मानना है कि पृथ्वी ने अपनी फिटनेस में सुधार किया है और वो सफेद गेंद के क्रिकेट में टीम के लिए बेहद उपयोगी साबित हो सकते हैं। एक सूत्र ने बताया कि श्रेयर अय्यर सैयद मुश्ताक अली के लिए मुंबई टी20 टीम की अगुआई करेंगे और टीम में पृथ्वी शॉ को भी शामिल किया गया है। रहाणे अब अय्यर की कप्तानी में खेलेंगे क्योंकि एमसीए को लगता है कि अय्यर इस प्रारूप के लिए कप्तान के रूप में सही विकल्प हैं। ऑलराउंडर शिवम दुबे, मुशीर खान और तुषार देशपांडे अभी तक अपनी इंजरी से पूरी तरह उबर नहीं पाए हैं और यही वजह है कि उन्हें इस टूर्नामेंट के लिए मुंबई की टीम में जगह नहीं दी गई।

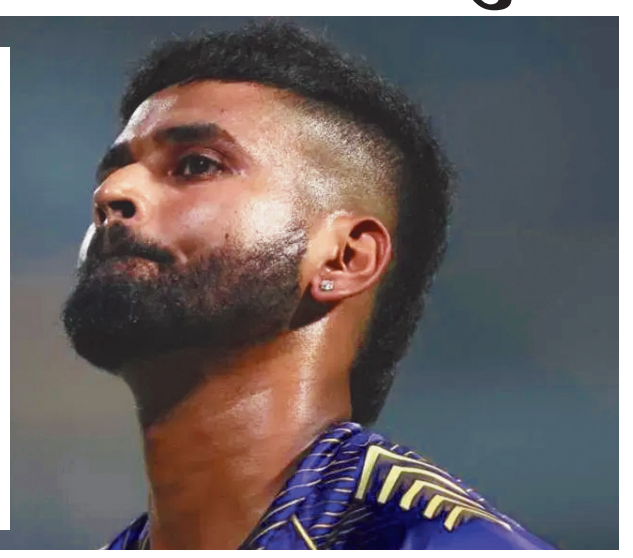

ऑस्ट्रेलिया में भारतीय बल्लेबाज का धमाका

31 गेंदों में धुआंधार पारी खेलकर टीम की झोली में डाला मैच

नईदिल्ली, एजेंसी। टीम इंडिया इस वक्त टेस्ट सीरीज खेलने के इरादे से ऑस्ट्रेलिया दौरे पर है. इसी दौरान वहां महिलाओं के बिग बैश के मुकाबले भी खेले जा रहे हैं, जिसमें भारत की भी कई खिलाड़ी खेल रही हैं. उन्हीं भारतीय खिलाड़ियों में एक जेमिमा रोड्रिग्ज भी हैं, जिन्होंने बल्ले से हल्ला बोलते हुए अपनी टीम की शानदार जीत की स्क्रिप्ट लिखी है. वो अपनी टीम के लिए सबसे ज्यादा रन बनाने वाली खिलाड़ी रही. जेमिमा रोड्रिग्ज ब्रिसबेन हीट्स से खेल रही हैं, जिसका मुकाबला मेलबर्न स्टार्स से था.

जेमिमा ने उम्मीदों को जीत के रंग में रंगा – मुकाबले में मेलबर्न स्टार्स ने पहले बैटिंग की और 20 ओवर में 8 विकेट पर 138 रन बनाए. 139 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी ब्रिसबेन हीट्स की टीम की शुरुआत अच्छी नहीं रही. सिर्फ 12 रन पर ही उसकी ओपनिंग जोड़ी टूट गई. लेकिन उसके बाद क्रीज पर उतरीं भारतीय बल्लेबाज जेमिमा रोड्रिग्ज ने टीम की उम्मीदों में जीत का रंग भरने वाली पारी खेली.

- **50 मिनट बैटिंग, 31 गेंदों में 45 रन** – जेमिमा रोड्रिग्ज ने अपनी टीम के लिए इस मैच में सबसे ज्यादा रन बनाए. उन्होंने 50 मिनट तक बैटिंग की, जिसमें 31 गेंदों का सामना कर 45 रन बनाए. उनकी पारी में 5 चौके और 2 छक्के शामिल रहे. भले ही जेमिमा अर्धशतक से 5 रन दूर रह गईं. लेकिन, उनकी ये पारी टीम की जीत के काम आ गई.
- **15 गेंद पहले 6 विकेट से मिली जीत** – इनिंग के दौरान जेमिमा ने एक अर्धशतकीय पार्टनरशिप भी की. उनका विकेट तब गिरा जब टीम का स्कोर 100 की दहलीज लांघ चुका था. मतलब वो जीत के करीब पहुंच चुकी थी. और, हुआ भी वैसा ही. जिस मंशा के साथ जेमिमा ने बैटिंग की थी वो सफल रही. जेमिमा की शानदार पारी की बदौलत ब्रिसबेन हीट्स ने मेलबर्न स्टार्स को 15 गेंद पहले ही 6 विकेट से हरा दिया. जेमिमा से पहले ब्रिसबेन हीट्स के लिए 18 साल की गेंदबाज ल्यूसी हैमिल्टन ने 5 विकेट लिए. उन्होंने ये कामयाबी 4 ओवर में सिर्फ 8 रन देकर हासिल की.

क्रिकेट से कुछ दिनों के लिए ब्रेक लेंगे सूर्यकुमार यादव

इस टूर्नामेंट के जरिए फिर मैदान पर करेंगे वापसी

नईदिल्ली, एजेंसी। भारतीय टी20 टीम के कप्तान सूर्यकुमार यादव ने साउथ अफ्रीका में जबरदस्त कामयाबी हासिल की और 4 मैचों की टी20 सीरीज को 3-1 से जीत लिया। भारत को इतनी बड़ी कामयाबी दिलाने के बाद सूर्यकुमार यादव अब सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी 2024-25 में मुंबई टीम के लिए खेलते हुए नजर आएँगे। हालांकि टीओआई के मुताबिक वो इस टूर्नामेंट के शुरुआती मैचों के लिए उपलब्ध नहीं रहेंगे।

23 नवंबर से शुरू होगा सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी

सूर्यकुमार यादव के मुंबई टीम में

मुंबई के लिए खेलेंगे सूर्यकुमार यादव

रिपोर्ट में दावा किया गया है कि सूर्या व्यक्तिगत कारणों से सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी 2024-25 के पहले चरण के लिए उपलब्ध नहीं होंगे। भारतीय टी20 कप्तान आखिरी कुछ मैचों में खेलने के लिए वापसी करेंगे और अगर मुंबई आगे के चरण के लिए क्वालिफाई करती है तो वह नॉकआउट में भी खेलेंगे। सूत्र के मुताबिक सूर्यकुमार यादव इस टूर्नामेंट के लिए दिसंबर की शुरुआत से उपलब्ध होंगे। वो मुंबई के लिए कुछ आखिरी लीग मैच में हिस्सा लेंगे और फिर टीम आगे बढ़ती है को नॉकआउट चरण के लिए भी उपलब्ध रहेंगे।

शामिल होने से इस टीम की बल्लेबाजी मजबूत होगी साथ ही साथ सूर्या अच्छे प्रदर्शन के जरिए आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए भी अपना दावा ठोक सकते हैं जो अगले साल फरवरी-मार्च में खेला जाएगा। सूर्यकुमार यादव विश्व क्रिकेट में सर्वश्रेष्ठ टी20 बल्लेबाजों में से एक हैं और उनके टीम में होने से युवा खिलाड़ियों को भी काफी कुछ सीखने को मिलेगा। सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी के इस सीजन की शुरुआत 23 नवंबर से होगी।

चैंपियंस ट्रॉफी को लेकर पाकिस्तान को मिला इंग्लैंड का साथ !

मोहसिन नकवी और ईसीबी चीफ की लंदन में हुई मुलाकात

पाकिस्तान को मिला इंग्लैंड का साथ

- पीसीबी चीफ मोहसिन नकवी ने चैंपियंस ट्रॉफी को पाकिस्तान में कराने के लिए एड़ी-चोटी की जोर लगा दी है. क्रिकेट की दुनिया में ईसीबी का बड़ा कद है. इसलिए बीसीसीआई से विवाद के बाद उसका साथ पाने के लिए मोहसिन नकवी लंदन पहुंच गए और उसके चेयरमैन रिचर्ड थॉम्पसन से मुलाकात कर उनका साथ मांगा. मीटिंग के बाद ईसीबी ने दबे शब्दों में ही सही लेकिन चैंपियंस ट्रॉफी के मुद्दे पर पाकिस्तान का साथ दिया है.
- थॉम्पसन ने इशारों-इशारों में बीसीसीआई के 'सुरक्षा की चिंता' वाली बात को काटने की कोशिश की. उन्होंने कहा कि हाल ही में इंग्लैंड की टीम ने पाकिस्तान का दौरा किया था, जो बेहद ही शानदार रहा था. थॉम्पसन ने चैंपियंस ट्रॉफी के लिए पाकिस्तान को अपनी शुभकामनाएं भी दे दी. जवाब में, नकवी ने थॉम्पसन को आश्वासन दिया कि पाकिस्तान ने सारी तैयारी कर ली है और टूर्नामेंट की सफल मेजबानी के लिए पूरी तरह तैयार है ।

नईदिल्ली, एजेंसी। चैंपियंस ट्रॉफी का अगला एडिशन पाकिस्तान की मेजबानी में खेला जाना है. लेकिन बीसीसीआई के मना करने के बाद से ही इस टूर्नामेंट को लेकर बवाल मचा हुआ है. इस बीच ये खबरें भी आईं कि विवाद के बाद आईसीसी इसे दूसरे देश में शिफ्ट करने के बारे में सोच रही है. इसके बाद से ही पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड डरा हुआ है. पीसीबी पहले ही इसकी तैयारी में काफी पैसे लगा चुका है और अब उसे एक बड़ा नुकसान होता दिख रहा है. इस परिस्थिति में उसने इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड का रुख किया है. पीसीबी चीफ मोहसिन नकवी ने इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड के चेयरमैन रिचर्ड थॉम्पसन से लंदन में मुलाकात की है ।

संक्षिप्त समाचार

कपिल शर्मा - कॉमेडियन या मेनिफेस्टेशन के किंग: गीता बसरा

मुंबई, एजेंसी। पिछले एपिसोड में हमारे इंडस्ट्रियल आइकन्स के साथ धमाकेदार मस्ती करने के बाद, नेटफ्लिक्स का द ग्रेट इंडियन कपिल शो इस बार शो के फैंस के लिए कुछ बेहद जाने-पहचाने चेहरों के साथ लौट रहा है। कपिल के कप्स कैफे में इस बार नवजोत सिंह सिद्धू और उनकी पत्नी नवजोत कौर, साथ ही हरभजन सिंह और उनकी पत्नी गीता बसरा मेहमान बनकर आएंगे। यह एपिसोड पुराने दिनों की यादों से भरा होगा, जिसमें हमारे खास मेहमान अपनी दिलचस्प कहानियां शेयर करेंगे। ऐसी ही एक कहानी गीता बसरा ने शेयर की, जिसमें उन्होंने बताया कि कैसे कपिल ने अनजाने में, सिर्फ अपनी शुभकामनाओं के जरिए, हरभजन और उनके चार सदस्यीय परिवार को 'मेनिफेस्ट' कर दिया। गीता बसरा ने कपिल से कहा, जब पहली बार हम आपके शो पर आए थे, हमारी नई-नई शादी हुई थी।

भव्यतम 9 दिवसीय भैरव अष्टमी महोत्सव आयोजन: आध्यात्मिक एकता और समृद्धि का अनूठा पर्व

नीमच। मध्य प्रदेश के नीमच में 9 दिवसीय भैरव अष्टमी महोत्सव का भव्यतम आयोजन किया गया। अखिल भारतीय बटुक भैरव भक्त मंडल एवं पार्श्व पद्मावती शक्ति पीठ धाम, तमिलनाडु के पीठाधीश्वर, डॉ. वसंत विजय जी महाराज के सानिध्य में 23 नवंबर तक चलने वाला यह आयोजन भारत की आध्यात्मिक धरोहर, एकता और समृद्धि का भव्य उत्सव है। इस महोत्सव में देश पर महामारी के संकट, आतंकवाद की चुनौतियों से मुक्ति व आर्थिक वृद्धि की कामना हेतु भैरव देव को 2024 प्रकार की मिठाइयां अर्पण की जा रही है। 8 कुंडीय महायज्ञ में 46 विद्वान पंडितों द्वारा भैरव देव की आराधना करते हैं, जिसमें एक कुंड में 11 पंडित और 7 कुंडों में 5-5 पंडित 9 दिन तक निरंतर यज्ञ करते हैं। इस महाअनुष्ठान का एक प्रमुख आकर्षण 84,000 वर्ग फीट में विशाल रंगोली का निर्माण, जिसमें भारत की सांस्कृतिक विरासत और आध्यात्मिक गुरुओं और राष्ट्र नायकों के चित्र उकेरे जा रहे हैं। इस कार्यक्रम में परम पूज्य डॉ वसंत विजय जी महाराज के मुखरबिंद से कथा, साधना, महायज्ञ एवं महोत्सव के दौरान सभी भक्तों के लिए निशुल्क भोजन और सेवाएँ उपलब्ध कराई गई।

विद्युत जामवाल ने डिज़्नी+ हॉटस्टार पर स्ट्रीम हो रही डेडपूल एंड वूल्वरिन को बहुत रोमांचक बताया

मुंबई, एजेंसी। एक्शन आइकन विद्युत जामवाल डिज़्नी+ हॉटस्टार पर डेडपूल एंड वूल्वरिन की रिलीज को लेकर बहुत उत्साहित हैं। अपने योद्धा जैसे अनुशासन के लिए मशहूर विद्युत को रयान रेनॉल्ड्स और ह्यूग जैकमैन द्वारा स्क्रीन पर दिखाया गया जबरदस्त एक्शन बहुत पसंद है। हाल ही में डिज़्नी+ हॉटस्टार पर विद्युत की फिल्म क्रैक रिलीज हुई थी, लेकिन इस बार वो एक फैन के रूप में लौटे हैं। वो मार्वल स्टूडियोज की लेटेस्ट ब्लॉकबस्टर के रोमांच के लिए उत्साहित हैं, जिसमें बेहतरीन ह्यूमर और प्यारा ब्रोमांस देखने को मिलेगा। उनका दिलचस्प वीडियो उनके जामवालियंस को पुकार रहा है। डिज़्नी+ हॉटस्टार के सहयोग से निर्मित इस वीडियो में विद्युत अपने अंदर के एक्शन फैन के साथ फिल्म के हाई-ऑक्टेन सीक्वेंस के बारे में बता रहे हैं।

विश्व सीओपीडी दिवस 2024: बीमारी का पता शुरू में ही लगाने और उसके प्रबंधन के लिए फेफड़ों के स्वास्थ्य को समझना

भोपाल। विश्व सीओपीडी (क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिज़ीज़) दिवस 2024 के भाग के रूप में, स्वास्थ्य विशेषज्ञ इस बात पर जोर दे रहे हैं कि फेफड़े के स्वास्थ्य और कार्य को जानना महत्वपूर्ण है। यह इस साल की थीम, अपने लंग फंक्शन को जानें के क्रम में है। यह महत्वपूर्ण है फेफड़े के कार्य के परीक्षण के महत्व के बारे में बताते हुए डॉ. निशांत श्रीवास्तव, एम.डी. पल्मोनरी मेडिसिन, भोपाल ने कहा, सीओपीडी जैसी क्रोनिक श्वसन बीमारी के प्रभावी प्रबंधन और आगे की जटिलताओं को रोकने के लिए बीमारी का शुरू में ही पता चल जाना और उपचार शुरू होना महत्वपूर्ण हैं। सीओपीडी के प्रबंधन में जागरूकता की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालते हुए।

तमिल अभिनेत्री कस्तुरी शंकर हैदराबाद से गिरफ्तार, तेलुगू समुदाय पर की थी आपत्तिजनक टिप्पणी

चेन्नई, एजेंसी।
ग्रेटर चेन्नई पुलिस द्वारा तैनात एक विशेष टीम ने तमिल अभिनेत्री कस्तूरी शंकर को शनिवार रात हैदराबाद के नरसिंगी स्थित एक फ्लैट से गिरफ्तार कर लिया। चेन्नई के एग्मोर पुलिस की एक विशेष टीम ने अभिनेता को गिरफ्तार किया। साइबराबाद पुलिस आयुक्तालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने आईएएनएस को बताया कि एग्मोर पुलिस स्टेशन की एक टीम 16 नवंबर को हैदराबाद पहुंची और नरसिंगी स्थित उनके फ्लैट से गिरफ्तार किया। अधिकारी ने कहा कि कस्तूरी पर भारतीय न्याय संहिता अधिनियम 2023 की धारा 191 और 192 के तहत मामला दर्ज किया गया है। पुलिस टीम ने अभिनेत्री को गिरफ्तार कर लिया और ट्रांजिट पर चेन्नई ले जाएगी।

तमिल स्टार पर 3 नवंबर को चेन्नई में एक सभा के दौरान तेलुगू समुदाय के बारे में की गई विवादास्पद टिप्पणी के लिए जांच चल रही थी। कस्तूरी के खिलाफ अभद्र भाषा और तेलुगू समुदाय को निशाना बनाने के आरोप हैं। हालांकि उन्होंने इसका खंडन किया और दावा किया कि उनके बयानों को गलत ढंग से पेश किया गया। कस्तूरी द्वारा दायर अग्रिम जमानत को (14 नवंबर) मद्रास उच्च न्यायालय ने

खारिज कर दिया था। अभिनेत्री की जमानत याचिका खारिज करने वाले न्यायमूर्ति आनंद वेंकटेश ने कहा था कि उनकी टिप्पणियां अनुचित थीं। यह मामला कस्तूरी द्वारा 3 नवंबर को चेन्नई में एक ब्राह्मण सभा में की गई टिप्पणियों से उपजा है।

उन्होंने कथित तौर तमिलनाडु में रह रहे तेलुगू भाषी लोगों को वेश्याओं का वंशज बताया था। कस्तूरी के मुताबिक ये 300 साल पहले राजाओं की सेवा करने आए थे और अब खुद को तमिल मूल का बताते हैं। कस्तूरी की टिप्पणियों की व्यापक आलोचना हुई, जिसके कारण नायडू महाजन संगम राज्य कार्यकारी समिति के एक सदस्य ने उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई। प्रतिक्रिया के जवाब में, कस्तूरी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक माफी जारी की, जिसमें दावा किया गया कि तमिलनाडु के गोएबल्स और हिंदू विरोधी डीएमके नेटवर्क द्वारा झूठी खबर फैलाई जा रही है। उन्होंने तेलुगू समुदाय के प्रति अपने प्यार और वफादारी का भी इजहार किया, उन्होंने कहा, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के लोग कभी भी उनके झूठ में नहीं फंसेंगे।

न्यायमूर्ति वेंकटेश ने कस्तूरी की जमानत याचिका खारिज करते हुए कहा था कि उन्हें तेलुगू समुदाय की महिलाओं के खिलाफ बोलने से बचना चाहिए था। अदालत ने अभिनेत्री की टिप्पणियों की आलोचना की और उनकी माफी को अपर्याप्त पाया, क्योंकि इसमें महिलाओं के बारे में टिप्पणियों को सीधे संबोधित नहीं किया गया था। कस्तूरी ने अदालत में तर्क दिया कि एफआईआर राजनीति से प्रेरित थी, उन्होंने दावा किया कि डीएमके सरकार का उनके प्रति असहिष्णु और प्रतिशोधी रवैया था। उन्होंने कहा कि उनकी टिप्पणियों ने तेलुगू समुदाय को भड़काने का काम नहीं किया है। 2024 के लोकसभा चुनावों में कस्तूरी ने भाजपा के लिए प्रचार किया था। लेकिन उनके इस बयान से तमिलनाडु इकाई ने किनारा कर लिया है।

हालांकि उन्होंने एक स्पष्टीकरण जारी किया, जिसमें दावा किया गया कि उनकी टिप्पणियों की गलत व्याख्या की गई। कस्तूरी के अनुसार, उनकी टिप्पणी का उद्देश्य डीएमके के पाखंड और दोहरे मानदंडों को उजागर करना था, न कि तेलुगू समुदाय का अपमान करना। कस्तूरी ने कहा कि उनकी टिप्पणी में उन श्रमिकों के एक विशिष्ट समूह का उल्लेख था जो सदियों पहले तेलुगू शासकों के साथ तमिलनाडु आए थे और बाद में तमिल पहचान ग्रहण कर ली थी। उन्होंने दावा किया कि उनके बयानों को तोड़-मरोड़ कर तेलुगू समुदाय पर व्यापक हमले का सुझाव दिया गया, जिसका उन्होंने खंडन किया। कस्तूरी ने स्पष्ट किया कि उन्होंने पत्नी के वंशजों का नहीं, बल्कि पत्नी के कर्मचारियों का संदर्भ दिया था, और दिवंगत डीएमके नेता एम. करुणानिधि की इस स्वीकारोक्ति का हवाला दिया कि समूह में कारीगर और संगीतकार शामिल थे।

नवनीत राणा की चुनावी जनसभा में बवाल, फेंकीं गईं कुर्सियां और जमकर नारेबाजी

दरियापुर, एजेंसी।
भाजपा की पूर्व सांसद रणनीत राणा की चुनावी सभा में शनिवार को भारी हंगामा हो गया। इस दौरान भीड़ काफी उग्र नजर आई और राणा की ओर कुर्सियां फेंकने लगी। गनीमत रही कि इस हमले में वह बाल-बाल बच गईं। नवनीत राणा महाराष्ट्र के अमरावती से पूर्व सांसद हैं। जिले के दरियापुर विधानसभा क्षेत्र में वह प्रचार के लिए पहुंची थीं। युवा स्वाभिमान पार्टी के उम्मीदवार रमेश बुंदीले के समर्थन में सभा आयोजित की गई थी। इस दौरान कुछ लोग उग्र हो गए और महिला सांसद की ओर कुर्सियां फेंकने लगे। साथ ही, जमकर नारेबाजी की गई।

रिपोर्ट के मुताबिक, शनिवार देर शाम आयोजित चुनावी बैठक चल रही थी। इस दौरान किसी बात पर बहस छिड़ गई और फिर हंगामा होने लगा। मामला इस हद तक बिगड़ गया कि कार्यकर्ता एक-दूसरे पर कुर्सियां फेंकने लगे। इस घटनाक्रम का वीडियो सामने आया जो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। नवनीत राणा ने पूरी घटना को लेकर पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है। वह अपने समर्थकों के साथ खल्लार पुलिस स्टेशन पहुंची थीं। पुलिस का कहना है

कि शिकायत के आधार पर केस दर्ज कर लिया गया है और आगे की कार्रवाई की जा रही है। वायरल वीडियो के आधार पर आरोपियों की पहचान की जाएगी।

गौरतलब है कि पूर्व सांसद नवनीत राणा को बीते दिनों धमकी भरी चिट्ठी मिली थी। इसमें 10 करोड़ रुपये की रंगदारी मांगी गई। अधिकारी ने बताया कि मामले में पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। उन्होंने बताया कि अमरावती की पूर्व सांसद को आमिर नामक व्यक्ति ने स्पीड पोस्ट के जरिए पत्र भेजा। राणा के निजी सचिव विनोद गुहे ने अमरावती के राजापेठ पुलिस थाने में औपचारिक शिकायत दर्ज कराई है। इसमें आरोप लगाया गया है कि यह पत्र 11 अक्टूबर को राणा के आवास पर एक कर्मचारी को मिला था। शिकायतकर्ता के मुताबिक पत्र भेजने वाले ने कहा कि उसने राणा की 'सुपारी' ली है और उनका यौन उत्पीड़न करने की धमकी दी। पुलिस अधिकारी ने बताया कि पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज कर ली है और मामले की जांच कर रही है।

छात्रों ने टीचर की कुर्सी के नीचे रख दिया बम, रिमोट से किया धमाका; यूट्यूब से सीखा था तरीका

हिसार, एजेंसी।
हरियाणा के एक स्कूल में 12वीं कक्षा के छात्रों के एक समूह ने यूट्यूब पर बम बनाने के तरीका सीखकर बम बना दिया। इसके बाद उन्होंने शरारत करने के लिए उस बम को स्कूल की विज्ञान विषय की टीचर की कुर्सी के नीचे फिट कर दिया। उन्होंने रिमोट की मदद से बम को ब्लास्ट किया। सौभाग्य से, टीचर बाल-बाल बच गईं और उन्हें कोई चोट नहीं आई। हालांकि, इस घटना के बाद उन छात्रों को एक सप्ताह के लिए स्कूल से निलंबित कर दिया गया है।

कुछ छात्रों ने महिला टीचर से डांट खाने के बाद बदला लेने का सोचा। एक छात्र ने उनकी कुर्सी के नीचे बम जैसा पटाखा रखा, जबकि दूसरे छात्र ने रिमोट कंट्रोल के माध्यम से उसे सक्रिय कर दिया। इसके बाद यह फटा। छात्रों ने बम बनाने का तरीका यूट्यूब से सीखा था और इसे रिमोट कंट्रोल से ऑपरेट किया था।

शिक्षा विभाग की कार्रवाई: हिसार जिले के शिक्षा विभाग ने इस खतरनाक शरारत के लिए कड़ी कार्रवाई की है। सभी 13 छात्रों को एक सप्ताह के लिए निलंबित कर दिया गया है। इसके बाद शिक्षा विभाग के अधिकारी स्कूल पहुंचे और घटना की गंभीरता से जांच शुरू की। शिक्षा विभाग के अधिकारियों के अनुसार, इस घटना के बाद यह भी चर्चा हुई थी कि इन छात्रों को स्कूल से निकाल दिया जाए, लेकिन उनके माता-पिता ने माफी मांगते हुए यह लिखित बयान दिया कि वे भविष्य में इस तरह काम नहीं करेंगे।

गांव में पंचायती बैठक: इस घटना के बाद संबंधित गांव में पंचायत की बैठक भी बुलाई गई। बच्चों की इस शरारत के बारे में चर्चा की गई। पंचायत के दौरान यह जानकारी सामने आई कि कक्षा के 15 छात्रों में से 13 छात्र इसमें शामिल थे। वे इसके बारे में जानते थे। सभी छात्रों को एक सप्ताह के लिए निलंबित कर दिया गया है। यह विचार किया जा रहा है कि इस पर कोई और कार्रवाई की जाए या नहीं।जिला शिक्षा अधिकारी नरेश मेहता ने बताया कि शिक्षिका ने उन छात्रों को माफ कर दिया है। उन्होंने कहा, अगर ये बच्चे एक मॉडल बनाकर उसे प्रस्तुत करते तो हम उनका सम्मान करते, लेकिन अब यह मामला चेतावनी देने के साथ सुलझा लिया गया है। इन बच्चों ने यह सब यूट्यूब से सीखा था। इस घटना ने स्कूल प्रशासन और शिक्षा विभाग के लिए एक बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है। ऑनलाइन सामग्री का बच्चों पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ सकता है और किसे किस सीमा तक नियंत्रित किया जाना चाहिए।

ट्रंप के आते ही बदले चीन के सुर ! जिनपिंग ने बाइडेन से की आखिरी मुलाकात, चेहरे पर साफ दिखी टेंशन

बीजिंग, एजेंसी। अमेरिका में सत्ता परिवर्तन के साथ ही चीन के सुर भी बदलने लगे हैं। बाइडेन प्रशासन में हेकड़ी दिखा रहे चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग डोनाल्ड ट्रंप के राष्ट्रपति बनते ही नरमी पर उतर आए हैं। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन से शनिवार को आखिरी मुलाकात की और कहा कि ''वह अमेरिका के नए प्रशासन के साथ काम करने के लिए तैयार हैं। इस दौरान उनके चेहरे पर टेंशन साफ दिखाई दी। एशिया-प्रशांत आर्थिक सहयोग वार्षिक शिखर सम्मेलन से इतर दोनों देशों के राष्ट्रपतियों ने मुलाकात की। चिनफिंग ने बैठक के दौरान कहा, ''चीन और अमेरिका के संबंध न केवल दोनों देशों के लिए महत्वपूर्ण हैं, बल्कि यह मानवता और भविष्य के लिए भी अहम हैं। उन्होंने कहा, ''सोच-समझ कर चयन करें। दो प्रमुख देशों के बीच बेहतर संबंध बनाने के लिए सही रास्ता तलाशें। जिनपिंग ने अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति ट्रंप का नाम लिए बिना चुनाव प्रचार के दौरान आयात के संबंध में दिए गए उनके बयान पर चिंता जाहिर की और कहा कि इससे दोनों देशों के संबंधों पर असर पड़ सकता है। चीनी राष्ट्रपति ने कहा, '' चीन, अमेरिका के नए प्रशासन के साथ सहयोग बढ़ाने और मतभेदों को दूर कर काम करने के लिए तैयार है जिससे दोनों देशों के लोगों को इसका लाभ मिल सके। जो बाइडेन ने भी अमेरिका-चीन संबंधों पर विस्तार से बातचीत की। बाइडन ने कहा, ''हम हमेशा एक-दूसरे से सहमत नहीं होते, लेकिन हमारी बातचीत हमेशा स्पष्ट रही है। बाइडेन ने कहा, ''हम दोनों के बीच हुई यह बैठक उन सभी गलत अनुमानों पर रोक लगाती है और यह सुनिश्चित करती है कि दोनों देशों के बीच प्रतिस्पर्धा संघर्ष में नहीं बदलेगी।

कनाडा: 55, 000 डाक कर्मचारी हड़ताल पर, पोस्टल सेवाएं प्रभावित

ओटावा , एजेंसी। कनाडा पोस्ट ने कहा कि राष्ट्रीय हड़ताल के दौरान उसका कामकाज बंद रहेगा। इससे लाखों कनाडाई नागरिक और देशभर के बिजनेस प्रभावित होंगे। कैनेडियन यूनियन ऑफ पोस्टल वर्कर्स (सीयूपीडब्ल्यू) के प्रतिनिधित्व वाले लगभग 55,000 डाक कर्मचारी शुक्रवार को मध्य रात्रि के बाद देशव्यापी हड़ताल पर चले गए। कनाडा पोस्ट ने शुक्रवार को एक बयान में कहा कि राष्ट्रीय हड़ताल के दौरान मेल और पार्सल वितरित नहीं किए जाएंगे और कुछ डाकघर बंद रहेंगे। बयान में कहा गया कि डाक नेटवर्क में पहले से मौजूद वस्तुओं के लिए सर्विस गारंटी प्रभावित होगी और राष्ट्रीय व्यवधान समाप्त होने तक कोई भी नई वस्तु स्वीकार नहीं की जाएगी।

समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, कनाडा पोस्ट ने अपने एक बयान में कहा कि परिचालन फिर से शुरू होने पर

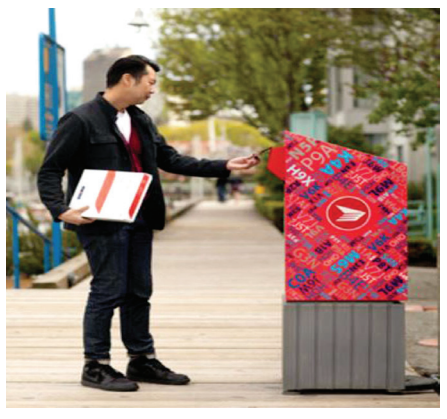

वस्तुओं को जल्दी से जल्दी लोगों तक पहुंचाया जाएगा। डाक नेटवर्क में सभी मेल और पार्सल को सुरक्षित किया जाएगा और परिचालन फिर से शुरू होने पर जल्दी ही लोगों तक पहुंचा दिया जाएगा।

बता दें कि देश भर में अपनी सुविधाएं बंद करने से कनाडा पोस्ट का पूरा राष्ट्रीय नेटवर्क प्रभावित होगा। कंपनी ने कहा कि प्रोसेसिंग और डिलीवरी को पूरी तरह से सामान्य होने में कुछ समय लग सकता है। इसे कैनेडियन यूनियन ऑफ पोस्टल वर्कर्स (सीयूपीडब्ल्यू) ने कहा कि एक वर्ष तक बातचीत के बाद भी कोई प्रगति नहीं होने पर डाक कर्मचारियों ने हड़ताल करने का कठिन निर्णय लिया। सीयूपीडब्ल्यू ने कहा कि कनाडा पोस्ट के पास इस हड़ताल को रोकने का अवसर था, लेकिन उसने डाक कर्मचारियों द्वारा रोज सामना किए जाने वाले मुद्दों के वास्तविक समाधान पर बातचीत करने से इनकार कर दिया।

सीयूपीडब्ल्यू ने कहा, हड़ताल अंतिम उपाय है। सीयूपीडब्ल्यू की उचित वेतन, सुरक्षित कार्य स्थितियां, सम्मान के साथ सेवानिवृत्त होने का अधिकार, तथा सार्वजनिक डाकघर में सेवाओं का विस्तार जैसी मांगो को लेकर हड़ताल कर रही है। सीयूपीडब्ल्यू ने कहा कि बातचीत के जरिए सामूहिक समझौते किए जा सकते हैं।

ट्रंप की नई टीम में क्रिस राइट को चुना गया ऊर्जा मंत्री

वाशिंगटन एजेंसी। अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 'लिबर्टी एनर्जी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी क्रिस राइट को ऊर्जा मंत्री नामित किया है। डेनवर स्थित 'लिबर्टी एनर्जी ऊर्जा क्षेत्र की एक बड़ी कंपनी है।

राइट जलवायु परिवर्तन से निपटने के प्रयासों पर अपनी बातों को हमेशा से मुखरता से रखते आए हैं और वह जीवाश्म ईंधन को बढ़ावा दे सकता है, जिसमें बाइडन प्रशासन की ओर से प्राकृतिक गैस निर्यात की मंजूरी पर एक साल की रोक को समाप्त करने के लिए त्वरित कार्रवाई भी शामिल है। राइट को ऊर्जा मंत्रालय का प्रमुख बनाने के निर्णय का तेल एवं गैस टाइकून हेरोल्ड हैम ने भी समर्थन किया है। रिपब्लिकन पार्टी के सांसद

जॉन बैरासो ने क्रिस के अनुमोदन को उचित करार दिया है। बैरासो को ऊर्जा और प्राकृतिक संसाधन समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया जा सकता है।

मैं तुमसे नहीं डरती... ब्राजील की फर्स्ट लेडी ने मस्क को कहे अपशब्द; टेस्ला के मालिक ने भी दिया जवाब

टोरंटो एजेंसी।
ब्राजील के राष्ट्रपति लूला डी सिल्वा की पत्नी जान्जा लूला डी सिल्वा ने टेस्ला के मालिक एलॉन मस्क पर विवादित टिप्पणी की है। ब्राजील की फर्स्ट लेडी ने शनिवार को जी20 के एक कार्यक्रम में एलॉन मस्क के खिलाफ अपशब्द कह दिए।

जान्जा सोशल मीडिया को नियंत्रित करने की जरूरत पर बात कर रही थी, ताकि फेक न्यूज ने फैले। इसी दौरान उन्होने एलन मस्क का जिक्र करते हुए उन्हें अपशब्द कहा।

जान्जा लूला डी सिल्वा ने मस्क को लेकर कहे अपशब्द

जब वो कार्यक्रम को संबोधित कर रहीं

थीं तब एक जहाज की आवाज सुनाई दी। उन्होंने मजाक करते हुए कहा मुझे लगता

है कि यह एलॉन मस्क है। इसके बाद उन्होंने हंसते हुए कहा, मैं तुमसे नहीं डरती। फ.... यू, एलॉन मस्क। इस वीडियो पर मस्क ने प्रतिक्रिया भी दी। उन्होंने वीडियो पर एक हंसी वाली इमोजी पोस्ट की। ब्राजील में बैन हुआ था एक्स प्लेटफॉर्म बता दें कि ब्राजील ने एक्स प्लेटफॉर्म को एक महीने के लिए बैन कर दिया था। ब्राजील सरकार का कहना है कि एक्स प्लेटफॉर्म के जरिए फेक न्यूज फैलाया जा रहा है। यह देश के लोकतंत्र के लिए खतरा है।

ब्राजील की प्रथम महिला जानजा का सोशल मीडिया अकाउंट बीते साल हैक हो गया था, जिसके लिए उन्होंने सोशल मीडिया कंपनी एक्स के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की धमकी भी दी थी।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129